A Daily News Magazine
भोपाल
सोमवार, 28 अप्रैल, 2025
भोपाल एवं इंदौर से एक साथ प्रकाशित
वर्ष 22, अंक 228, नगर संस्करण, पृष्ठ 8, मूल्य रू. 2

सुबह सवेरे

पहली बात

आतंकवाद के खिलाफ सियासी समरसता के सुर शुभ-संकेत

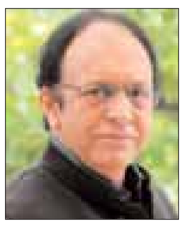

उमेश त्रिवेदी
प्रधान संपादक

बारी भारत की है कि अब वह पहलगाम के आतंकी-हमले का जबाव कब, कैसे और किस लहजे में देने वाला है? हमले के बाद सुगठित लोकतांत्रिक भारत को अराजक भारत में बदलने के पाक-मंसूबे ध्वस्त हो चुके हैं। मंसूबा यह था कि पहलगाम में धर्म के नाम पर बेगुनाह हिंदू पर्यटकों की हत्याओं को सिला देकर भारत को फसादों की गहरी खाइयों मे ढकेल दिया जाए। हिंदू-मुस्लिम एकता के साथ देश में कहीं भी सांप्रदायिकता की आग ना लगने देना ही पाकिस्तान की साजिश का सबसे माकूल जवाब है।

इससे भी आगे पहली मर्तबा किसी आतंकवादी घटना में निर्दोष हत्याओं के विरोध में जम्मू-कश्मीर की अवाम एक साथ सामने आई है...भारत की तकलीफों के साथ कश्मीरी अवाम की आवाज पहली बार आकाश में गूंजी है...यह बमुश्किल हुआ है...इसे हाथ से नहीं जाने देना चाहिए...इसलिए भारत-सरकार और सभी सियासी दलों को फूंक-फूंक कर कदम आगे बढ़ाना होंगे। भारत की एकता के फेब्रिक को छिन्न-भिन्न करने की साजिशों का सिलसिला अभी आखिरी मुकाम तक नहीं पहुँचा है। कश्मीर महज सरहदी, सांप्रदायिक या सियासी विवाद नहीं है। मसला भारत की अस्मिता का है। यह मुद्दा भारत की लोकतांत्रिक महाशक्ति की सहनशीलता की परीक्षा है, जिसे हर स्तर पर तरह-तरह से सुलगाने की कोशिशें निरन्तर जारी हैं। आतंकवाद की क्रोनोलॉजी का ताजा अध्याय पाकिस्तान के सेना प्रमुख अनीस मुनीर की वो कोशिशें हैं, जो भारत के खिलाफ जहर उगल रही हैं। इस संदर्भ में जनरल मुनीर की दो बातें गौरतलब हैं। पहला, संसद में पारित वह वक्फ विधेयक है, जिसे उन्होंने मुसलमानों की आध्यात्मिक जड़ें खोदने वाला बताया हैं। दूसरा, उनका 16 अप्रैल का वह भाषण है, जो उन्होंने ओवरसीज पाकिस्तानियों के बीच दिया था। भाषण में जनरल मुनीर ने दो राष्ट्रों की दशकों पुरानी उस बहस को जिंदा करने की कोशिश की है, जो भारत-पाक बंटवारे की बुनियाद में हैं।

इस्लामाबाद में ओवरसीज पाकिस्तानियों को संबोधित करते हुए जनरल मुनीर ने कहा कि- हम हिंदुओं से हर तरह से अलग हैं, हमारा धर्म, रीति-रिवाज, परम्पराएं, विचार और महत्वाकांक्षाएं, सब अलग हैं। भाषण का सबब इमरान समर्थक ओवरसीज पाकिस्तानियों को एकजुट करने की कोशिश थी, जो जनरल मुनीर के विरोधी हैं। वो लंबे समय से सेना के राजनीतिक हस्तक्षेप के खिलाफ मुखर हैं। वो अपनी भारत विरोधी भावनाओं के सहारे सेना के प्रति असंतोष का इलाज भी करना चाहते थे। भाषण में जनरल मुनीर ने जम्मू-कश्मीर को पाकिस्तान की जुगलर-वेन याने गले की नस करार दिया था, जिसके बिन जीवन संभव नहीं है। उन्होने इसे कभी भी न भूलने की कसम भी खाई थी। जनरल मुनीर के हिंदू-विरोधी भाषण को ही पहलगाम पर आतंकी हमले की बुनियाद माना जा रहा है।

जनरल मुनीर भारत में हिंदू और मुसलमानों के बीच सांप्रदायिक विद्वेष की अंतहीन जड़ें बोना चाहते हैं। जो वटवृक्ष बनकर हवाओं में जहर उगलती रहें। सांप्रदायिक विद्वेष की थीसिस को ध्यान में ऱखकर ही पहलगाम में आतंकी हमले को अंजाम दिया गया है। किसी भी देश में बहुसंख्यकों और अल्पसंख्यकों के बीच संघर्ष की निरन्तरता उस देश को पतन की ओर ढकेलने वाली होती है। भारत जैसे देश में, जहां अल्पसंख्यकों की आबादी 25 करोड़ से ज्यादा है, तो यह लड़ाई अपने ही गले में फंदे डालने जैसी हो सकती है।

भारत के मुसलमानों को जेहादी बनाने की ये कोशिश खतरनाक हैं। जनरल मुनीर सोचते हैं कि फिलवक्त भारत की सत्ता में हिंदुत्व का बोलबाला है। मुसलमानो को सताया जा रहा है। कश्मीर में धारा 370 को हटाने जैसे कदमों के साथ तीन तलाक और वक्फ-बिल जैसे कानूनों के जरिए मुसलमान अल्प संख्यकों को कोने में ढकेला जा रहा है। एक ओर जनरल मुनीर ने मुस्लिमों को उकसाने की गरज से ही वक्फ बिल को उनकी आध्यात्मिकता पर प्रहार निरूपित करते हैं तो दूसरी ओर पहलगाम जैसे हमलों के जरिये हिंदुओं को उकसाना चाहते हैं कि वो आक्रोश और उन्माद में मुसलमानो पर टूट पड़ें और दंगा-फसाद शुरू हो जाए।

यह पहली मर्तबा नहीं है कि आतंकवादियों ने पहली बार आम नागरिकों को अपना निशाना बनाया है। इसके पहले भी ऐसी घटनाएं हो चुकी हैं। पिछ्ले पचास वर्षों में भारत में आतंकवादी घटनाओं का आंकड़ा तेरह हजार से ज्यादा है। इनमे मरने वालों की संख्या बीस हजार से ज्यादा है। पहलगाम की घटना को भी अंतिम घटना मानना मुनासिब नहीं है। ऐसी घटनाएं आगे भी हो सकती हैं, क्योंकि आतंकवादियों के लक्ष्य अभी भी पूरे नहीं हुए हैं।

केन्द्र में मोदी-सरकार के गठन के बाद केन्द्र ने पाकिस्तान को आंतकवादी गतिविधियों के खिलाफ सख्ती के संदेश दिये हैं। 2016 की सर्जिकल स्ट्राइक और 2019 में बालाकोट में हवाई हमले के बाद भारत ने आतंकी संगठनों को ईंट का जवाब पत्थर से देने के संकेत दिये हैं। स्पष्ट है कि लक्ष्मण-रेखाएं लांघने पर आतंकवादियों को सजा जरूर मिलेगी। सिंध नदी जल समझौता रद्द करके भारत ने अपने इरादे उजागर कर दिये हैं कि पाकिस्तान नियंत्रण रेखा का सम्मान करे। लेकिन पाकिस्तान की जहरीली तासीर महज कूटनीतिक कार्रवाई से शांत होने वाली नहीं है।

केन्द्र सरकार की अपनी मर्यादाएं और जवाबदारी है। वह अपने तरीके से काम करेगी, लेकिन सरकार से बड़ी जवाबदेही आम जनता और सियासी पार्टियों की है। समाज में आत्म-संयम जरूरी है। कश्मीरी जनता ने घटना के विरोध में खड़े होकर भारत की जनता की ओर विश्वास का हाथ बढ़ाया है। पाकिस्तान से बदला लेने की रणनीति सर्वोपरि होना चाहिए,लेकिन उतना ही महत्वपूर्ण है कि हम कश्मीर के अवाम का भी ध्यान रखें। कश्मीर की समूची आबादी के आत्म सम्मान की रक्षा के लिए प्रतिबद्धता के साथ खड़े होना पहली जरूरत है। जिंदगी के सुनहरे अवसरों के साथ उन्हें राष्ट्र की मुख्य धारा में समग्रता से समाहित करना सबसे बड़ी जिम्मेदारी है। यह इसलिए भी जरूरी है कि वो देश की मुख्य धारा में समाहित होने के लिए लालायित भी है। धारा 370 के निरस्तीकरण के बाद कश्मीर की लेकर दुनिया की धारणाएं बदली हैं। आकाश खुला है और फिजाएं बदली हैं। यह पहली बार हुआ है...इस अवसर को हाथ से नहीं जाने देना चाहिए।

पहलगाम में हिंदुओं की हत्याओं के नाम पर देश के दूसरे हिस्सों मे हाथ में अंगारे उठा लेना मुनासिब नहीं है। भारत को ऐसा रास्ता अख्तियार करने की जरूरत है, जो जिंदगी को नया मुकाम दे, न्याय की रक्षा करे और सालों पुरानी आतंक की मशीनरी का खात्मा करने मे समर्थ हो। मोदी-सरकार खामोशी से इस ओर अग्रसर है। कांग्रेस सहित समूचे विपक्ष ने भी अभी तक समझदारी दिखाई है। आतंकवाद के खिलाफ राजनीतिक सुरों की जुगलबंदी का यह आगाज देश के लिए शुभ है।

subahsaverenews@gmail.com
facebook.com/subahsaverenews
www.subahsavere.news
twitter.com/subahsaverenews

सुप्रभात

बेखौफ घर से निकले
घूमे फिरे
जहां चाहे टहले
न दुर्घटना की आशंका हो
ना हो धोखे का डर
ऐसा निष्कंटक, निरापद
जीवन पथ
क्या हर बच्चा पाएगा ?
ये कब हो पाएगा ??
बम गोलों धमाकों
चीख पुकार
निरंतर बजते
सायरनों के बिना
बचपन मेरा एकाध दिन
क्या चैन से सो पाएगा ?
ये कब हो पाएगा ??
पूछ रहा
बचपन हमसे
आंखों में आंखे डाले,
ट्रिगर दबाते बंदूक की
गोलियों की जगह
नली से उग आए कोंपले !
ये कब हो पाएगा ?
ये कब हो पाएगा ??

- संदीप राशिनकर

वैन कुएं में गिरी, 10 की मौत

बाइक से टकराई थी; बचाने गए ग्रामीण की जहरीली गैस से जान गई

मंदसौर (नप्र)। एमपी के मंदसौर में ईको वैन बाइक से टकराकर कुएं में गिर गई। हादसे में बाइक सवार समेत 10 लोगों की मौत हो गई। मरने वालों में कार सवारों को बचाने के लिए कुएं में उतरा ग्रामीण मनोहर सिंह भी शामिल है।

शवों को कुएं से निकालने के लिए SDERF की टीम को भी मौके पर बुलाया गया है। टीम रस्सियों के सहारे कुएं में उतरी है। वहीं, क्रेन की मदद से वैन को निकाल लिया गया है। घायलों में शामिल 3 साल की बच्ची समेत चार लोगों को रेस्क्यू करके मंदसौर जिला अस्पताल में भर्ती कराया गया है। बाइक सवार की पहचान आबाखेड़ी निवासी गोबर सिंह के तौर पर हुई है। हादसा जिले के नारायणगढ़ थाना क्षेत्र में बूढ़ा-टकरावत फंटे में रविवार दोपहर करीब सवा एक बजे हुआ। वैन में 10 से ज्यादा लोग सवार थे, जो उज्जैन जिले के उन्हेल से नीमच जिले के मनासा क्षेत्र के आंतरी माता मंदिर दर्शन के लिए जा रहे थे।

डिप्टी सीएम बोले- पहले बच्चों को निकाला

मौके पर उपमुख्यमंत्री जगदीश देवड़ा, कलेक्टर अदिति गर्ग, एसपी अभिषेक आनंद, एडिशनल एसपी गौतम सोलंकी, एसडीओपी नरेंद्र सोलंकी मौके पर मौजूद हैं। डिप्टी सीएम जगदीश देवड़ा ने बताया कि इस हादसे में कुल 13 लोग शामिल थे, जिनमें दो बच्चे भी थे। पहले बच्चों को निकालकर अस्पताल भेजा गया। कुएं से सभी को निकाला जा रहा है। गाड़ी बड़ी मुश्किल से बाहर लाई गई है। कुएं में जहरीली गैस के कारण, बचाने गए मनोहर सिंह की भी मौत हुई है। उन्होंने 2-3 लोगों को बाहर निकाला था। मुझे जैसे ही घटना के बारे में पता चला मैं सीधा यहीं आ गया। जिले के सारे अधिकारी भी यहीं हैं।

पहलगाम पीड़ितों को हर हाल में मिलेगा न्याय

- मोदी बोले-देश का खून खौल रहा है, दिया जाएगा कठोर जवाब
- मन की बात में पीएम ने कहा-साजिश करने वाले भी नहीं बचेंगे

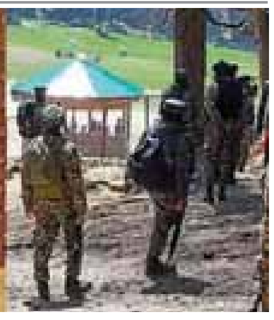

नई दिल्ली (एजेंसी)। पीएम मोदी ने रेडियो शो 'मन की बात' के 121वें एपिसोड की शुरुआत पहलगाम में मारे गए लोगों को याद करते हुए की। उन्होंने कहा- इस आतंकी हमले के बाद पूरा देश एक स्वर में बोल रहा है। पूरे विश्व ने संवेदना प्रकट की है। उन्होंने कहा कि पहलगाम हमले से देश के लोगों का खून खौल रहा है। पीड़ित परिजनों को न्याय जरूर मिलेगा। मोदी ने कहा- कश्मीर में शांति लौट रही थी, स्कूल-कॉलेज अच्छे से चल रहे थे, निर्माण कार्यों में अभूतपूर्व गति आई थी, लोकतंत्र मजबूत हो रहा था, पर्यटकों की संख्या में रिकॉर्ड बढ़ोतरी हो रही थी, लोगों की कमाई बढ़ रही थी, युवाओं के लिए नए अवसर तैयार हो रहे थे, लेकिन जम्मू-कश्मीर के दुश्मनों को ये रास नहीं आया। पीएम ने पीड़ित परिवारों को न्याय का भरोसा दिया। कहा- इस हमले के दोषियों और साजिश रचने वालों को कठोर जवाब दिया जाएगा।

मुख्यमंत्री डॉ. मोहन यादव को इंदौर के दिगंबर जैन महाकुंभ सुमित धाम गांधी नगर में आयोजकों ने सम्मानित किया।

जो अपराध करेगा उसे दण्ड मिलेगा : सीएम डॉ.यादव

- **प्रदेश में किसी प्रकार के जिहाद या लव जिहाद की अनुमति नहीं**

भोपाल (नप्र)। मुख्यमंत्री डॉ. मोहन यादव ने कहा कि मध्यप्रदेश सुशासन के लिए जाना जाता है, इसलिए यहां अपराध और अपराधी के लिए कोई जगह नहीं है। जो अपराध करेगा उसे दण्ड मिलेगा, हमारी सरकार ने प्रदेश की धरती पर किसी प्रकार के जिहाद या लव जिहाद की अनुमति नहीं दी है। जो हमारी धरती पर यह करता पाया जाएगा उसे छोड़ेंगे नहीं, वह राज्य के अंदर हो या राज्य से बाहर भागा हो, हमारी पुलिस उसे हर जगह से पकड़ कर लाएगी। यह हमारा संकल्प है। मुख्यमंत्री डॉ. यादव ने मीडिया को जारी संदेश में यह बात कही।

सीएम डॉ. यादव ने की घोषणा

5 प्रतिशत बढ़ा महंगाई भत्ता, अब 55 प्रतिशत मिलेगा

कर्मचारियों के प्रमोशन जल्द शुरू करेंगे

भोपाल (एजेंसी)। मध्यप्रदेश सरकार ने प्रदेश के 7.30 लाख कर्मचारियों का महंगाई भत्ता (डीए) 5 प्रतिशत बढ़ाकर 55 प्रतिशत कर दिया है। मध्यप्रदेश राजपत्रित अधिकारी संघ के कार्यक्रम में मुख्यमंत्री डॉ. मोहन यादव ने यह घोषणा की। सरकार पर 175 करोड़ का अतिरिक्त भार आएगा।

सीएम ने कहा, कर्मचारियों के प्रमोशन की मांग लंबे समय से चल रही है। 2016 से यह मांग लंबित है हम प्रयास कर रहे हैं कि सभी कर्मचारियों के सभी वर्गों के प्रमोशन जल्द से जल्द हो सके।

5 समान किस्तों में दी जाएगी एरियर की राशि- सीएम ने कहा, सभी सरकारी कर्मचारियों के लिए 2024 से 3त्न और 1 जनवरी 2025 से 2 प्रतिशत महंगाई भत्ते की अतिरिक्त किस्त मंजूर की गई है। अब इनका महंगाई भत्ता केंद्रीय कर्मचारियों के समान 55 प्रतिशत हो गया है। एरियर की राशि का भुगतान पांच समान किस्तों में जून 2025 से अक्टूबर 2025 तक कर दिया जाएगा।

प्रमोशन को लेकर बीच का रास्ता निकाल रहे- सीएम ने कहा, बहुत जल्द सभी वर्गों का प्रमोशन शुरू किया जाएगा। 2016 से प्रमोशन का मामला कई कारणों से मामला उलझा हुआ है। ऐसे में हमारी मंत्रिमंडल की एक समिति बनाई गई थी। अधिकारियों के सभी वर्गों से बात कर रहे हैं कि बीच का रास्ता निकाला जाए। मैं मानकर चलता हूं कि हमारे भगवान महाकाल चाहेंगे तो जल्दी वह समय आएगा जब हम इसकी न केवल घोषणा करेंगे बल्कि उसे लागू भी करेंगे।

महंगाई से निपटने के लिए दिया जाता है - महंगाई बढ़ने के बावजूद सरकारी कर्मचारियों और पेंशनधारकों के जीवन स्तर को बनाए रखने के लिए महंगाई भत्ता यानी, डीए दिया जाता है। डीए की दरें ऑल इंडिया कंज्यूमर प्राइस इंडेक्स के आधार पर तय होती हैं, और यह हर 6 महीने में अपडेट होती है।

ऑल इंडिया कंज्यूमर प्राइस इंडेक्स क्या है?

भारत में दो तरह की महंगाई होती है। एक रिटेल यानी खुदरा और दूसरा थोक महंगाई। रिटेल महंगाई दर आम ग्राहकों की तरफ से दी जाने वाली कीमतों पर आधारित होती है। इसको कंज्यूमर प्राइस इंडेक्स भी कहते हैं।

भोपाल का तापमान
अधिकतम 22 °c
न्यूनतम 16°c

सुबह सवेरे

भोपाल ■ सोमवार, 28 अप्रैल 2025

जो अग्नि हमें गर्मी देती है , हमें नष्ट भी कर सकती है ; यह अग्नि का दोष नहीं है।

चाणक्य नीति

आधार-पैन में अब एक साथ बदलेगा नाम और नंबर

● तीन दिन में अपडेट होंगे डॉक्यूमेंट ,नहीं काटने होंगे कई दफ्तरों के चक्कर

सरकार की यूनिफाइड डिजिटल आईडेंटिटी सिस्टम लागू करने की तैयारी

नई दिल्ली (एजेंसी)। आधार, पैन, वोटर आईडी, ड्राइविंग लाइसेंस आदि में नाम, पता, मोबाइल नंबर बदलवाने के लिए लोगों को अब अलग-अलग दफ्तरों में चक्कर नहीं काटने होंगे। केंद्र सरकार यूनिफाइड डिजिटल आईडेंटिटी सिस्टम लागू करने की तैयारी में है। इसके लिए बन रहे पोर्टल पर लोग एक ही जगह पता, नंबर आदि अपडेट कर सकेंगे। सभी जरूरी पहचान पत्रों में यह बदलाव ऑटोमैटिक अपडेट हो जाएगा। यह पोर्टल कैसे करेगा काम पोर्टल को इस तरह डिजाइन किया जा रहा है कि आधार, पैन, ड्राइविंग लाइसेंस और पासपोर्ट जैसे सभी पहचान पत्र एक साथ इंटीग्रेटेड रहें। अपडेट के लिए पोर्टल पर जाकर विकल्प चुनना होगा। जैसे- मोबाइल नंबर बदलने के लिए अलग विकल्प, पता बदलने के लिए अलग विकल्प। संबंधित दस्तावेज अपलोड करने होंगे। बदलाव तीन वर्किंग डेज में सभी दस्तावेजों में अपडेट हो जाएगा। बदलाव के साथ नया पहचान पत्र हासिल करने के लिए भी इस पोर्टल पर एक विकल्प होगा। इसके लिए पोर्टल पर शुल्क देने के साथ आवेदन करना होगा। 7 वर्किंग डेज में नए अपडेट के साथ पहचान पत्र डाक के जरिए लोगों के घरों तक पहुंच जाएगा। जो कार्यालय में जाकर पहचान पत्र हासिल करना चाहेंगे, उनके लिए भी विकल्प। अभी ट्रायल रन, जल्द शुरू होगा अधिकारियों से मिली जानकारी के मुताबिक अभी ट्रायल रन चल रहा है। कुछ तकनीकी और कानूनी दिक्कतें थीं, जिनका निराकरण अंतिम चरण में है। खासकर डेटा को सुरक्षित रखने के लिए एक फुल प्रूफ व्यवस्था बनाने की चुनौती थी, जिसे पूरा किया जा रहा है। अभी तक के जो ट्रायल रन किए गए हैं, उनमें 92 फीसदी से ज्यादा सटीकता हासिल हुई है। 98 फीसदी या उससे अधिक सटीकता हासिल करते ही इसे परीक्षण के लिए लागू किया जाएगा। उसके कुछ ही महीनों बाद इस पोर्टल की शुरुआत हो जाएगी।

किश्तवाड़ में आर्मी यूनिफॉर्म की सिलाई-बिक्री पर रोक

पहलगाम (एजेंसी)। जम्मू-कश्मीर में पहलगाम के बैसरन घाटी में 22 अप्रैल को आतंकियों ने 26 पर्यटकों पर अंधाधुंध गोलियां बरसाकर हत्या कर दी थी। इसके बाद से घाटी में सुरक्षाबलों का सर्च ऑपरेशन जारी है। किश्तवाड़ में सेना की वर्दी की बिक्री, सिलाई और स्टॉक करने पर रोक लगा दी गई है। जम्मू और कश्मीर के किश्तवाड़ में अब सेना की वर्दी की बिक्री, सिलाई और स्टॉक करने पर रोक लगा दी गई है। यह कदम इलाके की सुरक्षा को ध्यान में रखते हुए उठाया गया है। प्रशासन ने आदेश दिया है कि अब कोई भी व्यक्ति सेना की वर्दी नहीं बेच सकेगा, सिल नहीं सकेगा और न ही उसे रख सकेगा। यह नियम शांति और सुरक्षा बनाए रखने के लिए लागू किया गया है। सुरक्षा एजेंसियां इस पर नजर रखेंगी। इस बीच सुरक्षाबलों ने कश्मीर घाटी में पिछले तीन दिनों में 10 आतंकियों के घर ब्लास्ट से उड़ा दिए हैं। कुपवाड़ा के कंडी खास में गुलाम रसूल मगरे की हत्या कर दी।

पहलगाम अटैक पर विवादित पोस्ट,7 राज्यों में 28 गिरफ्तार

नई दिल्ली (एजेंसी)। पहलगाम आतंकी हमले को लेकर सोशल मीडिया पर विवादित टिप्पणी करने पर 7 राज्यों से 28 लोगों को गिरफ्तार किया गया। इन सभी गिरफ्तारियों में असम के विपक्षी पार्टी एडीयूएफ के विधायक, एक पत्रकार, एक वकील, 2 रिटायर्ड टीचर और 23 स्टूडेंट शामिल है। सोशल मीडिया पर विवादित पोस्ट करने पर उत्तर प्रदेश, मध्यप्रदेश, छत्तीसगढ़, झारखंड, असम, मेघालय और त्रिपुरा में गिरफ्तारियां हुई हैं। सबसे अधिक 16 गिरफ्तारी असम से की गई है। पहलगाम हमले पर सोशल मीडिया पर विवादित टिप्पणी करने को लेकर पहली गिरफ्तारी 24 अप्रैल को असम के एक विधायक की हुई। गिरफ्तार विधायक अमीनुल इस्लाम असम की विपक्षी पार्टी एडीयूएफ से हैं। उन्होंने 2019 के पुलवामा हमले और 22 अप्रैल के पहलगाम हमले को 'सरकार की साजिश' बताया था। उन पर राजद्रोह का केस दर्ज हुआ और 25 अप्रैल को उन्हें चार दिन की पुलिस हिरासत में भेजा गया।

डिवाइडर से टकराकर पलटी कार, मां-बेटी की मौत

झाबुआ में साइंटिस्ट पिता और बेटा घायल; हाल ही में पीएससी परीक्षा क्लियर की थी

रतलाम/झाबुआ (नप्र)। झाबुआ में कार डिवाइडर से टकराकर पलट गई। हादसे में महिला और दो साल की बेटी की मौत हो गई जबकि पति और 8 साल का बेटा घायल है।

हादसा थांदला थाने की खवासा पुलिस चौकी इलाके में दिल्ली मुंबई 8 लेन एक्सप्रेस-वे पर शनिवार शाम 5.30 बजे हुआ। घायलों को रतलाम के निजी अस्पताल में भर्ती कराया गया है।

शिवपुरी जिले में करेरा के रहने वाले सौरभ गुप्ता (39), पत्नी आकांक्षा (34), बेटा अयांश (8) और बेटी निर्विका (2) के साथ शनिवार सुबह अपनी कार से वड़ोदरा जाने के लिए निकले थे। इसी दौरान सड़क पर पड़े पत्थर की वजह से कार अनियंत्रित होकर डिवाइडर से जा टकराई। फिर पलट गई।

सौरभ खुद गाड़ी चला रहे थे। आकांक्षा बेटी को गोद में लेकर साइड वाली सीट पर बैठी थी। बेटा पीछे की सीट पर था। गाड़ी डिवाइडर से टकराते ही आकांक्षा और बेटी कार से बाहर गिर पड़े। सौरभ और बेटा कार में ही फंस गए।

आकांक्षा ने मौके पर, बेटी ने अस्पताल में दम तोड़ा- सूचना मिलते ही पुलिस मौके पर पहुंची। नेशनल हाईवे अथॉरिटी ऑफ इंडिया की एंबुलेंस को बुलाया। आकांक्षा ने घटनास्थल पर ही दम तोड़ दिया। निर्विका की रतलाम मेडिकल कॉलेज में इलाज के दौरान मौत हो गई। सौरभ और बेटे को रतलाम के निजी हॉस्पिटल में एडमिट कराया गया है। पत्नी आकांक्षा और बेटी निर्विका के साथ सौरभ गुप्ता। वे हाल ही में ड्रग इंस्पेक्टर चुने गए हैं।

हाल ही में ड्रग इंस्पेक्टर के पद पर चयन हुआ है- सौरभ के रिटायर्ड शिक्षक पिता मुरारीलाल ने बताया- बेटा वड़ोदरा की सन फार्मा कंपनी में साइंटिस्ट है। कजिन सिस्टर की शादी होने पर वह वड़ोदरा से छुट्टी लेकर आया था। 18 अप्रैल को जयपुर में शादी में पूरा परिवार शामिल हुआ। उसके बाद सौरभ ने मथुरा-वृंदावन में भंडारा भी किया था।

सौरभ का हाल में ही एमपीपीएससी के जरिए औषधि निरीक्षक के पद पर चयन हुआ है। 14 मई को भोपाल में डॉक्यूमेंट वेरिफिकेशन के लिए बुलाया था। इससे पहले हादसे ने परिवार की खुशियां छिन लीं।

पिता का आरोप- सोने के गहने नहीं मिले- मुरालीलाल के अनुसार, कार में नकद समेत दूसरा सामान मिल गया है। लेकिन आकांक्षा ने 2 तोला सोने के कंगन, सोने की तीन अंगूठी, मंगलसूत्र और बालियां पहन रखी थीं। सभी गहने गायब हैं। खवासा चौकी प्रभारी एएसआई एडमिरल तोमर ने बताया- कार अनियंत्रित होकर रोड से नीचे उतर गई थी। कार पलटने से डिक्की खुल गई थी। घटनास्थल और सामान का हमने वीडियो बनाया है। मामले की जांच कर रहे हैं।

लव मैरिज से नाराज पिता ने बेटी-दामाद को गोली मारी

जलगांव में रिश्तेदार की शादी में की फायरिंग,बेटी की मौत

जलगांव (एजेंसी)। महाराष्ट्र के जलगांव में लव मैरिज से नाराज पिता ने बेटी और दामाद को गोली मार दी। बेटी की मौके पर ही मौत हो गई, जबकि दामाद गंभीर रूप से घायल है। घटना चोपड़ा शहर की है। घटना के बाद शादी में मौजूद लोगों ने किरण मंगले को पकड़ लिया और बुरी तरह पीटा। पुलिस ने किरण को हिरासत में ले लिया और इलाज के लिए अस्पताल भेज दिया। आरोपी किरण मंगले सेंट्रल रिजर्व पुलिस फोर्स में रिटायर्ड सब इंस्पेक्टर है। उसकी बेटी तृप्ति ने एक साल पहले अविनाश से शादी की थी। शादी के बाद से दोनों पुणे में रह रहे थे। रिश्तेदार की शादी में शामिल होने आया था। तृप्ति और अविनाश शादी में शामिल होने आए थे।

सर्वदलीय बैठक में नहीं पहुंचे पीएम, बिहार में व्यस्त थे

पहलगाम आतंकी हमले पर पीएम मोदी नहीं हैं गंभीर : खड़गे

बेंगलुरु (एजेंसी)। कांग्रेस राष्ट्रीय अध्यक्ष मल्लिकार्जुन खड़गे ने शनिवार को बेंगलुरु में कहा- पहलगाम हमले पर बुलाई गई सर्वदलीय बैठक में सभी राजनीतिक दलों के नेता मौजूद थे। प्रधानमंत्री मोदी को भी आना चाहिए था, लेकिन वे नहीं आए। हमने बैठक में सबसे पहले यही सवाल उठाया था। खड़गे ने कहा- जब देश में 26 लोगों मारे गए और कई घायल हों, तब भी पीएम का सर्वदलीय बैठक के प्रति रवैया ठीक नहीं है। उस वक्त मोदी बिहार में चुनावी रैली को संबोधित करने में व्यस्त थे। अगर वह बैठक में शामिल नहीं हो रहे हैं तो इसका मतलब है कि वह इसे लेकर गंभीर नहीं हैं। पहलगाम हमले को लेकर 24 अप्रैल को पार्लियामेंट एनेक्सी में 2 घंटे तक सर्वदलीय बैठक हुई। इसकी अध्यक्षता रक्षा मंत्री राजनाथ सिंह ने की। अमित शाह, एस जयशंकर, मल्लिकार्जुन खड़गे और राहुल गांधी समेत कई नेता इसमें शामिल हुए। पहलगाम के नजदीक बैसरन घाटी में 22 अप्रैल को आतंकियों ने 26 टूरिस्ट की हत्या कर दी थी। इनमें एक नेपाली नागरिक शामिल था। 10 से ज्यादा लोग घायल हो गए थे। केंद्र सरकार ने शनिवार को पहलगाम हमले की जांच नेशनल इन्वेस्टीगेशन एजेंसी को सौंप दी।

एनआईए को सौंपी पहलगाम में हुए आतंकी हमले की जांच

पाकिस्तानी कनेक्शन और 26/11 जैसी साजिश के संकेत

नई दिल्ली (एजेंसी)। केंद्र सरकार ने 22 अप्रैल को जम्मू-कश्मीर के पहलगाम में हुए आतंकी हमले की जांच राष्ट्रीय जांच एजेंसी एनआईए को सौंप दी है। इस हमले को पाकिस्तान द्वारा प्रायोजित बताया गया है, जिसे आतंकी संगठन लश्कर-ए-तैयबा ने अपने फ्रंट संगठन द रेसिस्टेंस फ्रंट के जरिए अंजाम दिया था। पहलगाम हमले की जांच एनआईए करेगी, गृह मंत्रालय ने इस संबंध में आदेश जारी कर दिया है। अधिकारियों के अनुसार, एनआईए अब जम्मू-कश्मीर पुलिस से केस अपने हाथ में लेने की प्रक्रिया में है। माना जा रहा है कि एनआईए इस हमले से जुड़े व्यापक आतंकी नेटवर्क और साजिश का पर्दाफाश करने के लिए जल्द ही गहन जांच शुरू करेगी। अधिकारियों के मुताबिक, एनआईए अब जम्मू-कश्मीर पुलिस द्वारा दर्ज की गई प्राथमिकी को दोबारा दर्ज कर औपचारिक जांच शुरू करेगी, हालांकि एसपी विजय साखरे के नेतृत्व में एनआईए की टीम पहले से 23 अप्रैल से ही स्थानीय पुलिस की मदद कर रही है। एनआईए बीते कुछ दिनों से हमले के जीवित बचे लोगों के बयान दर्ज कर रही है और लश्कर, जैश-ए-मोहम्मद और अन्य आतंकी संगठनों से जुड़े गिरफ्तार आतंकियों और ओवरग्राउंड वर्कर्स से पूछताछ कर रही है। इस बीच सेना, सीआरपीएफ और जम्मू-कश्मीर पुलिस का संयुक्त बल उन हमलावरों की तलाश कर रहा है जिन्होंने 26 निर्दोष नागरिकों की हत्या कर दी।

लॉरेंस मामले में पंजाब के 5 पुलिसकर्मियों का यूटर्न

इंटरव्यू मामले में लाई डिटेक्टर टेस्ट कराने से इनकार

चंडीगढ़ (एजेंसी)। पंजाब पुलिस के पांच कांस्टेबल सिमरनजीत सिंह, हरप्रीत सिंह, बलविंदर सिंह, सतनाम सिंह और अमृतपाल सिंह ने पुलिस हिरासत में गैंगस्टर लॉरेंस बिश्नोई के फिल्माए गए इंटरव्यू की जांच के संबंध में लाइ डिटेक्टर टेस्ट कराने से अपनी सहमति वापस ले ली है। उन्होंने दावा किया कि सहमति दबाव में ली गई थी। ये मामला गैंगस्टर लॉरेंस बिश्नोई के पुलिस हिरासत में इंटरव्यू रिकॉर्ड करने से जुड़ा है। पहले तो ये सब पॉलीग्राफ टेस्ट के लिए राजी हो गए थे। मोहाली की अदालत ने इजाजत भी दे दी थी।

पति को गोली मारने वाले आतंकी को पत्नी ने पहचाना

● सूरत की शीतलबेन बोलीं-करीब आकर गोली मारी, फिर दो-तीन मिनट तक देखता रहा

सूरत (एजेंसी)। जम्मू-कश्मीर के पहलगाम में 22 अप्रैल को हुए आतंकी हमले में 26 लोगों की मौत हो गई। इसमें सूरत के शैलेश कलथिया भी शामिल थे। शैलेश परिवार के साथ छुट्टी मनाने पहलगाम पहुंचे थे। हमले में शैलेश की पत्नी और बेटा-बेटी बच गए। आतंकियों की तस्वीर सामने आने के बाद शीतलबेन ने उस आतंकी को पहचान लिया, जिसने उनकी और बच्चों के आंखों के सामने पति को गोली मारी थी। जिन चार आतंकवादियों की तस्वीरें सामने आई हैं, उनमें से दाईं ओर से दूसरे आतंकी ने ही शैलेष के सीने में गोली मारी थी। इन आतंकियों के खिलाफ 20-20 लाख रुपए का इनाम रखा गया है। शीतलबेन ने बताया- जब वे भागने की कोशिश कर रहे थे, तब यही आतंकी दौड़कर उनके सामने आकर खड़ा हो गया था। इसके बाद उसने दो-तीन फीट की दूरी से शैलेष के सीने में गोली मार दी थी।

बीजापुर की पहाड़ियों में माओवादी के खिलाफ बड़ा अभियान

रायपुर (एजेंसी)। पिछले छह दिनों से सुरक्षा बलों ने बीजापुर की कर्रेगुट्टा पहाड़ियों को घेर रखा है और पूरी रणनीति के साथ उस पर चढ़ाई कर रहे हैं। यह पहाड़ियां करीब 700 मीटर ऊंची हैं और तेलंगाना-छत्तीसगढ़ सीमा पर लगभग 20 किलोमीटर तक फैली हुई हैं। सुरक्षा एजेंसियों का मानना है कि इन पहाड़ियों में माओवादी नेतृत्व के प्रमुख सदस्य छिपे हुए हैं, जिन्हें पीपुल्स लिबरेशन गुरिल्ला आर्मी (पीएलजीए) की सबसे खतरनाक इकाई, बटालियन-1 द्वारा सुरक्षा प्रदान की जा रही है। अधिकारियों का कहना है कि दंडकारण्य में यह अभियान 2024 में शुरू हुए नक्सल विरोधी अभियानों का सबसे बड़ा कदम हो सकता है, जिसमें अब तक 363 माओवादी मारे गए हैं और नेताओं को पहाड़ियों में खदेड़ दिया है।

हम तो लिबरल थे, पश्चिमी देश लेकर आए हैं जिहाद

इस्लामाबाद (एजेंसी)। पाकिस्तान के रक्षा मंत्री ख्वाजा आसिफ का कहना है कि उनके देश को कट्टरता के रास्ते पर धकेलने का काम अमेरिका और पश्चिम के देशों ने किया है। आसिफ का कहना है कि पाकिस्तान की लिबरल सोसायटी में जिहाद जैसी अवधारणा पश्चिम ने पैदा की। आसिफ ने 80 और 90 के दशक में अमेरिका की अफगानिस्तान में एंट्री को पूरे क्षेत्र में धार्मिक कट्टरता आने की वजह कहा है। आसिफ ने ये भी माना है कि पाकिस्तान में आतंक को शह मिलती रही है। पहलगाम हमले में पाकिस्तान की भूमिका पर उठे सवालों के बीच आसिफ ने ये कहा है। ख्वाजा आसिफ ने एक इंटरव्यू में पाकिस्तान में आतंक के सवाल पर कहा कि हमारे देश में तब तक कोई चरमपंथ नहीं था, जब तक वह जिहाद का समर्थन करने के लिए पश्चिमी गठबंधन में शामिल नहीं हुआ।

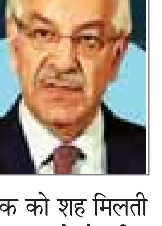

जम्मू-कश्मीर में 5 साल में 84 हजार करोड़ का निवेश

● पर्यटन से 18 हजार करोड़ कमाएं, 35 साल में आतंकवाद से 40 हजार मौतें

श्रीनगर (एजेंसी)। जम्मू-कश्मीर में 2019 के बाद हालात तेजी से सुधर रहे हैं। राज्य की मौजूदा जीडीपी औसत 8.5 फीसदी दर से बढ़ रही है। पिछले 5 सालों में 84 हजार करोड़ का निवेश प्रस्ताव आया है। वहीं 2024 में राज्य को पर्यटन से 18 हजार करोड़ रुपए का रेवेन्यू मिला। जम्मू-कश्मीर करीब 35 सालों से आतंकवाद झेल रहा है। इसकी वजह से अब तक 40 हजार से ज्यादा लोगों को जान गंवानी पड़ी है। साथ ही लाखों लोगों को पलायन के लिए मजबूर होना पड़ा। इसकी वजह से राज्य की डेमोग्राफी बदल गई। राज्य में हुई हिंसा और अस्थिरता के माहौल का सबसे ज्यादा असर विकास पर पड़ा। 2019 में आर्टिकल 370 हटने के बाद राज्य के हालात सुधर रहे थे। लेकिन पहलगाम हमले की वजह राज्य का विकास लंबे समय बाद प्रभावित होता दिख रहा है। ज्यादातर पर्यटक वापस लौटने लगे हैं। वहीं करीब 90 फीसदी लोगों ने अपनी ट्रैवल बुकिंग कैंसिल कर दी है। 2019 से पहले आतंकवाद की वजह से कृषि और टूरिज्म तबाह जम्मू-कश्मीर की इकोनॉमी टूरिज्म, फलों का व्यापार और हैंडीक्राफ्ट पर टिकी है। 1995 के बाद 10 साल में ड्राई फ्रूट निर्यात 67.14 फीसदी तक गिर गया। 2007 के बाद हस्तशिल्प उत्पादन 80 फीसदी तक कम हो गया। सिर्फ इतना ही नहीं साढ़े 3 दशक से जारी आतंकवाद और हिंसा ने लोगों के मानसिक स्वास्थ्य पर भी काफी गहरा असर डाला है। अवसाद, चिंता, सदमा, आत्महत्या और नशे की प्रवृत्ति में इजाफा हुआ।

शराब पीने से रोका तो हेड कॉन्स्टेबल को पीटा, वर्दी फाड़ी

बचाने आए दूसरे पुलिसकर्मी से आरोपी बोले- हिंदू भाई हो, हट जाओ

भोपाल (नप्र)। भोपाल के रानी कमलापति रेलवे स्टेशन परिसर में शराब के नशे में युवकों ने जीआरपी जवान की पिटाई कर दी। उसकी वर्दी फाड़ दी। गालीगलौज की। धार्मिक आधार पर आपत्तिजनक टिप्पणियां भी कीं। पुलिस ने एक आरोपी को गिरफ्तार कर लिया है, जबकि दो अन्य की तलाश जारी है। जानकारी के अनुसार, शनिवार रात करीब 2 बजे जीआरपी बंसल वन की शॉप्स और रेस्टोरेंट्स बंद कराने पहुंची थी। इसी दौरान कुछ युवक कार में बैठकर शराब पी रहे थे। पुलिस ने उन्हें हटने के लिए कहा तो युवक विवाद करने लगे। हाथापाई होने लगी। युवकों ने हेड कॉन्स्टेबल नजर दौलत खान को पीटना शुरू कर दिया। जब हेड कॉन्स्टेबल संदीप और कमल रघुवंशी बचाने आए तो एक आरोपी ने कहा, तुम हिंदू भाई हो, हट जाओ। तभी एक अन्य आरोपी ने कहा, सब कहते हैं कि हिंदू भाई समझदार हैं, लेकिन ये (दौलत खान) लोगों को भाषण दे रहा था।

जीप का दरवाजा खोलकर पीटा

मौके पर मौजूद कुछ लोगों ने आरोपियों का वीडियो बना लिया, जो रविवार को सामने आया है। वीडियो में नजर आ रहा है कि तीन युवक जीआरपी की जीप का दरवाजा खोलकर पुलिसकर्मी की पिटाई कर रहे हैं।

एएसआई रामदयाल ने बताया, इस मामले में तीन आरोपियों के खिलाफ एफआईआर दर्ज कर ली गई है। मुख्य आरोपी जितेंद्र यादव को गिरफ्तार कर लिया है, जबकि उसके दो साथी फरार हैं।

आगरा-मुंबई हाईवे पर खड़ी बस में आग

- **50 यात्री बाल-बाल बचे, 1 झुलसा**

शाजापुर (उज्जैन) (नप्र)। शाजापुर में आगरा-मुंबई राष्ट्रीय राजमार्ग ढाबे पर खड़ी बस में आग लग गई। आग बुझाने के प्रयास किए जा रहे हैं। बस में 50 से अधिक यात्री सवार थे। मौके पर 3 फायरब्रिगेड पहुंची है। बस में एक यात्री सो रहा था, समय रहते वह भी बाहर निकल आया। यात्री आग में मामूली झुलसा है। बस और उसमें रखा सभी यात्रियों का सामान पूरी तरह से जलकर खाक हो गया। जानकारी के अनुसार बस में आग शाजापुर से 5 किलोमीटर दूर सनकोटा पेट्रोल पंप के सामने स्थित ढाबे पर लगी है। रविवार दोपहर 12 बजे यात्री ढाबे पर चाय-नाश्ते के लिए उतरे थे। थोड़ी देर बाद ही बस से आग की लपटे निकलने लगी।

एमपी टेक ग्रोथ कॉन्क्लेव-2025

मध्यप्रदेश सेमी कंडक्टर उद्योग का अगला प्रमुख केंद्र बनेगा

भोपाल (नप्र)। एमपी टेक ग्रोथ कॉन्क्लेव-2025 मुख्यमंत्री डॉ. मोहन यादव के नेतृत्व में राज्य सेमीकंडक्टर और इलेक्ट्रॉनिक कंपोनेंट उद्योग में एक बड़ा केंद्र बनने के लिए तैयार है। नवीन तकनीकी क्रांति में राज्य अग्रणी भूमिका निभाने और निवेश आकर्षित करने की ओर अग्रसर है। 'एमपी टेक ग्रोथ कॉनक्लेव-2025' में अपर मुख्य सचिव विज्ञान एवं प्रौद्योगिकी श्री संजय दुबे ने रविवार को 'मध्यप्रदेश - सेमीकंडक्टर और ईएसडीएम के लिए अगला गंतव्य' विषय पर आयोजित राउंड टेबल कॉन्फ्रेंस-4 को ब्रिलियंट कंवेंशन सेंटर, इंदौर में संबोधित किया। उन्होंने राज्य की सेमीकंडक्टर नीति एवं प्रदेश सरकार द्वारा निवेशकों को दी जाने वाली वित्तीय एवं गैर वित्तीय सुविधाओं के बारे में विस्तार से जानकारी दी। उद्योगपतियों/निवेशकों ने अपने विचार और सुझाव रखे। इसमें प्रोजेक्ट डायरेक्टर एमपीएसईडीसी श्री गुरु प्रसाद, डॉ. मणि मधुकर, प्रोग्राम लीड, सेमीकंडक्टर इकोसिस्टम - आईबीएम इंडिया, श्री अभिषेक कुमार, प्रबंध निदेशक

(एमडी) केदारा सहित उद्योगपति/ निवेशक उपस्थित रहे। एसीएस श्री दुबे ने कहा कि टियर-2 शहर जैसे इंदौर, भोपाल का तेजी से विकास राज्य की तकनीकी स्थिति को मजबूत कर रहा है। उन्होंने कहा कि मध्यप्रदेश की विशेष भौगोलिक स्थिति, त्वरित स्वीकृतियाँ, आधुनिक आधारभूत संरचना और प्रगतिशील नीतियाँ तकनीकी विकास को गति दे रही हैं। साथ ही सेमीकंडक्टर कंपोनेंट निर्माण, इलेक्ट्रोनिक उत्पाद विकास और नवाचार और चिप डिजाइन कंपनियों सभी के लिए विशेष सुविधाएं राज्य में प्रदान की जा रही हैं।

एसीएस श्री दुबे कहा कि राज्य सरकार आईटी पार्क, इलेक्ट्रॉनिक्स मैन्युफैक्चरिंग क्लस्टर (ईएमसी), विशेष आर्थिक क्षेत्र (एसईजेड) और मजबूत स्टार्ट-अप संस्कृति के जरिये नवाचार को बढ़ावा दे रही है। कॉन्फ्रेंस में निवेशकों ने कहा कि सरकार की सेमीकंडक्टर नीति-2025 बहुत आकर्षक है। राज्य सरकार निवेशकों को सभी आवश्यक सुविधाएं प्रदान कर रही है।

बैरसिया में एक्सीडेंट में घायल युवक की मौत

एक्टिवा सवार को बचाने में हुआ था हादसा, पिता और भाई गंभीर

भोपाल। बैरसिया में एचपी पेट्रोलपंप के सामने मंगलवार की रात को बाइक अनियंत्रित होकर गिर गई थी। हादसे में दो भाई और पिता गंभीर रूप से घायल हुए थे। तीनों एक ही बाइक पर सवार थे। इलाज के दौरान एक युवक की रविवार की सुबह मौत हो गई। मामले में पुलिस ने मर्ग कायम कर जांच शुरू कर दी है। पीएम के बाद शव परिजनों को सौंप दिया गया। पुलिस के मुताबिक रघुवीर सिंह (36) पुत्र ज्ञान सिंह निवासी अरवलिया मिस्त्री था। कार्यक्रम में शामिल होने के लिए मंगलवार को अरवलिया से बैरसिया जाने के लिए निकले थे। बैरसिया से करीब एक किलो मीटर पहले एचपी पेट्रोलपंप के पास अचानक सामने एक एक्टिवा सवार युवक आ गया। उसे बचाने के प्रयास में बाइक चला रहे रघुवीर गाड़ी से नियंत्रण खो बैठा। अनियंत्रित बाइक सड़क पर गिरी और डिवाइडर से टकरा गई। हादसे में बाइक सवार रघुवीर के पिता ज्ञान सिंह और भाई तुलसी गंभीर रूप से घायल हो गए। तीनों को इलाके लिए पहले बैरसिया फिर हमीदिया हॉस्पिटल में भर्ती कराया गया। इलाज के दौरान रघुवीर की रविवार की सुबह मौत हो गई। मामले में पुलिस ने मर्ग कायम कर जांच शुरू कर दी है।

95 साल की मां को बेटे ने छत पर छोड़ा

- **गुमनाम चिट्ठी पाकर जबलपुर कलेक्टर ने रेस्क्यू टीम भेजी; तपती धूप में बैठी मिली बुजुर्ग**

जबलपुर (नप्र)। जबलपुर में एक व्यक्ति ने अपनी 95 साल की बुजुर्ग मां को तपती धूप में छत पर छोड़ दिया। यह खुलासा एक गुमनाम चिट्ठी से हुआ, जिसे कलेक्टर दीपक कुमार सक्सेना को भेजा गया था।

चिट्ठी में बताया गया कि बुजुर्ग महिला को उसके बेटे ने गर्मी में तिरपाल के नीचे मरने के लिए छोड़ दिया है। यहां बुजुर्ग को खाने-पीने तक के लाले हैं। कलेक्टर ने आधारताल तहसीलदार को जांच के लिए निर्देशित किया।

शनिवार को तहसीलदार जानकी उइके, पटवारी मोंटी साहू और गोहलपुर थाना पुलिस की टीम बताई जगह पर पहुंची और बुजुर्ग को रेस्क्यू किया। छत पर बैठी बुजुर्ग की गंभीर हालत देख तहसीलदार ने तत्काल उसे छत से नीचे ले जाकर सुरक्षित स्थान पर बैठाया। इस दौरान तहसीलदार जानकी उइके ने बुजुर्ग से पूछा- अम्मा कुछ तकलीफ है? इस पर वह कुछ नहीं बोली, चुप ही रही।

गुमनाम चिट्ठी में लिखा- बेटे ने मां को धूप में छोड़ा- गुमनाम पत्र में लिखा था कि त्रिमूर्ति नगर के रहने वाले किराना व्यापारी मेवालाल गुप्ता ने अपनी मां रामरती गुप्ता को छत पर छोड़ दिया है। यहां कड़ी धूप से बचने के लिए महज तिरपाल लगी है।

- **संपत्ति ट्रांसफर नाम कराने के बाद मां को छत पर छोड़ा-** तहसीलदार जानकी उइके की जांच में सामने आया कि महिला ने करीब छह महीने पहले अपनी संपत्ति और घर इकलौते बेटे मेवालाल गुप्ता के नाम कर दिया था। इसके बाद से बेटे ने उसे छत पर छोड़ दिया और परेशान करना शुरू कर दिया। गर्मी के इस मौसम में बुजुर्ग महिला केवल तिरपाल के नीचे धूप और गर्मी से बचने की कोशिश कर रही थी।
- **बेटा बोला- मां को घर में रखने से परेशानी हो रही थी-** महिला के बेटे मेवालाल गुप्ता ने तहसीलदार से कहा कि वह अपनी मां को घर में रखने के कारण परेशानियों का सामना कर रहा था, इसलिए उसे छत पर रखा। हालांकि, तहसीलदार ने मेवालाल को सख्त चेतावनी दी कि अगर फिर से ऐसी कोई शिकायत मिलती है, तो कड़ी कार्रवाई की जाएगी।
- **रेस्क्यू टीम कलेक्टर को सौंपेगी अपनी जांच रिपोर्ट-** तहसीलदार ने महिला की सुरक्षा के लिए उसे छत से नीचे उतारकर एक कमरे में रखवा दिया है। जांच रिपोर्ट तैयार कर ली गई है, जिसे सोमवार को कलेक्टर को सौंपा जाएगा।

कलेक्टर के आदेश पर यह तय किया जाएगा कि बुजुर्ग रामरती को वृद्धा आश्रम भेजा जाएगा या फिर वह अपने घर में ही रहेगी। अगर बुजुर्ग के बेटे के खिलाफ कोई गंभीर आरोप साबित होते हैं, तो उसके खिलाफ एफआईआर भी दर्ज की जा सकती है।

तेज बारिश के साथ गिरे ओले

- **भोपाल में बूंदाबांदी, जबलपुर-छिंदवाड़ा समेत कई जिलों में गिरा पानी, 4 दिन ऐसा ही रहेगा मौसम**

दमोह

भोपाल (नप्र)। मध्यप्रदेश में तेज गर्मी के बीच कहीं-कहीं बारिश का दौर भी जारी है। रविवार को भोपाल में बादल छाए रहे। दोपहर में कई जगह बूंदाबांदी हुई। जबलपुर-छिंदवाड़ा, सागर ओर डिंडौरी में तेज बारिश हुई। विदिशा के गंजबासौदा में आंधी चली। इससे पेड़ एक घर पर गिर गया। दमोह में ओले गिरे। सीनियर मौसम वैज्ञानिक डॉ. दिव्या ई. सुरेंद्रन ने बताया, अगले चार दिन तक प्रदेश के पूर्वी हिस्से यानी, जबलपुर, रीवा और शहडोल संभाग में में हल्की बारिश और गरज-चमक का अनुमान है। कुछ जगहों पर लू भी चल सकती है। वहीं, गर्मी का असर भी देखने को मिलेगा। इंदौर, भोपाल-उज्जैन में पारा 40 डिग्री के पार ही रहेगा।

शनिवार को भी कई जिलों में बारिश हुई- इससे पहले भी प्रदेश में मौसम के दो रंग देखने को मिले। रात में भोपाल, हरदा, देवास, सीहोर, रायसेन और नर्मदापुरम में हल्की बारिश हुई, जबकि कई जिलों में तेज आंधी भी चली। भोपाल में हवा की रफ्तार 50 किमी, सीहोर में 47 किमी और हरदा-पचमढ़ी में 30 किमी प्रतिघंटा रही। वहीं, शनिवार को नर्मदापुरम, बैतूल, हरदा, खंडवा, बुरहानपुर, नरसिंहपुर, दमोह, सागर, कटनी, पन्ना, मैहर, उमरिया, सीधी, शहडोल और रीवा जिलों में हल्की बारिश का दौर रहा।

कई शहरों में रहा तेज गर्मी का असर

प्रदेश में शनिवार को आंधी, बारिश के दौर के बीच कई शहरों में गर्मी के तेवर भी देखने को मिले। ग्वालियर, खजुराहो और नौगांव में पारा 43 डिग्री के पार रहा। मौसम विभाग के अनुसार, खजुराहो सबसे गर्म रहा। यहां तापमान 43.8 डिग्री रहा। ग्वालियर में 43.6 डिग्री और नौगांव में 43 डिग्री दर्ज किया गया।

भोपाल डीईओ ऑफिस के कर्मचारी पर आरोप

शासन को लाखों रुपए की आर्थिक क्षति पहुंचाई; लोक शिक्षण संचालक ने जांच के दिए निर्देश

भोपाल (नप्र)। जिला शिक्षा अधिकारी (डीईओ) कार्यालय में पदस्थ सहायक ग्रेड-3 कर्मचारी सीजे जॉयसन एक बार फिर विवादों में घिर गए हैं। उनके खिलाफ फर्जी दस्तावेजों के जरिए शासन को लाखों रुपए की आर्थिक क्षति पहुंचाने और नियमों के उल्लंघन के आरोप लगे हैं। मामले की शिकायत फिजिकल एजुकेशन फाउंडेशन ऑफ इंडिया, भोपाल चैप्टर ने सीधे स्कूल शिक्षा मंत्री के कार्यालय में की है। शिकायतों को गंभीर मानते हुए लोक शिक्षण संचालनालय ने जांच के निर्देश दिए हैं।

लोक शिक्षण संचालक केके द्विवेदी ने संभागीय संयुक्त संचालक, लोक शिक्षण संभाग भोपाल को आदेश दिया है कि शिकायतों का परीक्षण कर एक तथ्यात्मक और स्पष्ट अभिमत रिपोर्ट जल्द भेजी जाए। हालांकि, मामले में सीजे जॉयसन ने कहा कि फिजिकल एजुकेशन फाउंडेशन ऑफ इंडिया, भोपाल चैप्टर रजिस्टर नहीं है। सभी आरोप गलत हैं। जब कोई शिकायत का लेटर आता है तो संचालक द्वारा उसकी जांच के आदेश दिए जाते हैं। विभाग द्वारा जांच की जा रही है।

शिकायतों में लगाए गए गंभीर आरोप- फिजिकल एजुकेशन फाउंडेशन ऑफ इंडिया द्वारा दिए गए शिकायत पत्र में कई गंभीर बातें सामने आई हैं। आरोप लगाया गया है कि जॉयसन को टाइपिंग परीक्षा पास करने के बाद वेतन वृद्धि दी गई, जबकि उन्हें टाइपिंग का कोई वास्तविक ज्ञान नहीं है। इसके अलावा उन पर कर्मचारियों के साथ अभद्र व्यवहार करने, पुलिस थाने में दर्ज प्रकरणों, नियमों के खिलाफ दो-दो शासकीय भवन लेने, आय से अधिक संपत्ति अर्जित करने और शासन को आर्थिक नुकसान पहुंचाने जैसे गंभीर आरोप भी लगाए गए हैं।

पहले भी विवादों में फंसे

शिकायतकर्ता के अनुसार, सीजे जॉयसन इससे पहले भी विवादों में रह चुके हैं। लगभग 6 साल पहले डीईओ कार्यालय में शराब पार्टी का एक कथित वीडियो सोशल मीडिया पर वायरल हुआ था, जिसमें जॉयसन का नाम सामने आया था।

वीडियो के सामने आने के बाद तत्कालीन स्कूल शिक्षा मंत्री ने जांच के आदेश भी दिए थे। लेकिन उस समय भी किसी तरह की ठोस कार्रवाई नहीं हुई और मामला फाइलों में दबकर रह गया।

भोपाल में रह रहे 3 पाकिस्तानी नागरिकों की पहचान

भारत छोड़ने की आज आखिरी तारीख थी, सीएम बोले- एक-एक को चुन-चुनकर भेजेंगे

भोपाल (नप्र)। जम्मू-कश्मीर के पहलगाम में 22 अप्रैल को पर्यटकों पर हुए आतंकी हमले के बाद पाकिस्तानी नागरिकों का वीजा तत्काल प्रभाव से सस्पेंड कर दिया गया। सरकार ने 23 अप्रैल को जानकारी दी थी कि पाकिस्तानी नागरिकों के 14 कैटेगरी के वीजा रद्द कर दिए गए हैं।

इसमें मेडिकल वीजा को छोड़कर बाकी अन्य 13 कैटेगरी के वीजाधारकों को 27 अप्रैल (रविवार) तक भारत छोड़ने का आदेश था। इसके बाद एमपी में 228 पाकिस्तानी नागरिकों को चिह्नित किया गया था।

भोपाल में रह रहे एक पाकिस्तानी नागरिक के साथ ऐज फैक्टर है। रात तक प्रदेश में रहने वाले ऐसे सभी पाकिस्तानी नागरिकों की स्थिति साफ होगी कि ऐज फैक्टर वालों का क्या किया जाना है। क्योंकि यह फैसला स्थानीय स्तर पर नहीं होना है।

इंदौर में कल से पाकिस्तानियों को भेजने की कार्रवाई

इंदौर के एडिशनल डीसीपी राजेश दंडोतिया का कहना है कि शॉर्ट वीजा पर पाकिस्तान से आए लोगों को भेजने को लेकर अभी कोई कार्रवाई नहीं की गई है। सोमवार से वरिष्ठ अफसरों के मार्गदर्शन में जानकारी जुटाकर कार्रवाई की जाएगी।

पाकिस्तानियों को 29 अप्रैल तक वापस लौटना होगा- दीर्घकालिक (लॉन्ग टर्म) वीजा, राजनयिक वीजा, आधिकारिक वीजा धारक पाकिस्तानी, भारत में वीजा की अवधि तक रह सकते हैं। वहीं, इलाज के लिए मेडिकल वीजा पर भारत में आए पाकिस्तानियों को 29 अप्रैल तक वापस लौटना होगा।

भारत सरकार के इस आदेश का पालन कराने पुलिस भोपाल में रह रहे तीन पाकिस्तानी नागरिकों को नोटिस जारी कर जारी कर चुकी है। शनिवार को मुख्यमंत्री डॉ. मोहन यादव ने पाकिस्तानी नागरिकों को वापस भेजने के निर्देश दिए थे।

सीएम ने केंद्र के दिशा-निर्देशों के पालन के निर्देश दिए

मुख्यमंत्री डॉ. मोहन यादव ने इसको लेकर कहा कि मैंने पुलिस हेडक्वॉर्टर में जाकर समीक्षा की है। भारत सरकार की ओर से दिए गए दिशा-निर्देशों का पालन करने के निर्देश दिए हैं। पाकिस्तान के एक-एक व्यक्ति को चुन-चुनकर उनकी जगह पहुंचाएंगे।

चलती स्कूटी पर अश्लीलता, वीडियो वायरल

चिरायु अस्पताल सड़क का वीडियो, युवक-युवती किस करते दिखे

भोपाल (नप्र)। शहर की सड़क पर अश्लील हरकत करने का एक वीडियो तेजी से वायरल हो रहा है। यह वीडियो बैरागढ़ सड़क का बताया जा रहा है, जहां एक युवक स्कूटी चला रहा था और उसके पीछे बैठा जोड़ा चलती गाड़ी पर ही किस कर रहा था। यह घटना एक कार चालक ने अपने मोबाइल कैमरे में कैद कर ली और सोशल मीडिया पर वायरल कर दी। वीडियो करीब 45 सेकेंड का है, जिसमें स्पष्ट तौर पर देखा जा सकता है कि किस तरह सार्वजनिक सड़क पर युवक-युवती नियमों और सामाजिक मर्यादाओं की अनदेखी करते हुए अश्लीलता पर उतर आए। बैरागढ़ थाना प्रभारी अशोक गौतम ने बताया कि वायरल वीडियो चिरायु अस्पताल के आगे के क्षेत्र का प्रतीत हो रहा है। हालांकि, यह वीडियो कब का है इसकी पुष्टि अभी नहीं हो पाई है।

संपादकीय

यह दबंगई अस्वीकार्य है...

मध्यप्रदेश में सत्तारूढ़ भारतीय जनता पार्टी अपने ही नेताओं की दबंगई और अनुशासनहीनता से परेशान है। खास बात यह है इसमें स्थानीय नेता ही नहीं, जनप्रतिनिधि भी शामिल है, जिनकी पहली जवाबदेही जनता के प्रति है। हाल में पार्टी आला कमान ने पार्टी लाइन बयानबाजी करने वाले ऐसे दो विधायकों को भोपाल बुलाकर जवाब तलब किया तो सतना के एक पूर्व जिलाध्यक्ष को महिला से छेड़छाड़ के आरोप में पार्टी से निकाल दिया। हालांकि पार्टी नेतृत्व के इस सख्त रूख का बेलगाम नेताओं पर कितना असर होगा, कहना मुश्किल है। लेकिन इतना तय है कि नेताओं का यह व्यवहार पार्टी को खलने लगा है। साथ ही जनता में इसका गलत संदेश जा रहा है। पार्टी की छवि खराब हो रही है। उल्लेखनीय है कि प्रदेश भाजपा आलाकमान ने अपने दो विधायकों को भोपाल बुलाकर उनकी जमकर क्लास ली। भाजपा ने पार्टी की छवि खराब करने के मामले में बीते शनिवार अपने दो विधायक प्रदीप पटेल और प्रीतम लोधी के साथ ही देवास की महापौर गीता अग्रवाल, सागर की महापौर संगीता सुशील तिवारी और बीना नगर पालिका अध्यक्ष लता सकवार को पार्टी के प्रदेश मुख्यालय में तलब किया था। इनमें से केवल मऊगंज विधायक प्रदीप पटेल और बीना नगर पालिका अध्यक्ष लता सकवार भोपाल पहुंचे। लेकिन बुलाने के बाद भी विधायक प्रीतम लोधी और देवास महापौर गीता अग्रवाल नहीं आई। इनसे भाजपा प्रदेश अध्यक्ष वीडी शर्मा और सीएम डॉ. मोहन यादव ने बात की। जबकि विधायक प्रदीप पटेल को सफाई देने के बाद भी नोटिस दिए जाने की संभावना है। सागर महापौर लता सकवार को भाजपा ने नोटिस थमा दिया है। सागर महापौर संगीता तिवारी पर आरोप है कि उन्होंने पिछले दिनों महापौर परिषद (मेयर इन काउंसिल) में पिछले दिनों बदलाव किया। इसके लिए उन्होंने भाजपा संगठन से राय नहीं ली। उन्होंने अपने स्तर पर कुछ पार्षदों को एमआईसी से हटाकर नए पार्षदों को मौका दिया है। इसी संदर्भ में प्रदेशाध्यक्ष वी.डी. शर्मा ने कहा कि भाजपा एक अनुशासित पार्टी है। इसमें किसी किस्म की अनुशासनहीनता बर्दाश्त नहीं की जाएगी। सभी से कहा गया है कि वो पार्टी लाइन के दायरे में काम करें। अनर्गल बयानबाजी से इतर सतना के पूर्व जिलाध्यक्ष पर कोलगांव थाना क्षेत्र की एक महिला ने छेड़छाड़ और अश्लील हरकतों के गंभीरआरोप लगाए थे। इसके बाद पार्टी ने उन्हें निकाल दिया है। करीब एक पखवाड़े पहले इंदौर के भाजपा विधायक गोलू शुक्ला के बेटे रुद्राक्ष शुक्ला ने दबंगई दिखाते हुए देवास की चामुंडा देवी के मंदिर पुजारी से आधी रात को खुलवाए और मना करने पर पुजारियों से हाथापाई की। इसकी व्यापक प्रतिक्रिया हुई और रूद्राक्ष को पुजारियों से सार्वजनिक रूप से माफी मांगनी पड़ी। हालांकि उस माफी में भी पश्चाताप का भाव नहीं था। मप्र में भाजपा नेताओं और उनके रिश्तेदारों द्वारा प्रशासन और पुलिस के साथ बदतमीजी और आम जनता के साथ दबंगई कोई नई बात नहीं है। सत्ता का मद उन्हें ऐसा करने को प्रेरित करता है। ऐसे नेताओं और उनकी बिगड़ैल औलादों को लगता है कि सत्ता में होने के चलते वो कुछ भी कर सकते हैं। उन्हें कोई कुछ नहीं कह सकता। तीन साल पर इंदौर के विधायक और वर्तमान मंत्री आकाश विजयवर्गीय पर नगर निगम के अधिकारी की क्रिकेट बैट से पिटाई का वीडियो खूब वायरल हुआ था, जिसके बाद आकाश का विस चुनाव का टिकट कट गया था। नेताओं की दबंगई के कुछ और प्रकरण भी सामने आए थे। अब कुछ मामलो ने पार्टी ने संज्ञान लेकर कार्रवाई की है। ऐसी अनुशासनात्मक कार्रवाई तुरंत ही की जानी चाहिए ताकि आज जनता में सरकार और पार्टी को लेकर एक सकारात्मक संदेश जाए।

नजरिया

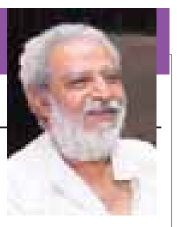

रघु ठाकुर

लेखक समाजवादी चिंतक हैं।

नशे के विरुद्ध जनचेतना की आवश्यकता

देश में नशा एक ऐसी गंभीर बीमारी बन गई है जो समाज के बड़े हिस्सों को बुरी तरह प्रभावित कर रहा है। पिछले दिनों मप्र में वैसे तो अनेकों दुर्घटनायें हुई है जिनमें नशा कारण है। विश्वविद्यालय और मेडिकल कॉलेजों में पढ़ने वाले युवा देर रात को जन्मदिन मनाने जश्न मनाने या पार्टियां करने के लिये शहर के बाहर हाईवे पर, होटलों, ढाबों पर जाते हैं। वहां खानपान कर घर लौटते हैं तो नशे में चूर होकर दुर्घटनाओं के शिकार होते हैं, ऐसी घटनायें आये दिन पढ़ने और सुनने को मिलती हैं। इन घटनाओं का जिक्र मीडिया में कहीं आंचलिक पेज पर थोड़ा बहुत होता है और फिर शांति हो जाती है, परंतु पिछले दिनों में ऐसी दुर्घटनाएं हुई हैं जो मीडिया के प्रथम पृष्ठ पर प्रकाशित हुई। एक मप्र कांग्रेस अध्यक्ष की गाड़ी को ट्रक ने टक्कर मारी और दूसरी भाजपा के प्रदेश अध्यक्ष के काफिले की गाड़ी को एक ट्रक ने कट मारा और उनके सुरक्षाकर्मियों द्वारा पुलिस को इसकी सूचना देने पर पुलिस ने बेरिकेटिंग लगाकर ट्रक को रोकने का प्रयास किया परंतु ट्रक 148 किमी तक 6 पुलिस थानों के 8 पुलिस वाहनों को रौंदकर दौड़ता रहा। भोपाल से राजगढ़ तक पुलिस उसका पीछा करती रही और ट्रक चालक ने ट्रक को रोकने वाले पुलिस हवलदार को कुचलने का प्रयास किया। 148 किमी के बाद ट्रक चालक को गिरफ्तार किया गया और उसका साथी जो इस ड्राइवर का सहभागी था वह भाग गया उसे पुलिस गिरफ्तार भी नहीं कर पाई।

ये दोनों घटनायें चूंकि दो बड़े दलों के अध्यक्षों के साथ हुई थी इसलिये इन्हें मीडिया ने अखबारों में प्रमुखता से स्थान दिया। मैं इन दोनों घटनाओं का जिक्र इसलिये कर रहा हूँ कि नशे की पहुंच कितनी दूर तक हो गई है। जो ड्राइवर पकड़ा गया है वह नशे में धुत था और नशे का प्रसार मप्र से लेकर देश तक एक गंभीर रूप धारण कर रहा है।

30 जनवरी को राष्ट्रपिता महात्मा गांधी की पुण्यतिथि थी और महात्मा गांधी नशाबंदी के प्रबल समर्थक थे। उन्होंने तो 19वीं सदी में नशा मुक्ति का अभियान चलाया था और अपने देश के प्रवास (दौरे) में सभाओं के माध्यम से भी समाज को नशे के दुष्प्रभाव और खतरों से सावधान करने का काम किया था। हालांकि उस समय देश में दो-तीन प्रकार के नशे थे जिनमें शराब प्रमुख थी, अफीम-गांजा आदि सीमित था। देश का मध्यम वर्ग आमतौर पर आजादी के आंदोलन से और महात्मा गांधी से बहुत गहराई से प्रभावित था और इसलिये शराब बंदी के नशे की समस्या भी एक आर्थिक रूप से कमजोर या अशिक्षित समाज में ज्यादा थी। बापू ने शराब से महिलाओं और बच्चों के ऊपर जो दुष्प्रभाव पड़ता था, उन्हें जो अपमान-पीड़ा सहना पड़ती थी, उसे गहराई से समझा था। किस प्रकार महिलायें, बच्चे इससे प्रभावित होते हैं इसको समझकर इसके खिलाफ लोगों को विशेषतौर पर प्रेरित किया था।

सारे देश में महिलाओं ने शराब की दुकानों के सामने धरना दिया था। शराब के खिलाफ नारे लगाए थे और शराब समर्थक गुंडे की लाठियां भी खाई थीं। स्व. जवाहरलाल नेहरू की पत्नी और श्रीमती इंदिरा गांधी की मां श्रीमती कमला नेहरू ने भी इलाहाबाद में शराब की दुकानों पर धरना दिया और उस समय की पुलिस की लाठियां भी खाई थीं। परंतु अब तो शराब का कारोबार महानगरों से लेकर शहरों, कस्बों, गांव-गांव तक पहुंच चुका है। कोकीन, अफीम, हेरोइन आदि नये-नये नशे और ड्रग्स देश व दुनिया में प्रयोग में आ रहे हैं। लगभग समूचा देश इस नशे की गिरफ्त में जा रहा है। परंतु आजाद देश की सरकारें नशे की सामग्री को आय का जरिया बता रही है। व्यवस्था की ओर से दो तर्क दिये जाते हैं, एक यह कि शराब और नशा आमदनी या सरकारी राजस्व का मुख्य साधन है और दूसरा अगर सरकारी तौर पर नशे की बिक्री बंद होगी तो अवैधानिक और जहरीली शराब आदि बिकेगी। उनका कहने का भाव कुछ ऐसा है कि, नशा आदमी के जीवन को अपरिहार्य है। इन दोनों तर्कों पर विचार करें।

एक तो यह है कि नशा आदमी को एक सुस्त और विक्षिप्त अवस्था में पहुंचाता है, नशे में व्यक्ति किसी भी अपराध को तत्पर हो जाता है। बहुत सारी हिंसा-अपराध की घटनायें नशे के कारण होती हैं। दूसरे नशे का व्यापार एक अनैतिक व्यापार है, सरकार भी कोई अनैतिक व्यापारिक संस्था नहीं हैं बल्कि सरकारों को समाज में नैतिक मूल्यों को स्थापित करने का प्रयास करना चाहिये। राजस्व के लिये अपराध को प्रोत्साहित करने की बजाय अपराध को समाज से और दिमाग से मिटाने का प्रयास करना चाहिये। अगर अपराध को या अनैतिक कामों को राजस्व की अनिवार्यता माना जायेगा तो उसका अंत कहां जाकर होगा? क्या किसी दिन सरकार गैर सांस्कृतिक गतिविधियां,हत्या और डकैती को राजस्व बढ़ाने के लिये प्रयोग करेगी?

तीसरा, अगर अवैधानिक तौर पर नशे की बिक्री होती है या जहरीली शराब बिकती है तो यह शासन और प्रशासन की असफलता है जो अपराधों को नहीं रोक पाती। यह समाज की भी असफलता है कि समाज ने समाज सुधार के कार्यक्रम बंद कर दिये हैं। बल्कि अब तो उल्टा हो रहा है कि, जिन अपराधियों का सामाजिक बहिष्कार होना चाहिये आज सरकार उनके पीछे भाग रही है।

नशे का प्रचार किस दूरी तक पहुंच चुका है और किस प्रकार समाज को नष्ट कर रहा है,आज स्थिति यह है कि गांव-गांव में महिलायें सट्टा लगा रही हैं, गांव के गरीब और स्कूलों के बच्चे तक शराब पी रहे हैं, शराब विक्रेताओं ने एक बच्चा पाउच निकाला है जो 10-20 रुपये की कीमत में मिल जाता है। माता-पिता बच्चों को जो जेब खर्च देते हैं उससे बच्चे शराब खरीदकर पी रहे हैं, उनकी शिक्षा नष्ट हो रही है, और जीवन भी।

महानगरों में सभ्य समाज में शराब का चलन और अन्य प्रकार के नशे का बहुत तेजी से फैलाव हो रहा है। हालात यह है कि बागीचों में, सड़कों के किनारे, रेलवे स्टेशनों पर छोटे-छोटे बच्चे जिनकी संख्या करोड़ों में होगी, भीख मांगते हैं, उस पैसे से शराब या अन्य प्रकार के नशे करते हैं। कुछ सिगरेट ब्रांड बाजार में प्रचलन में है जिनमें नशे की सामग्री होती है। उनमें सामग्री भरी भी जा सकती है। महानगरों में तो दुनिया के गंभीर नशों, हेरोइन आदि की रेव पार्टियां शुरू हुई हैं। नशा गरीब के लिये मौत के समान होता है। एक गरीब अपनी आमदनी का बड़ा हिस्सा शराब या अन्य नशों में बर्बाद कर देता है और फिर वह नशे की हालत में अपनी पत्नी, बच्चों से मारपीट, गालीगलौच करता है। बच्चे भी नशा करना सीख जाते हैं और अब तो सामाजिक मर्यादायें इतनी हद तक टूट रही हैं कि शराब के लिये पैसा नहीं देने पर बेटा अपने माता-पिता की हत्या तक कर रहे हैं। पिता नशे में अपनी बेटियों तक को हवस का शिकार बनाने लगे है। ऐसी घटनायें निरंतर वृद्धि पर हैं। एक नये प्रकार की साहूकारी और शराब बिक्री ग्रामीण अंचलों में शुरू हुई है। शराब विक्रेताओं ने बेरोजगार नौजवानों के लिये जिनके पास मोटरसाइकिलें हैं या उन्हें अपनी ओर से मोटरसाइकिलें देकर गांव-गांव में जाकर शराब बेचने में लगा दिया है। अब शराब की होम डिलीवरी हो रही है और शराब की साहूकारी भी। ये नौजवान गांव-गांव जाकर घरों-घरों में शराब उपलब्ध कराते हैं और बाद में जब गरीब लोग पैसा नहीं चुकाते तो उनकी जमीनें खरीद लेते हैं। यह एक बड़ा साहूकारी का चंगुल है। शराब पीने वाले माफिया के स्थाई शिकार बन रहे हैं। तनख्वाह के दिन शराब माफिया चलकर उनके पास जाता है, उनका वेतन छुड़ा लेता है, इन शराब साहूकारों का ब्याज भी जुआ साहूकारों के समान ही होता है और जिसका रेट 50 से 100 प्रतिशत ब्याज तक होता है। साहूकार आजीवन साहूकार बना रहता है और कर्जदार आजीवन कर्जदार। शराब का एक बड़ा असर राजनीति पर भी हुआ है जिसने समूची राजनीति को भ्रष्ट कर दिया है। जो लोग शराब से राजकीय आय की बात करते हैं,तथ्यों पर पर्दा डालते हैं शराब से प्राप्त राजस्व का 50 प्रतिशत तो कर्मचारियों पर खर्च हो जाता है और शेष में बड़ा हिस्सा राजनैतिक दलों और नेताओं के चंदे में चला जाता है। राजनैतिक दल और राजनेताओं के खर्च अब शराब, उद्योगपति चलाते हैं और राजनीति ही शराब माफियाओं के कब्जे में हो जाती है।

जैसा कि मैंने पहले कहा है कि अब शराब के अलावा भी अनेक प्रकार के नये-नये नशे दुनिया से देश में आये हैं। वर्ष 2023-24 में दिल्ली में 560 किग्रा कोकीन पकड़ी गयी और उसकी आज की कीमत लगभग 7 हजार करोड़ रुपया है। यह तो वह है जो पकड़ी गयी है वरना जो नहीं पकड़ी गई और जो देश में खप गयी उसका अनुमान लगाना कठिन है। मप्र की राजधानी भोपाल में ही पिछले दिनों 907 किग्रा एमडी ड्रग्स (जिसकी बाजार दर 1814 करोड़ है), पकड़ी गई। कुल मिलाकर मप्र में 8000 करोड़ की नशा सामग्री पकड़ी गयी। हालांकि कुछ दिनों से यह चर्चा में रहा और अब लाने वाले, बनाने वाले, अब कहां हैं, कुछ पता नहीं है। समूचे देश में 2014 से 2024 के बीच 54851 करोड़ के मादक पदार्थ नष्ट किये गये। जबकि 2004 से 2014 के बीच 8150 करोड़ के मादक पदार्थ नष्ट किये गये। इन आंकड़ों के दो अर्थ हो सकते हैं, एक तो यह कि 2004 से 2014 के बीच जो मादक पदार्थ जब्त कर नष्ट किये गये थे उनमें 2014 से 2024 के बीच लगभग 7 गुना वृद्धि हुई यानि कि नशे का कारोबार पिछले दस वर्षों में 7 गुना बढ़ा है। दूसरा विश्लेषण यह हो सकता है कि 2014 से 2024 के बीच सरकार ने मादक पदार्थों को जब्त कर नष्ट करने में 8 गुना अधिक सफलता प्राप्त की।

बहरहाल में इस विवाद में पड़ने की बजाय भारत सरकार से अपील करूँगा कि देश में संपूर्ण नशाबंदी लागू करें। समाज से अपील करूंगा कि नशे के खिलाफ जनचेतना तैयार करें। अगर चुनाव में शराब की बोतलें बांटी जायेगी, मतदाता शराब पीकर मदहोश होकर वोट देगा तो मदहोश जनप्रतिनिधि और सत्ता बनेगी। जिससे जनहित को उम्मीद करना बेकार होगा। राजनैतिक दलों से भी हमारी अपील है कि अगर वे सत्ता, शराब की बोतलों, शराब के चंदे से हासिल करेंगे तो यह सत्ता जनता का हित नहीं कर पायेगी।

पहलगाम हमला

संदीप सृजन

लेखक स्तंभकार हैं।

राजनीति का नहीं, रणनीति तय करने का मौका

पहलगाम का बैसरन घाटी, जिसे 'मिनी स्विट्जरलैंड' के नाम से जाना जाता है, एक लोकप्रिय पर्यटन स्थल है। यहाँ हुए हमले की टाइमिंग कई मायनों में महत्वपूर्ण है। सबसे पहले, यह हमला तब हुआ जब अमेरिकी उपराष्ट्रपति जेडी वेंस भारत के दौरे पर थे। दूसरा, यह अमरनाथ यात्रा के शुरू होने से ठीक पहले हुआ, जो कश्मीर में पर्यटन और धार्मिक गतिविधियों का प्रमुख समय होता है। तीसरा, पाकिस्तान के सेना प्रमुख जनरल आसिम मुनीर के हालिया बयान, जिसमें उन्होंने कश्मीर को पाकिस्तान की 'जुगुलर वेन' (जीवन रेखा) बताया था, ने इस हमले को एक सुनियोजित भू-राजनीतिक कदम के रूप में देखने का आधार दिया।

इस हमले का तरीका भी चिंताजनक है। आतंकियों ने पर्यटकों को निशाना बनाया, उनकी धार्मिक पहचान पूछी, और हिंदू नामों वाले लोगों पर गोलियां चलाईं। यह रणनीति न केवल सांप्रदायिक तनाव को भड़काने की कोशिश थी, बल्कि कश्मीर के पर्यटन उद्योग को नुकसान पहुंचाने और भारत की छवि को अंतरराष्ट्रीय स्तर पर धूमिल करने का प्रयास भी था। यह हमला 2000 के छत्तीसिंहपुरा नरसंहार और 2023 में हमास द्वारा इजरायल पर किए गए हमले की याद दिलाता है, जिससे अंतरराष्ट्रीय आतंकी गठजोड़ की आशंका बढ़ी है।

पहलगाम हमले को राजनीतिक चश्मे से देखने की प्रवृत्ति स्वाभाविक है, खासकर तब जब भारत में हर घटना को सत्तारूढ़ और विपक्षी दलों के बीच वोट बैंक की राजनीति से जोड़ा जाता है। कुछ नेताओं ने इस हमले को धार्मिक आधार पर सांप्रदायिक रंग देने की कोशिश की, जबकि अन्य ने सरकार की सुरक्षा नीतियों पर सवाल उठाए। हालांकि, इस दृष्टिकोण से केवल अल्पकालिक राजनीतिक लाभ हो सकता है, लेकिन यह दीर्घकालिक रणनीतिक अवसरों को नजरअंदाज करता है।

यह हमला भारत के लिए एक रणनीतिक अवसर है सुरक्षा तंत्र को मजबूत करने का पहलगाम हमले ने भारत की सुरक्षा व्यवस्था में खामियों को उजागर किया। खुफिया जानकारी की कमी, पर्यटक स्थलों पर अपर्याप्त सुरक्षा, और आतंकियों की घुसपैठ की आसानी ने सवाल उठाए। यह भारत के लिए अपनी खुफिया एजेंसियों, जैसे रॉ और आईबी, को और सशक्त करने का अवसर है। राष्ट्रीय सुरक्षा गार्ड (एनएसजी) और अन्य आतंकवाद-रोधी इकाइयों को पर्यटक स्थलों और संवेदनशील क्षेत्रों में स्थायी रूप से तैनात करने की रणनीति पर विचार किया जा सकता है। इसके अलावा, ड्रोन और सैटेलाइट निगरानी जैसी आधुनिक तकनीकों का उपयोग बढ़ाया जा सकता है।

इस हमले की निंदा अमेरिका, ब्रिटेन, और यहां तक कि तालिबान ने भी की। अमेरिकी राष्ट्रपति डोनाल्ड ट्रंप ने भारत को आतंकवाद के खिलाफ पूर्ण समर्थन का आश्वासन दिया। यह भारत के लिए एक अवसर है कि वह वैश्विक मंच पर पाकिस्तान को आतंकवाद के प्रायोजक के रूप में और अधिक उजागर करे। संयुक्त राष्ट्र और फाइनेंशियल एक्शन टास्क फोर्स (FATF) जैसे मंचों पर भारत अपने कूटनीतिक प्रयासों को तेज कर सकता है। साथ ही, हमास और लश्कर-ए-तैयबा जैसे संगठनों के बीच संभावित गठजोड़ की जांच के लिए अंतरराष्ट्रीय सहयोग बढ़ाया जा सकता है।

भारत ने हमले के तुरंत बाद कड़े कदम उठाए। कैबिनेट कमेटी ऑन सिक्योरिटी (CCS) की बैठक में 65 साल पुरानी सिंधु जल संधि को रद्द करने और अटारी सीमा पोस्ट को बंद करने जैसे फैसले लिए गए। यह भारत की 'पानी की चोट' रणनीति का हिस्सा है, जिसका उद्देश्य पाकिस्तान की अर्थव्यवस्था और कृषि पर दबाव डालना है। इसके अलावा, भारत ने पाकिस्तानी नागरिकों के लिए वीजा सेवाएं रोक दीं, जो एक सांकेतिक कदम है। यह रणनीति पाकिस्तान को आर्थिक और कूटनीतिक रूप से अलग-थलग करने की दिशा में एक बड़ा कदम है।

पहलगाम हमला कश्मीर में हाल के वर्षों में स्थापित शांति और पर्यटन की प्रगति को नुकसान पहुंचाने का प्रयास है। यह भारत के लिए एक अवसर है कि वह कश्मीर में विकास परियोजनाओं, जैसे रेलवे और सड़क नेटवर्क, को और तेज करे। साथ ही, स्थानीय युवाओं को रोजगार और शिक्षा के अवसर प्रदान करके आतंकवाद के प्रति उनकी उदासीनता को और बढ़ाया जा सकता है। कश्मीरियों के बीच भारत के प्रति विश्वास को मजबूत करने के लिए सांस्कृतिक और सामुदायिक कार्यक्रमों को प्रोत्साहित किया जा सकता है।

रक्षा मंत्री राजनाथ सिंह ने आतंकवाद के खिलाफ 'जीरो टॉलरेंस' नीति की बात दोहराई। राष्ट्रीय सुरक्षा सलाहकार अजीत डोभाल की मौजूदगी में हुई उच्च-स्तरीय बैठकों में थल, जल, और वायु सेना के विकल्पों पर चर्चा हुई। यह भारत के लिए सर्जिकल स्ट्राइक या अन्य लक्षित कार्रवाइयों के माध्यम से आतंकी ठिकानों को नष्ट करने का अवसर है। साथ ही, सीमा पर घुसपैठ को रोकने के लिए और सख्त कदम उठाए जा सकते हैं।

रणनीतिक अवसरों का लाभ उठाने के लिए भारत को कई चुनौतियों का सामना करना होगा। पहला, आंतरिक राजनीतिक मतभेद इस प्रक्रिया को जटिल बना सकते हैं। विपक्षी दलों द्वारा हमले को सरकार की विफलता के रूप में चित्रित करना रणनीतिक एकजुटता को कमजोर कर सकता है। दूसरा, अंतरराष्ट्रीय समुदाय से निरंतर समर्थन प्राप्त करना कठिन हो सकता है, खासकर तब जब पाकिस्तान अपने कूटनीतिक प्रयासों को तेज करेगा। तीसरा, कश्मीर में स्थानीय आबादी के बीच विश्वास बनाए रखना एक बड़ी चुनौती है, क्योंकि इस तरह के हमले सांप्रदायिक तनाव को बढ़ा सकते हैं।

पहलगाम आतंकी हमला एक दुखद घटना है, लेकिन इसे केवल राजनीतिक दृष्टिकोण से देखना भारत के दीर्घकालिक हितों को नुकसान पहुंचा सकता है। यह हमला भारत के लिए अपनी सुरक्षा, कूटनीति, और सैन्य रणनीति को और मजबूत करने का अवसर प्रदान करता है। पाकिस्तान को आतंकवाद के लिए जिम्मेदार ठहराते हुए भारत को आर्थिक, कूटनीतिक, और सैन्य दबाव बढ़ाना होगा। साथ ही, कश्मीर में शांति और विकास को प्राथमिकता देकर आतंकवाद के मूल कारणों को संबोधित करना होगा। यह समय है कि भारत इस त्रासदी को एक रणनीतिक अवसर में बदल दे, ताकि भविष्य में ऐसी घटनाओं को रोका जा सके और कश्मीर में स्थायी शांति स्थापित हो सके।

छह लेडी एस्ट्रोनाट्स-ग्यारह मिनट का सफर- ग्यारह सौ सवाल

वक्रोक्ति

विजी श्रीवास्तव

लेखक व्यंग्यकार हैं।

हाल ही में अमरीका की छह महिलाएं पहली-पहली बार ग्यारह मिनिटीय अंतरिक्ष यात्रा कर आईं। लोगों को यह बड़ा अजूबा लगा। ये भारतीय होतीं तो शायद हमें इतना बडे साइज का अजूबा नहीं लगता क्योंकि भारतीय नारी भले ही सशरीर धरती पर रहती हैं, उनके दिमाग ज्यादातर सातवें आस्मान पर रहते हैं। बचपन से ही उनके अंदर उड़ान के लक्षण कूट कूट कर भरे होते हैं। इसलिए उन्हें पापा की परी का दर्जा प्राप्त है। किशोर अवस्था में वे तितली और युवावस्था तक बुल-बुल या कोई और पक्षी कहाने लगती हैं। लेकिन जब से सुना है कि छह विदेशी बालाएं, बिना हो हल्ला ग्यारह मिनट की अंतरिक्ष यात्रा कर आईं, मेरी ऑखों में भारतीय माता-बहनों की अंतरिक्ष यात्रा के सपने तैर रहे हैं। आइये, अपने सपने का ऑखों देखा हाल आपको भी सुना देता हूॅं।

...अंतरिक्ष यात्रा की तैयारी, जाने कब से पूरी हो चुकी है। लास्ट काउंटिंग बार-बार होती है और फिर से दोहराई जाती है। कन्ट्रोल रूम थकान और हताशा से भरा बैठा है। फोन पर फोन किये जा रहे हैं, लेकिन अभी तक किसी एक ने भी आमद नहीं दी है। एक बहनजी ब्यूटीपार्लर में हैं। फेसियल हो गया है किन्तु पैडी क्योर- मैनी क्योर नहीं हो पाया है। वे अत्यंत सिद्धांतवादी हैं। बिना सिंगार किये कॉलोनी के फंक्शन में भी नहीं जातीं। दूसरी बहनजी के यहां आज ही कामवाली को तड़ी मारना था। अब आलू की सब्जी और तीन टाइम की पूरी बनाने में कुछ तो वक्त लगेगा ही। पागल थोड़ी हैं कि लौटते ही किचन में घुस जाएंगे। तीसरी भाभी जी, उनकी सकुशल यात्रा के लिए आयोजित भजन-कीर्तन के कार्यक्रम में उलझ कर रह गईं। लोगों ने उनसे नाचने का आग्रह किया तो इस सुअवसर को ठुकरा नहीं पाईं। चौथी को नये ब्लाउज में बिल्कुल मजा नहीं आ रहा था। यूनिक साड़ी चुनकर लाई थीं। फिर बिना फिटिंग का ब्लाउज कैसे पहन लेतीं। पांचवी की पड़ोसन से तू-तू-मैं-मैं का उत्कर्ष चरण था। उसको आज की आज न सलटाती तो वो पूरे मोहल्ले में अपनी जीत का ढोल पीटती फिरती। छठी की समस्या भी छोटी-मोटी नहीं थी। उन्हें विदाई देने सारा परिवार आ गया था लेकिन जेठ जेठानी जाने कहां अटक गए थे। उनके पैर छुए बिना कहीं जाना यानी गुस्से की हदें, अंतरिक्ष पार चली जाना होता। खैर, मुश्किल से वो शुभ घड़ी आई और हमारी हिन्दुस्तानी एस्ट्रोनॉट्स देवियां किसी तरह लांचिंग स्टेशन तक पहुंच ही गईं। मौजूदा स्टॉफ ने उनसे स्पेस सूट पहनने को कहा तो वे सामूहिक रूप से चिंहुक उठीं- व्हॉट... उनके लिए यह झटका, टेक ऑफ के झटके से भी ज्यादा बड़ा था। एक से कलर और डिजाइन की ड्रेस पहनेंगी क्या हम.....इतने दिनों से शॉपिंग कर रहे थे, मैचिंग ड्रेसेस, ज्यूलरी, मैकप का सामान....हमसे तो न हो पाएगा। बुलाइये अपने इंचार्ज को। ऐसा सूट तो आपकी मिसेज तक न पहनें। क्या मजाक है यह।

वहां उपस्थित वैज्ञानिक ने समझाने की कोशिश की- पर मैडम, आप ग्यारह मिनट के सफर के लिए इतनी ड्रेसेस लाई हीं क्यों जवाब बिल्कुल तार्किक था- आप भूल गए क्या, मिसेस सुनीता विलियम्स कितने दिनों के लिए गई थीं और कितने समय में वापस लौटीं हम लोग भी वेल एजूकेटेड हैं। आगे की सोच रखते हैं। .... ऊपर से ये मास्क लगाकर मुँह दिखाने लायक भी छोड़ेंगे क्या। सैल्फी ले सकते ना रील बना सकते। फिर हम क्या झक मारने जा रहे हैं इंचार्ज आफीसर सिर पकड़ कर बैठा हुआ था। इतनी देर में व्यौम बालाओं को कुछ देर और बतियाने का मौका मिल गया। एक मोहतरमा बोलीं- वहां स्ट्रेटनर ले जाने की जरूरत नहीं। बाल अपने आप स्विंग हो जाते हैं। सुनीता विलिम्यस के वीडियो देखे हैं मैंने। इसलिए हेयर बैन्ड लेकर आई हूं। बातचीत में एक और जुड़ीं- मुझे तो पता था साड़ी ले जाने का कोई मतलब नहीं है। इधर उधर उड़ो तो पल्ला कहीं, चुन्नटें कहीं। साड़ी का पैराशूट बन जाएगा, फिर किसी ने फरमाया- मैंने अपनी खास सहेली को तो बताया ही नहीं, वरना वो भी साथ लटक लेती। कुछ तो यूनिक होना चाहिये न, अपने आप के लिए। एक साहिबा बोलीं- मैं तो इतने ऊपर इसलिए जा रही हूं कि मेरी पड़ोसन मुझसे हमेशा के लिए नीची बन जाएगी। जलनखोर कहीं की। रखले अपनी नीचता पल्लू में बांधकर। ...एक और आजाद ख्याल मैडम बोलीं- यार, बहुत दिनों से अपने आस-पास इतनी घुटन महसूस हो रही थी कि बता नहीं सकती। सोचा खुली हवा में चंद सांसें ले आऊं। एक स्वर उभरा- क्यों जी। बीमा कितने का होगा अपना मुझे बाद में ध्यान आया। मेरे हसबैंड खुद ही एलआईसी एजेंट हैं, अपन सब का एक साथ कर देते। दो किश्तें तो वो अपनी जेब से ही भर देते। एक ननद विरोधी भाभी बोलीं- यार गल्ती हो गई। अपनी कुतिया ननद को ले आती तो वहीं छोड़कर आ जाती। नीचे आकर बोल देती- भग गई होगी, किसी ऐलियन के साथ। मुझे क्या पता। एक और बहनजी बोलीं- यार विंडो सीट पे तो मुझे ही बैठने देना। बहुत उल्टी आती है मुझे सफर में। वे शायद अब तक प्लेन में भी नहीं बैठी होंगी ग्यारह मिनिट की फलाइट, ग्यारह घंटे लेट हो चुकी थी। लेकिन मोबाइल ले जाने की छूट देने पर जैसे-तैसे रवाना हो पाई तो कन्ट्रोलिंग स्टॉफ गहरी सांसे ले रहा था। उधर स्पेसशिप के पास से गुजरती एक उड़न तश्तरी के सैंसर ने शोरदार संकेतों को पकड़ कर डिकोड किया तो ''धे सेल्फी-धे सेल्फी, इधर से रील-उधर से रील।... ये तूने कहां से ली.. मेरे पास भी ऐसी ही है..;हम भी लेंगे। ...अरे देख मैंने कहा था न कि वेट लॉस हो जाएगा। मुझे तो लग रहा है कि जीरो फिगर हो गया मेरा।'' उनका ऑडियो कन्ट्रोल सिस्टम कोलाप्स होने लगा। ऐलीयन हैरान थे। उन्होंने इन्सानों का बुद्धीजीवी होना सुना था पर ब्यूटीजीवी होना साक्षात पाया। घबराए ऐलीयन्स ने अपनी उड़न तश्तरी को रिवर्स में डाला और स्पीड बढ़ाकर, अपनी गैलेक्सी की ओर भाग निकले।

स्वामी, सुबह सवेरे मीडिया एल.एल.पी. के लिए प्रकाशक एवं मुद्रक उमेश त्रिवेदी द्वारा श्री सिद्धीविनायक प्रिंटर्स, प्लॉट नं. 26-बी, देशबंधु परिसर, प्रेस कॉम्पलेक्स, जोन-1, एम.पी.नगर, भोपाल, म.प्र. से मुद्रित एवं डी-100/46, शिवाजी नगर भोपाल से प्रकाशित।

प्रधान संपादक
उमेश त्रिवेदी
कार्यकारी प्रधान संपादक
अजय बोकिल
संपादक (मध्यप्रदेश)
विनोद तिवारी
वरिष्ठ संपादक
पंकज शुक्ला
प्रबंध संपादक
अरुण पटेल
(सभी विवादों का न्याय क्षेत्र भोपाल रहेगा)
RNI No. MPHIN/ 2003/ 10923,
Ph. No. 0755-2422692, 4059111
Email- subahsaverenews@gmail.com

'सुबह सवेरे' में प्रकाशित विचार लेखकों के निजी मत हैं। इनसे समाचार पत्र का सहमत होना आवश्यक नहीं है।

व्यंग्य

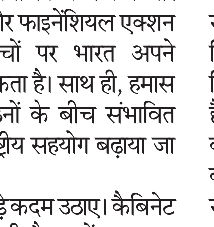

ललित उपमन्यु

वरिष्ठ पत्रकार, लेखक

कुर्ता, कुत्ता, कैंची और कत्ल

भैयाजी की तोंद इतनी अराजक हो गई थी कि वे जहां भी घुसते, तोंद उनसे एक कदम पहले ही घुस जाती। तोंद क्या उनके 'समाजसेवी शरीर' का हर हिस्सा पृथ्वी को किस्तों में हड़पता जा रहा था। वे जहां खड़े होते, 'वन बीएचके' के बराबर जगह घेर लेते। वे चाहते थे जो फैल रहा है, वो छुपा रहे। इसके लिए उन्हें मजबूत कुर्ते-पैजामों की दरकार थी। अभी तक जिसके दिए कुर्ते- पैजामों पर वे जीवन यापन कर रहे थे, वो कमबख्त दूसरे खेमे में चला गया था। इस पाठ से भैयाजी को यह शिक्षा मिली कि- अनुयायी को 'पहले इस्तेमाल करो-फिर विश्वास करो।' भैयाजी कम से कम 'दिन में' तो अंग प्रदर्शन के सख्त खिलाफ थे। खुद के 'अनावृत' होने का खतरा देख उन्होंने अनुयायियों के सामने आजकल के कपड़ों की कमजोर किस्म और टेक्सटाइल इंडस्ट्री के पतन पर 'उल्लेखनीय व्याख्यान' दिया, जिसका लब्बोलुआब यह था कि तनिक दो-चार जोड़ी कुर्ता-पैजामे और चप्पलों का इंतजाम करें।

समाज सेवा में लीन भैयाजी के पास इतना वक्त नहीं होता था कि वे खुद कुर्ते-पैजामे-चप्पलें खरीद सकें। उनका स्पष्ट मत था कि मैं 'घर-गृहस्थी' के कामों में लग गया तो समाज के अंतिम व्यक्ति तक पहुंचने में विलंब हो जाएगा। इतना जरूर है कि 'मानव श्रम' का सम्मान करते हुए वे कुर्ते-पैजामें में हाथ-पैर वे खुद ही घुसा लेते थे। सहायक नहीं रखा था। समाज शास्त्र के साथ- साथ उनका अर्थशास्त्र पर भी गहन अध्ययन था। वे कहते थे बंदरों को केला खिलाना समाज सेवा नहीं है। उन पर निवेश मूर्खता है। बंदर क्या जाने चंदे का स्वाद। निवेश वहां करें, जहां से रिटर्न मिले। कुर्ते-पैजामे मांगने का मतलब अनुयायियों में 'कमाने-खाने' की ललक पैदा करना। किसी को कमाई के लिए प्रोत्साहित करना भी समाज सेवा है। कल दो पहिया मांगूगा । चार पहिया भी लेना है। अनुयायियों ने भैयाजी को 'चारों तरफ से' ढंकने का लक्ष्य लिए एक 'कैंची मास्टर' को भरोसा दिलाया कि ऐसे अवसर 150 साल में एक बार आता है जब भैयाजी किसी के सिले वस्त्र धारण करें। लोग तो नाप लेने फीता लिए पीछे-पीछे घूमते हैं...। दुर्लभ संयोग से प्रभावित हो 'कैंची मास्टर' ने दो जोड़ी कुर्ता-पैजामा तैयार कर खर्च की चिट्ठी भी थैली में डाल दी। ये चिट्ठी उसके जीवन में शामत लेकर आई। शाम होते ही एक दरोगाजी उसकी गुमटी पर जा धमके। पड़ोस के गांव में किसी ने कैंची से कुत्ते का कत्ल कर दिया है। तेरी कैंची जांचना है। मास्टर बोला- हुजूर, घर से निकलकर सरकारी गुसलखाने जाता हूं। वहां से गुमटी आ जाता हूं। कत्ल कब करूंगा। दरोगाजी ने उसे ताजिराते हिंद की तमाम दफाओं का जो हवाला दिया, उसका पवित्र संदेश यह था कि तूने भैयाजी को बिल देकर 'बिल' में हाथ डाल दिया है। 'कैंची मास्टर' गिड़गिड़ा कर बोला- गलती हुई हुजूर। दरोगाजी बोले- जा, माफ किया। अब मेरा नाप ले। तीन जोड़ी सिलना। सिल्क वाले। इस घटनाक्रम के बाद चप्पल वाले को 'सूत्रों' से स्वतः यह ज्ञात हो गया कि कत्ल से पहले कातिल ने कुत्ते को खूब चप्पलें मारीं थीं। वो चप्पलें उसकी ही दुकान की होंगी। उसने भैयाजी को संदेशा भिजवाया- दो जोड़ी बेस्ट चप्पलें आपकी सेवा में तैयार हैं। पईसा-वईसा देने की तकलीफ न करें। भैयाजी की सेवा कर उसने दरोगा से तीन जोड़ी चप्पलें बचा लीं। यह होता है निवेश। भैयाजी यही तो समझाते हैं।

न्याय और कानून

विनय झैलावत

(पूर्व असिस्टेंट सॉलिसिटर जनरल एवं वरिष्ठ अधिवक्ता)

न्यायाधीश का तबादला न्यायिक दखल का मामला नहीं

उच्च न्यायालय के न्यायाधीश के कार्यकाल की सुरक्षा न्यायपालिका की स्वतंत्रता का हिस्सा है। क्योंकि, वह राज्य का अंग है। इसलिए सर्वोच्च न्यायालय के रिट क्षेत्राधिकार का हवाला देते हुए विवादित कार्रवाई के विरुद्ध कार्यवाही करना वस्तुत: कार्यकाल पर प्रश्न उठाने के अलावा और कुछ नहीं है। इसके बारे में संसद के दोनों सदनों में कार्यवाही निर्णायक बनी हुई है। लेकिन, हमारे संज्ञान में ऐसा कुछ भी नहीं लाया गया, जिससे न्यायोचितता आ सके।

इलाहाबाद उच्च न्यायालय ने इसी बुधवार वह जनहित याचिका (पीआईएल) खारिज कर दी, जिसमें जले नोट मिलने के मामले में पूरे देश में चर्चित न्यायमूर्ति यशवंत वर्मा को दिल्ली उच्च न्यायालय से इलाहाबाद उच्च न्यायालय में स्थानांतरित करने को चुनौती दी गई थी। न्यायमूर्ति अताउरहमान मसूरी और न्यायमूर्ति अजय कुमार श्रीवास्तव की पीठ ने कहा कि इस जनहित याचिका में कोई दम नहीं है। न्यायालय ने कहा कि स्थानांतरण, शपथ दिलाना और न्यायाधीश का कामकाज संविधान के अनुच्छेद 124 (4) के साथ अनुच्छेद 217 (1) (बी) के तहत संरक्षित कार्यकाल के सहवर्ती हैं। एक बार जब रिट याचिका में लगाई गई अधिसूचना कानून की नजर में सही साबित हो जाती है, तो सहवर्ती भाग को चुनौती देना भी समान रूप से संरक्षित है, बशर्ते प्रक्रिया का पालन किया जाए। न्यायालय ने कहा कि वह ऐसे मामलों में न्यायिक पक्ष में हस्तक्षेप नहीं कर सकता। पीठ ने कहा कि कानून के तहत उचित प्रक्रिया का पालन करने के बाद लिए गए ऐसे सभी निर्णय (न्यायाधीशों के स्थानांतरण और नियुक्तियों के संबंध में) गैर-न्यायसंगत हैं। क्योंकि, उच्च न्यायालय के न्यायाधीश का कार्यकाल भारत के संविधान के अनुच्छेद 124 (4) के साथ अनुच्छेद 217 (1) (बी) के तहत संरक्षित है। हमें नहीं लगता है कि हमारे सामने बताए गए किसी भी आधार को सही ठहराया जा सकता है, खासकर तब जब इस न्यायालय के समक्ष उठाया गया मुद्दा गैर-न्यायसंगत है। न्यायालय ने कहा कि न्यायाधीश के कार्यकाल की सुरक्षा न्यायपालिका की स्वतंत्रता का हिस्सा है, क्योंकि वह राज्य का अंग है। इसलिए इस न्यायालय के रिट क्षेत्राधिकार का हवाला देते हुए विवादित कार्रवाई के विरूद्ध कार्यवाही करना वस्तुतः कार्यकाल पर प्रश्न उठाने के अलावा और कुछ नहीं है। इसके बारे में संसद के दोनों सदनों में कार्यवाही निर्णायक बनी हुई है। लेकिन, हमारे संज्ञान में ऐसा कुछ भी नहीं लाया गया, जिससे न्यायोचितता आ सके। न्यायालय यह भी जोड़ना चाहता है कि चर्चा का विशेषाधिकार संसद के दोनों सदनों के परिसर के भीतर ही है, उससे बाहर नहीं है।

न्यायमूर्ति वर्मा का इलाहबाद उच्च न्यायालय में स्थानांतरण विवादों में घिरा रहा। यह स्थानांतरण उनके दिल्ली स्थित आवास पर एक छोटी सी आग बुझाने के लिए पहुंचे अग्निशमन कर्मियों द्वारा बेहिसाब नकदी बरामद किए जाने के बाद हुआ। भ्रष्टाचार के आरोपों और भारत के मुख्य न्यायाधीश न्यायमूर्ति संजीव खन्ना द्वारा मामले की आंतरिक जांच के आदेश के बीच, सर्वोच्च न्यायालय कॉलेजियम ने न्यायमूर्ति वर्मा को दिल्ली उच्च न्यायालय से इलाहबाद उच्च न्यायालय (उनकी मूल अदालत) में स्थानांतरित करने का निर्णय लिया। उत्तर प्रदेश के वकीलों ने इस तबादले का कड़ा विरोध किया था। हालांकि, केंद्र सरकार ने आखिरकार कॉलेजियम के प्रस्ताव को मंजूरी दे दी और न्यायमूर्ति वर्मा ने 5 अप्रैल को इलाहबाद उच्च न्यायालय के न्यायाधीश रूप में शपथ ली।

हालांकि, इलाहाबाद उच्च न्यायालय के मुख्य न्यायाधीश को सर्वोच्च न्यायालय द्वारा दिए गए निर्देशों के अनुसार, न्यायमूर्ति वर्मा को फिलहाल कोई न्यायिक कार्य नहीं सौंपा गया है। इन्हीं विवादों के मध्य न्यायमूर्ति वर्मा के तबादले का विरोध करते हुए अधिवक्ता विकास चतुर्वेदी द्वारा उच्च न्यायालय में एक याचिका भी दायर की गई। याचिकाकर्ता ने दावा किया कि न्यायमूर्ति वर्मा के तबादले ने भारत के संविधान का उल्लंघन किया है। हालांकि, न्यायालय ने इसे नहीं माना और अंततः याचिका खारिज कर दी। इसमें कहा गया कि हमें कोई प्रक्रियागत अनियमितता या अवैधता नहीं दिखती है। जिस कार्रवाई पर आपत्ति की जा रही है, वह पीड़ित पक्ष के कहने पर भी कानून की नजर में अस्वीकार्य हो सकती है।

न्यायमूर्ति यशवंत वर्मा के दिल्ली स्थित सरकारी आवास के स्टोर रूम में जली हुई नकदी मिलने का मामला बीते दिनों जबरदस्त सुर्खियों में रहा था। इस मामले में जांच के लिए तीन न्यायाधीशों का एक पैनल बनाया गया था। यह पैनल लगातार कई लोगों से पूछताछ कर रहा है। पैनल ने शुक्रवार को दिल्ली पुलिस के कमिश्नर संजय अरोड़ा और नई दिल्ली जिले के डीसीपी देवेश कुमार महला के भी बयान दर्ज किए हैं। जस्टिस यशवंत वर्मा के आवास से जले हुए नोटों की बोरियां मिलने के बाद जोरदार विवाद पैदा हो गया था। इलाहाबाद उच्च न्यायालय की बार एसोसिएशन ने इस ट्रांसफर का कड़ा विरोधकिया गया। बार का कहना था कि यह भारत की न्यायपालिका का सबसे काला दिन है जब भ्रष्टाचार के

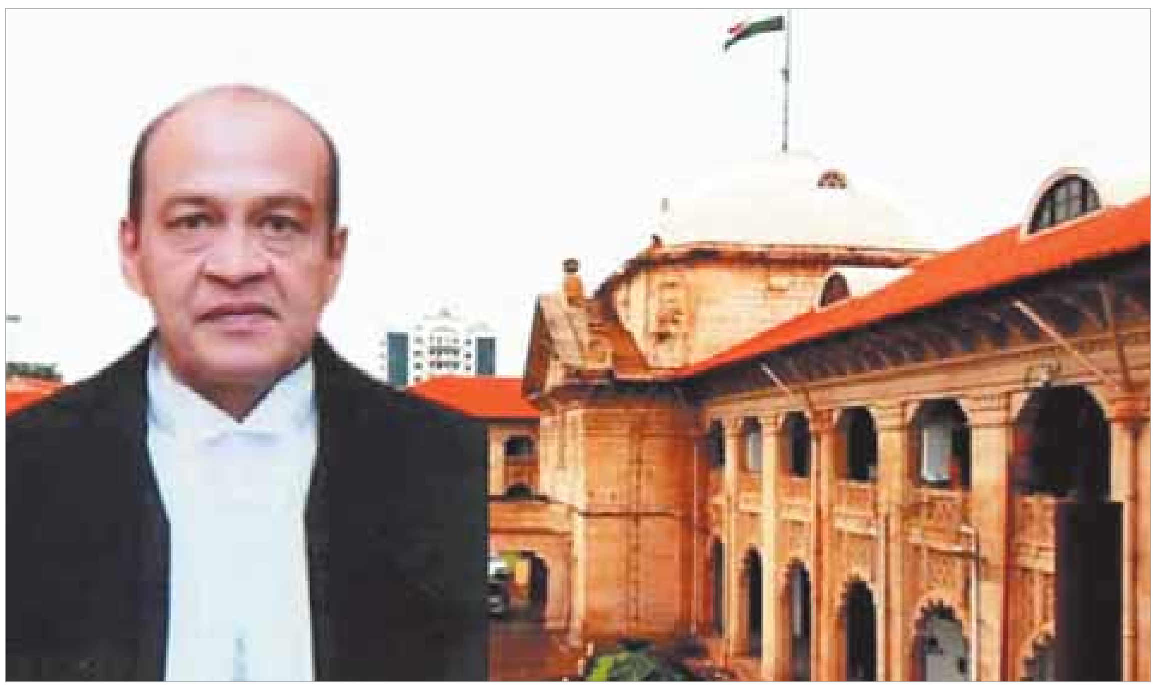

आरोपों का सामना कर रहे एक जज को इलाहबाद उच्च न्यायालय ट्रांसफर कर दिया गया है। जस्टिस वर्मा का ट्रांसफर किए जाने के विरोध में बार एसोसिएशन ने बेमुद्दत हड़ताल की थी। हालांकि, बाद में सीजेआई संजीव खन्ना के आश्वासन के बाद उन्होंने हड़ताल स्थगित कर दी थी। इस बीच, जस्टिस यशवंत वर्मा ने इलाहाबाद उच्च न्यायालय के जज के रूप में शपथ ले ली। हालांकि, जस्टिस वर्मा को तब तक कोई न्यायिक कार्य नहीं सौंपा जाएगा, जब तक उनके खिलाफ चल रही इन हाउस इंक्वारी पूरी नहीं हो जाती। इलाहाबाद उच्च न्यायालय में जस्टिस वर्मा वरिष्ठता के मामले में छठे स्थान पर हैं। दिल्ली उच्च न्यायालय में उनकी वरिष्ठता दूसरी थी। जस्टिस वर्मा को किसी सार्वजनिक कार्यक्रम के बजाए, एक प्राइवेट चैंबर में शपथ दिलाई गई। देखना होगा कि इस मामले में पैनल कब तक अपनी जांच पूरी करता है और जांच का क्या नतीजा निकलता है!

इलाहाबाद उच्च न्यायालय ने कहा कि वह ऐसे मामलों में न्यायिक पक्षका हस्तक्षेप नहीं कर सकती। खंडपीठ ने कहा कि स्थानांतरण, शपथ का प्रशासन और न्यायाधीश का कामकाज भारत के संविधान के अनुच्छेद 217 (1) (बी) के साथ पठित अनुच्छेद 124 (4) के तहत संरक्षित कार्यकाल के सहवर्ती हैं। एक बार जब रिट याचिका में आक्षेपित अधिसूचना कानून की नजर में अच्छी हो जाती है, तो सहवर्ती भाग को चुनौती समान रूप से संरक्षित होती है, बशर्ते प्रक्रिया का पालन किया जाए। पीठ ने कहा कि कानून के तहत उचित प्रक्रिया का पालन करने के बाद लिए गए ऐसे सभी निर्णय (न्यायाधीशों के स्थानांतरण और नियुक्तियों के संबंध में) गैर-न्यायसंगत हैं। उच्च न्यायालय के न्यायाधीश का कार्यकाल भारत के संविधान के अनुच्छेद 124 (4) के साथ अनुच्छेद 217 (1) (बी) के तहत संरक्षित है। हम यह नहीं पाते हैं कि हमारे सामने आग्रह किए गए किसी भी आधार में कोई बल है। विशेष रूप से तब जब इस अदालत के समक्ष उठाया गया मुद्दा गैर-न्यायसंगत है।

न्यायालय ने कहा कि कार्यकाल का संरक्षण राज्य के एक अंग के रूप में न्यायपालिका की स्वतंत्रता का एक हिस्सा है। इसलिए, विवादित कार्रवाई के खिलाफ इस न्यायालय के रिट अधिकार क्षेत्र का आह्वान करना वस्तुतः उस कार्यकाल पर सवाल उठाने के अलावा और कुछ नहीं है। इसके बारे में संसद के दोनों सदनों की कार्यवाही निर्णायक बनी हुई है। लेकिन, न्यायसंगतता को आकर्षित करने वाला कुछ भी हमारे संज्ञान में नहीं लाया गया है। अदालत जल्दबाजी में यह जोड़ सकती है कि चर्चा का विशेषाधिकार संसद के दोनों सदनों के दायरे में है न कि उससे आगे। याचिका में कहा गया कि जब कोई न्यायाधीश शपथ लेता है, तो वह अपने पद के कर्तव्यों का ईमानदारी से पालन करने की शपथ लेता है। याचिकाकर्ता ने कहा कि इसलिए, शपथ लेने के बाद न्यायमूर्ति वर्मा से न्यायिक कार्य रोकने का निर्णय इसकी संवैधानिक पवित्रता को कम करता है। इससे प्रक्रिया केवल औपचारिकता तक कम हो जाती है। यहां देखना दिलचस्प होगा की न्यायमूर्ति वर्मा के मामले में अब किस तरह निराकरण किया जाता है। पूरा देश बारीकी से इस मामले को देख रहा है।

फिल्म के बहाने

संजीव कुमार

लेखक राजनीतिक विश्लेषक हैं।

ब्राह्मणवाद को आईना दिखाने वाले ज्योतिबा 'फुले'

आजादी के सात दशक बाद भी हम एक परिपक्व नागरिक नहीं बन सके हैं। आज भी हमारे देश के लोग, संस्थाएं, नेता एक फिल्म से डर जाते हैं एक लेखक से डर जाते हैं एक पत्रकार से डर जाते हैं यहां तक की एक विद्यार्थी के विचार से भी हम डर जाते हैं। क्या इतना कमजोर और खोखला है हमारा लोकतंत्र? कहीं हम व्यक्ति पूजा के पीछे अपना विवेक तो नहीं खो चुके हैं? ऐसा सचमुच है तो आपको ज्योतिबा की किताब गुलामगिरी जरूर पढ़नी चाहिए और किताब नहीं पढ़ सकते तो कम से कम उनकी आने वाली 'फुले'फिल्म ही देख लीजिए।

इस 25 अप्रैल को भारत के सिनेमाघरों में पहली बार भारत के अपनी लोकप्रिय भाषा में 18वीं सदी के महान समाज सुधारक, और भारत में मजबूत स्त्री शिक्षा का नींव रखने वाले ज्योतिबा फुले जी पर फिल्म प्रदर्शित हुई। यह फ़िल्म 10 अप्रैल को रिलीज होने थी परंतु भारतीय फिल्म प्रमाणन बोर्ड कों इसके कुछ दृश्य भारतीय समाज को ठेस लगने वाले लगे इसलिए उन दृश्यों को हटाकर रिलीज किए जाने कों सेंसर बोर्ड ने इज़ाज़त दी हैं।

इस फिल्म के निर्देशक अनंत महादेवन का कहना है कि सेंसर बोर्ड ने उन दृश्यों को काटने कों कहा है जो कि ज्योतिबा फुले जी के समाज सुधार का सबसे बड़ा अंग है। वह क्या दृश्य होगा ज्योतिबा फुले जी को पढ़ने वाले अच्छी तरह जानते हैं, अब बात यह रह गई कि आखिर उन सब कार्यों को जानने का हक़ क्या समाज को नहीं है जिन कार्यों के लिए ज्योतिबा फुले जी और उनकी पत्नी सावित्री फुले जी ने अपना पूरा जीवन खपा दिया।

भारतीय इतिहास चाहे यह कितना भी छुपाने का को प्रयास करें कि इस देश की संकीर्णता और नाकामयाबी के पीछे जितना हाथ ब्राह्मणवाद, मनुवाद,सामंतवाद का रहा है उतना हाथ विदेशी आक्रमाणकारियों का भी नहीं हैं,वह छुपाया नहीं जा सकता। हम सब जानते हैं जिस दौर में ज्योतिबा गोविन्दराव फुले का जन्म हुआ था उस दौर में महाराष्ट्र,पुणे जातीय संकिर्णता, पाखंडवाद और धर्मांधता से बजबजा रहा थे। आप सब ने जो इतिहास में और सोशल मीडिया पर देखा -पढ़ा होगा कि शुद्रो के गले में थूकने के लिए हांडी बाँधी जाती थी, पैर में निशान मिटाने के लिए झाड़ू बांधे जाते थे, नए वस्त्र पहनना मना था और स्त्री- पुरुष शिक्षा पूर्ण तरह से वर्जित था। खासतौर पर स्त्री शिक्षा का तो कोई प्रावधान भारतीय इतिहास में इसके पहले कभी रहा ही नहीं यह वही दौर था।

11 अप्रैल 1827 में पुणे महाराष्ट्र में जन्म लेने वाले ज्योतिबा गोविंद राव फुले भी एक साधारण व्यक्ति थे। वह भी अपने पिता की तरह फूलों के व्यवसाय से अपना घर परिवार देखने का कार्य करते थे परन्तु जब एक ब्राह्मण भोज में उन्हें अपमान का सामना करना पड़ा तब उनके हृदय कों बहुत गहरी ठेस लगी और यहीं से उन्होंने ब्राह्मणवाद पर विचार करना आरंभ किया। मात्र सातवीं कक्षा तक अध्ययन करने वाले ज्योतिबा फुले जी ने तत्कालीन भारतीय समाज में फैले कुरीतियों से लड़ने और समाधान के लिए तब सत्यशोधक समाज की नींव रखी। यह वही दौर है जब केरल के त्रावणकोर मैं दलित स्त्रियों को स्तन ढकने के लिए भी कर देना पड़ता था, कुछ स्थान पर तो इसका भी जिक्र है कि दलित स्त्रियों को शादी की पहली रात वहां के जमींदार के साथ गुजारनी पड़ती थी। ऐसी परिस्थिति में जन्मे ज्योतिबा फुले जी की मानसिक स्थिति का आप आकलन कर सकते हैं। वर्तमान भारतीय समस्याओं की जड़ तलाशते हुए अंततः ज्योतिबा जी इस अध्ययन पर पहुंचे कि इन सब के पीछे भारतीय समाज का शिक्षा स्तर में बहुत पिछड़ना ही सबसे बड़ा कारण है और इसके लिए उन्होंने स्त्री शिक्षा पर विशेष ध्यान दिया। पर जब स्त्रियों के शिक्षा के लिए उन्होंने विचार किया तो उनके सामने समस्या यह थी कि स्त्रियों को घर जाकर पढ़ाएगा कौन? फिर ज्योतिबा जी ने अपनी पत्नी सावित्री फुले जी को आगे किया, इसके लिए उन्होंने स्वयं पहले अपनी पत्नी को शिक्षित किया फिर उन्हें घर-घर जाकर के स्त्रियों की शिक्षा के लिए प्रोत्साहित किया जिसका कुंठित समाज ने पुरजोर विरोध किया।

आज भारत के वंचित समाज में पाखंड और जातीय भेद भाव से लड़ने का जो साहस हैं, जिनके माध्यम से इन समाज में बौद्धिक विकास हुआ हैं उसके पीछे निश्चय ही फुले द्वारा दिखाया गया ज्योत ही हैं। इस ज्योति का जो महापुंज हैं उनमें डॉ अम्बेडकर जैसे जगत विख्यात विद्वान भी शामिल हैं।जिन महापुराणों का बखान करते हुए सामंतवादियों ने हजारों साल तक दलितों, पिछड़ों का शोषण किया हैं, जिनकी वजह से यह राष्ट्र कभी एक न हो सका, जिनकी वजह से अनगिनत आंक्रताओं का इस देश ने दंश झेला हैं उन पुराणों का ज्योतिबा जी ने बहुत कठोर शब्दों में विरोध किया था।जिसका परिणाम यह हुआ कि भारत में जातीय सड़न्ध पर खुल कर बात होने लगी और इसकी रोटी खाने वाले सिकुड़ने लगे, गटर साफ करने वाले स्वाभिमान कि लड़ाई लड़ने लगे।

आज देश में समानता कि जो बातें हो रही हैं,देश कि महिलाएं शिक्षा हासिल कर देश कि उन्नति में हाथ बटा रही हैं उन सबके लिए राष्ट्र को उनका श्रीणी होना चाहिए।

आचार्य शंकर प्रकटोत्सव

विनय उपाध्याय

वरिष्ठ कला समीक्षक-उद्घोषक

अद्वैत के उजास में जगमग 'एकात्म पर्व'

पुण्य सलिला नर्मदा के तट पर बसा ओंकार द्वीप एक बार फिर आध्यात्मिक लोक के आलोक में जाग रहा है। महादेव ज्योतिर्लिंग के इस पवित्र धाम में साधना और सिद्धि के प्रतीक, भारत की सांस्कृतिक अस्मिता के प्रतीक आदिशंकराचार्य की स्मृति का प्रसंग अपनी आनुष्ठानिक पवित्रता में अद्वैत का एक विराट समागम बन रहा है। ये वही ओंकारधाम है, जहाँ तपश्चर्या में लीन गुरू गोविन्दपाद और सांसारिक रहस्य को जानने की प्रश्नाकुलता से भरे बालक शंकर का महासंयोग घटित हुआ था। अद्वैत वेदांत दर्शन के ध्वजाधारी शंकर ने भारत भूमि को एक नए सांस्कृतिक स्वर्ग में जागने का मंत्र दिया था। वैशाख शुक्ल पंचमी आदिशंकराचार्य के अवतरण का मुहूर्त है। 28 अप्रैल से 2 मई का अंतराल शंकर के एकात्म दर्शन के उजास में जीवन, प्रकृति और संस्कृति को अनेक संदर्भो में देखने तथा संवाद और विचार की नई हिलोर जगाने का उपक्रम बनेगा। इस अवसर पर अपनी प्रबुद्ध उपस्थिति से सार्थकता प्रदान करने संस्कृति, दर्शन, धर्म, साहित्य, शिक्षा, कला और सामाजिक सेवा के विभिन्न प्रकल्पों से जुड़े मनीषी, अध्येता, संत और युवा साधक बड़ी संख्या में एकत्र हो रहे हैं।

म.प्र. शासन संस्कृति विभाग के अंतर्गत स्थापित आचार्य शंकर सांस्कृतिक एकता न्यास के इस प्रतिष्ठा आयोजन का सांस्कृतिक विन्यास गतिविधियों के सुन्दर रूपकों में श्रृंखलाबद्ध बिंधा है। 'एकात्म पर्व' के नाम से परिकल्पित इस पांच दिवसीय समारोह का शुभारंभ 28 अप्रैल को म.प्र. के संस्कृति, पर्यटन तथा धार्मिक न्यास एवं धर्मस्व मंत्री धर्मेन्द्र सिंह लोधी करेंगे। इसी के साथ अद्वैत का संज्ञान लेते वैचारिक, आध्यात्मिक तथा सांस्कृतिक सत्रों का क्रम शुरू होगा।

शंकर प्रकटोत्सव के इस बहुरंगी समागम में आचार्य शंकर विरचित ग्रंथों का पारायण, शंकर संगीत, शंकर स्तोत्रों पर एकाग्र नृत्य की प्रस्तुति के साथ ही अद्वैत वेदान्त तथा आधुनिक विज्ञान तथा रील टू रियलः अवेकनिंग अद्वैत थ्रू स्टोरीटेलिंग जैसे अनूठे विषयों पर सत्र होंगे। आध्यात्मिक संत विभूतियों का वैचारिक-मार्गदर्शक सत्संग होगा। अद्वैत के प्रचार-प्रसार तथा आत्मविस्तार में संलग्न शंकरदूतों का वार्षिक समागम भी इस समारोह को नई आभा प्रदान करेगा। माधवी मधुकर झा, जयतीर्थ मेवुंडी, लोकमाता विद्याशंकर, सुधा रघुरामन और लता सिंह मुंशी जैसी कला की अग्रणी और स्थापित विभूतियाँ अपने गान-नृत्य से परिवेश को नाद स्वर की गुँजार तथा लय-ताल और देह गतियों की मनोहारी झंकार से लालित्य के रस-भाव से सराबोर करेंगी। वैशाख शुक्ल पंचमी आचार्य शंकर की जयंति पर जूना पीठाधीश्वर आचार्य महामण्डलेश्वर स्वामी अवधेशानंद गिरि की वरद उपस्थिति में मुख्यमंत्री डॉ. मोहन यादव का सांस्कृतिक संभाषण होगा। स्वामी परमानन्द गिरि, मिथिलेशनन्दिनी शरण, श्री पूर्ण प्रज्ञा, प्रणव चैतन्य पुरी, गौरांग दास प्रभु, प्रबुद्धानन्द सरस्वती, आत्मप्रियानन्द, चिदानन्द पुरी, प्रणवानन्द सरस्वती, प्रबुद्धानन्द सरस्वती, मुकुल कानिटकर, नीलेश नीलकण्ठ ओक, गौरी महुलिकर, पंकज जोशी, रामनाथ झा, प्रवीण चतुर्वेदी, मत्युंजय गुहा मुजूमदार, विशाल चौरसिया आदि की उपस्थिति इस अनुष्ठान को अभीष्ट उर्जा प्रदान करेगी। इस अवसर का एक और महत्वपूर्ण आयाम होगा- अद्वैत अलंकरण। शंकर एकता न्यास ने अद्वैत वेदांत दर्शन के सनातन प्रवाह को उत्कर्ष प्रदान करने हेतु सन्यास परम्परा तथा अकादमिक जगत का सम्मान करने सम्मान के इस आवश्यक पक्ष को जोड़ा है। इस बार अद्वैत वेदांत के आचार्य स्वामी विदितात्मानंद सरस्वती तथा प्रो. वी. कुटुम्ब शास्त्री को अलंकृत किया जाएगा।

'एकात्म पर्व' के विशाल वितान में हर वर्ष आदिशंकराचार्य की स्मृतियों का जगमग संसार खुलता है। जीव, जगत और जगदीश की एकरूपता में जीवन के गहरे मर्म की सहज व्याख्या करने वाले शंकर को याद करने का यह प्रयोजन तब और भी ज़रूरी हो जाता है जब आतंक, अनाचार तथा अविश्वास की भयभीत कर देने वाली घटनाओं से सारा जगत स्तब्ध है। सद्भाव और आपसदारी में सबके शुभ-कल्याण तथा समृद्धि की कामना करने वाली सनातन परंपरा के पुनर्वास का भगीरथ बनकर ही तो शंकर का अवतार हुआ था। जीवन के आदर्श मूल्यों की प्रतिष्ठा तथा सांस्कृतिक संचेतना का सातत्य ही जगतगुरू के दर्शन और देशना का सत्य है। जीवनदायी नर्मदा के आश्रय में मांधाता पर्वत पर तपस्या में लीन शंकर की चेतना में जीवन के अविचल सच का जो प्रकाश जागा, ज्ञान की उसी प्रकाशमणि को पुनः संचित करने का यह अवसर है।

संकीर्णता के अंधेरों में भटकती मानवता को आदिशंकर ने आत्म ज्योति का सूत्र दिया- ''तुम गढ़े गए इसलिए कि जो आज हो उससे बेहतर बन सको। तुम बनाए गए इसलिए कि तुम वो बनाओ, जो निर्माण का मानक बनें। तुम्हें अंजुरी इसलिए मिली कि सिर्फ़ आचमन भर न करते रहो, कुछ अर्घ्य भी चढ़ाओ! तुम्हें कंठ इसलिए मिला कि सिर्फ़ वंदना भर न करो, कर्म का उद्घोष भी करो।''

दिलचस्प यह कि शंकराचार्य ने अद्वैत के गूढ़ अर्थ को बहुत सहजता में समझने तथा उसे आचरण में उतारने के लिए अनेक स्तरों पर समाज को प्रेरित किया। शब्द, ध्वनि, दृश्य और रूप की विविध छवियों में अद्वैत की ही छाया-माया है। उसे ठीक से परिभाषित और व्याख्यायित नहीं किया गया। यहाँ संतों की वाणी का संदर्भ बहुत ही प्रासंगिक है।

भक्ति, मन के गोमुख से फूटी गंगा है जिसके एक किनारे पर श्रद्धा है तो दूसरा किनारा आनंद की छलकती लहरों से भीगा है। साधक और विराट के बीच एक अद्भुत रसायन है। महत्वपूर्ण पहलू भक्ति की इस यात्रा में संतो के साहित्य का

जुड़ना है जिसके बिना जीवन के आदर्श मूल्यों के सहज पाठ शायद संभव नहीं होते। लेकिन संत साहित्य को केवल किताबी लेखा-जोखा मानकर उसके बेशकीमती सबकों से वंचित रही हमारी बिरादरी को यह जानना भी जरूरी है कि स्वर संगीत की सोहबत में संतों की वाणी युगों के फासले तय करती आज भी कंठ और स्मृति में कायम है। सच तो यही है कि हमारे लोक जीवन की आत्मा यहीं अपना चैन तलाशती है।

मुनि तरूण सागर का कहा याद आता है- संत अध्यात्म के आकाश में इंसानियत के इन्द्रधनुष हैं। सौन्दर्य के सितार पर सद्भाव का संगीत हैं। विकृति के बाजार में संस्कृति का शंखनाद हैं। संत प्यार की पेढ़ी पर परमात्मा की प्रार्थना है। वे सदाचरण के आशीष हैं। जागरण के ताबीज हैं। अविश्वास और अनास्था के अंधेरे में उम्मीद का उजियारा हैं। अर्थहीन आवाजों के बीहड़ में जीवन के मंत्र गाती वाणी हैं। शब्द, रंग, लय, गति और स्वर को साधती ऐसी ही अमृत वाणी का आचमन करते हुए हमारी मनुष्यता ने जीवन के शाश्वत सवालों के समाधान तलाशे हैं।

एक ऐसी ही दीप शिखा की तरह समय के अंधेरों को पूरने का जतन करते हैं संत। वे कहते हैं कि जीवन उत्सव हैं। आनंद है। ऊर्जा का अनंत स्त्रोत है। लेकिन यह उत्सव में तब बदलता है जब आपका अन्तः करण आनंद में हो। अपनी आत्मा में झाँक कर देखें तो बाहर और भीतर का अन्तर मिट जाता है। सारी कायनात एक हो जाती है। समंदर और बूंद का फर्क मिट जाता है। तब कैसा भेदभाव, कैसी ऊँच नीच !! आशय यही कि जीवन उत्सव है और भक्ति के रंगों में उसकी अभिव्यक्ति संभव है।

आचार्य शंकर ने बताया कि भारत में भक्ति के कई रंग हैं। ऋग्वेद से चरण नापती यह यात्रा कई पड़ावों के छूती अनंत पथ पर गतिमान है। सुदूर कोनों को जोड़ता यह सय खुद से खुदी तक और खुदी से खुदा तक पहुँचने का एक सिलसिला बन जाता है। भीतर से एक आवाज उठती है और इंसानियत का दरिया बह निकलता है।

भक्ति और प्रेम में आकंठ डूबी शंकर की आत्मा में हमेशा करूणा का जल बहता रहा। शास्त्र और सिद्धांतों की जटिल गुत्थियों से परे उनकी स्वयंप्रज्ञा ने जीवन को आनंद का उत्सव ही माना। इसे ही परमपद की तरह हासिल किया और शरण में आए भक्तों के जीवन में एक आशीर्वाद की तरह समा गये। उन आशीषों की महक अब भी दिशाओं में तैर रही है।

श्रुति कहती है कि मानव देह, अनंत की यात्रा पर निकली आत्माएँ हैं। तन, उनका साधन एक अस्थाई कुटिया जिसमें कुछ समय ठहर कर, यो साधना करती है और फिर बंजारों की बस्ती की तरह, अपनी बसाहट के निशान छोड़कर आगे बढ़ जाती है। उनकी प्रकृति और जन्म जन्मांतर की यात्रा में उनके संचित तप, अलग-अलग होते हैं। हमारे ही शरीर की तरह सामान्य दिखने वाले शरीर में ऋषि आत्माएँ भी उतरती हैं। हमारी सामान्य दृष्टि, उन्हें सामान्य मनुष्य की तरह देखती है। लेकिन अपनी आध्यात्मिक यात्रा में, वो अपनी तन कुटी छोड़कर आगे बढ़ जाते हैं और उनका जीवन, उनकी वाणी इस दुनिया में ठहर जाते हैं। और फिर इस ठहराव के आसपास अनगिनत आस्थाएँ, सिर झुकाती हैं। जिन्दगी की उलझनें अपने समाधान तलाशती हैं। जीवन के दुःख अपने निवारण ढूंढते हैं।

संत उस शीतल दरिया की तरह ही होते हैं, जो सभी को एक सा आश्रय देते हैं। उसकी न कोई जाति होती है, न कोई धर्म। वह तो भक्ति का साधक होता है। भक्ति, जो भारत की आदिम धरोहर है, जो जीवन की धन्यता के गीत गाती है। चारों दिशाओं में इसका उजियारा फैलता रहा है। हमारे देश में दक्षिण में त्यागराज से लेकर महाराष्ट्र के तुकाराम, उत्तर के कबीर-तुलसी से लेकर राजस्थान के रैदास-मीरा और पंजाब के नानक से लेकर आसाम के शंकर देव तक सैकड़ों संत विभूतियाँ रहीं जिनके संदेशों को आज तक परंपरा के संगीत ने हम तक पहुँचाया है। चलते-फिरते फकीरों और जनपद के गायकों से लेकर भारत की रत्न विभूतियों सुब्बलक्ष्मी, पं. भीमसेन जोशी, जसराज, कुमार गंधर्व, किशोरी आमोणकर, राजन-साजन मिश्र, पुरूषोत्तम दास जलोटा, हरिओम शरण, जगजीत सिंह, शुभा मुद्गल, अनूप जलोटा और आरती अंकलीकर से लेकर जयतीर्थ मेवुंडी और सुधा रघुरामन तक यह परंपरा अपनी व्यापकता में सबको समोती सुकून का पैगाम देती रही है। जब तक जीवन है, मनुष्य है, यह पवित्र पुकार हमारी आत्मा के आसन पर इबादत की तरह महकती रहेगी।

दरअसल यहाँ एक अलग दुनिया का द्वार खुलता है। लगता है कि हमारे जैसे शरीर में ही विद्यमान ऋषि आत्माओं की क्षमताएँ अलग होती हैं। यह कोई चमत्कार नहीं बल्कि हमारे अब तक जाने हुए संसार हमारी नज़र, हमारी सीमाओं से परा की उनकी उपस्थिति है। यह ठीक वैसा ही है, जैसे हमारे सामने कोई दीवार हो तो हम आगे के दृश्य को नहीं देख सकते। किंतु हमारी सतह से ऊँची पर खड़ा व्यक्ति दीवार के उस पार भी देख सकता है क्योंकि उसकी नजर के विस्तार के सामने दीवार नहीं है।

ऋषि आत्माएँ, अपनी इच्छा शक्ति से, समय के पूरे विस्तार में विचार सकती है। वो भूतकाल में प्रवेश कर सकती हैं, वो भविष्य के किवाड़ खोल सकती हैं। शरीर समय या कोई भी भौतिक सीमा उन्हें बांध नहीं सकते किंतु महत्वपूर्ण तथ्य यह है कि ये ऋषि आत्माएँ ईश्वर की वह संतान होती हैं जिन्हें प्रसिद्ध गुजराती संत कवि श्नरसी मेहता ने 'वैष्णव जन' कहा। पराई पीर जिनसे सही नहीं जाती। दूसरों का दुःख देखते ही उनके भीतर विकल करूणा बहती है और उनकी अर्जित शक्तियाँ स्वतः लोक मंगल, लोक कल्याण की दिशा में काम करने लगती हैं। अपनी साधारण समझ और दृष्टि से उन शक्तियों को हम 'चमत्कार' कह बैठते हैं। जबकि वो करूणा से उपजी 'ऋषि इच्छा' का स्वाभाविक, साकार होता है। आदि शंकराचार्य मनुष्यता के माथे पर ऋषि परंपरा का ऐसा ही मंगल तिलक है।

21 हजार रुद्री निर्माण एवं महाशिवपुराण कथा 21 मई से

बैतूल। मां भगवती राजराजेश्वरी ललिताम्बा महारानी और पुण्य सलीला सूर्यपुत्री मां ताप्ती तथा हनुमानजी के दिव्य आशीर्वाद से महा रुद्राभिषेक तथा भक्त श्री शिव महापुराण आयोजन आगामी 21 से 27 मई तक श्री हनुमान मंदिर माता मंदिर (पुलिस लाइन) हाउसिंग बोर्ड कॉलोनी बैतूल गंज में किया जाएगा। श्री शिवमहापुराण का वाचन नर्मदापुरम के पं. रोहित दुबे के मुखारबिंद से होगा। आयोजन में 21 हजार रुद्री निर्माण एवं भव्य पार्थिव रुद्राभिषेक भी किया जाएगा। इसके संबंध में अधिक जानकारी देते हुए यज्ञाचार्य पं. अनुराग मिश्रा ने बताया कि 21 मई को प्रातः 9 बजे कलश यात्रा श्री हनुमान माता मंदिर से निकाली जाएगी। कलश यात्रा गंज होते हुए पुनः श्री हनुमान माता मंदिर पुलिस लाइन हाउसिंग बोर्ड पहुंचेगी। दोपहर 12 बजे भक्तों के मंगल प्रवेश के साथ देवताओं का आह्वान किया जाएगा। श्री मिश्रा ने बताया कि प्रतिदिन दोपहर 3 बजे से शाम 7 बजे तक श्री शिवपुराण कथा कही जाएगी। 27 मई को दिव्य यज्ञ पूर्णाहुति के पश्चात विशाल भंडारा किया जाएगा। आयोजन के संरक्षक श्री हनुमान जी महाराज रहेंगे। श्री मिश्रा ने कहा कि जो भी श्रद्धालु आयोजन में यजमान बनना चाहते हैं वह संपर्क कर सकते हैं। उन्होंने सनातन के इस कार्य में अधिक से अधिक सहयोग करने की सभी धर्मप्रेमी बंधुओं से अपील की है।

देश आतंक के हिसाब की मांग कर रहा है

● अटल सेना ने पाकिस्तान का पुतला फूंका

बैतूल। जम्मू कश्मीर के पहलगाम में हुए आतंकी हमले में निर्दोष पर्यटकों की गोली मारकर की निर्मम हत्या के विरोध में और दिवंगत आत्माओं की शांति के लिए अटल सेना द्वारा गंज चौक पर पाकिस्तान व आतंकवाद का पुतला दहन एवं श्रद्धांजलि कार्यक्रम का आयोजन किया। इस मौके पर संगठन के प्रांत अध्यक्ष राजेन्द्र सिंह चौहान (केंडू बाबा) ने कहा कि पहलगाम में हुए आतंकी हमले ने पुरे देश को झकोर जोर दिया है। निर्दोष पर्यटकों को निशाना बनाना न केवल घिनौना कृत्य है, बल्कि यह मानवता के खिलाफ एक घातक हमला है। उन्होने कहा कि मृतक के परिवारों के प्रति संगठन की गहरी संवेदनाएं और हम घायलों के शीघ्र स्वस्थ होने की कामना करते हैं। पहलगाम हमले पर देश में उबाल और सभी एकजुट होकर आतंक के हिसाब की मांग करता है। इस अवसर पर कृष्णा नामदेव, सेवंती साहू, पिंकी तालमपुरिया, ज्योति राठौर, कीर्ति नामदेव, सुनिता राठौर, सुधा खंडारे, ज्योति गायकी, सीमा बघेल, गीता आवरे, नर्मदा शेषकर, संजु उइके, गीता शेन्द्र, मीना उइके, सुनीता चावरिया, लक्ष्मी खातरकर, लक्ष्मी विश्वकर्मा, भूपेन्द्र नागले, राजेश मदान सहित बड़ी संख्या में संगठन के पदाधिकारी और सदस्य मौजूद थे। सभी ने दिवंगत आत्माओं की शांति के लिए दो मिनट का मौन रखा।

बैतूल जिले में सहकारी क्षेत्र के नवाचार, जन औषधि केंद्रों का संचालन प्रारंभ

बैतूल। सहकारिता क्षेत्र में हो रहे नवाचार के तहत जिले में प्राथमिक कृषि साख सहकारी समितियों के माध्यम से भारत सरकार की सहकार से समृद्धि कार्यक्रम के अंतर्गत प्रधानमंत्री जन औषधि केंद्रों का संचालन प्रारंभ किया गया है। प्रारंभिक चरण में जिले में 6 जन औषधि केंद्र स्थापित किए जाने का निर्णय लिया गया था। वर्तमान में जिले के चिल्कापुर, भैंसदेही तथा भीमपुर में कुल 3 जन औषधि केंद्र सफलतापूर्वक संचालित हो रहे हैं। आने वाले समय में बैतूल, आठनेर और मुलताई में भी जन औषधि केंद्रों का संचालन प्रारंभ किया जाएगा। जन औषधि केंद्रों के माध्यम से जिले के नागरिकों को सस्ती दरों पर गुणवत्तापूर्ण जेनेरिक दवाइयां उपलब्ध कराई जा रही है। बाजार मूल्य की तुलना में यहां एलोपैथिक दवाइयां आधे से भी कम दरों में सुलभ हैं, जिससे आमजन को आर्थिक राहत मिल रही है। जिला प्रशासन के प्रयासों से इन केंद्रों को स्वास्थ्य केंद्रों और अस्पताल परिसरों के आसपास स्थापित किया गया है, ताकि नागरिकों को दवाइयां प्राप्त करने में किसी प्रकार की असुविधा न हो। जिला प्रशासन एवं सहकारिता विभाग ने जिले वासियों से अपील की है कि अधिक से अधिक संख्या में लोग प्रधानमंत्री जन औषधि केंद्रों से दवाइयां खरीदें और इस सुविधा का लाभ उठाएं।

भोपाल भरो आंदोलन स्थगित, जिला मुख्यालय पर ही जारी रहेगा प्रदर्शन

संविदा स्वास्थ्य कर्मचारियों की हड़ताल से प्रभावित हो रही स्वास्थ्य सेवाएं

संजय द्विवेदी, बैतूल। संविदा स्वास्थ्य कर्मचारी 22 अप्रैल से अनिश्चितकालीन हड़ताल पर हैं। इससे मैदानी स्तर पर कई स्वास्थ्य सेवाएं प्रभावित हो रही है। संविदा स्वास्थ्य कर्मचारियों का दावा है कि हड़ताल के कारण प्रदेशभर की स्वास्थ्य व्यवस्थाएं बुरी तरह प्रभावित हो रही हैं। टीकाकरण कार्यक्रम ठप हो गया है, गर्भवती महिलाओं की प्रसव पूर्व जांचें नहीं हो पा रही हैं, एनआरसी और एसएनसीयू के कार्य प्रभावित हैं। एनसीडी के तहत आने वाले मरीजों के बीपी और शुगर की जांच भी नहीं हो पा रही है, जिससे मरीज और वृद्धजन परेशान हो रहे हैं। इसके अलावा मलेरिया जैसी बीमारियों की जांच भी प्रभावित हुई हैं। पूरे प्रदेश में स्वास्थ्य शिविरों और राष्ट्रीय कार्यक्रमों पर भी हड़ताल का व्यापक असर देखा जा रहा है। दरअसल संविदा कर्मचारियों के लिए नई नीति लागू की जा रही है। लेकिन कर्मचारी इसके विरोध में हैं और 22 अप्रैल से हड़ताल पर चले गए हैं। शुरुआत में कर्मचारियों की संख्या कम थी। लेकिन अब मैदानी अमला भी हड़ताल से जुड़ रहा है। इससे सबसे ज्यादा असर ग्रामीण स्वास्थ्य सुविधाओं पर दिखने लगा है। हड़ताल के चलते ग्रामीण क्षेत्रों के स्वास्थ्य केंद्रों पर स्टाफ नर्स की कमी से इलाज, कार्यालय में ऑपरेटरों के हड़ताल पर जाने से शासन को भेजी जाने वाली जानकारी और डाटा एंट्री नहीं हो रही है। संविदा कर्मचारी नई नीति का विरोध कर रहे हैं और 2023 संविदा नीति के अनुसार लाभ देने की मांग कर रहे हैं। साल 2023 में संविदा कर्मचारियों के लिए नई नीति बनी थी। इसमें कर्मचारियों को नियमित कर्मचारियों की तरह समान कार्य-समान वेतन, मेडिकल बीमा, भत्ते, छुट्टी की पात्रता दी गई थी। लेकिन 2025 की नीति में यह सारी सुविधाओं को हटा दिया गया है। इस कारण हड़ताल हो रही है।

हर साल परीक्षा, फेल हुए तो नौकरी से निकालेंगे - संविदा स्वास्थ्य कर्मचारी संघ के जिला अध्यक्ष गोविंद प्रसाद साहू ने बताया कि शासन की नई संविदा नीति में अब संविदा कर्मचारी को हर साल परीक्षा देना होगी। फेल हुए तो नौकरी से निकाल दिया जाएगा। जब नियमित कर्मचारियों के लिए ऐसी व्यवस्था नहीं है तो संविदा कर्मचारियों के लिए क्यों? कई संविदा कर्मचारी वर्षों से नौकरी कर रहे हैं और इस उम्र में नौकरी से निकाले जाने पर कहीं काम नहीं कर सकेंगे। पिछले वर्षों में जिले में कई संविदा कर्मचारियों की मौत हुई। इनके परिवार को न अनुकंपा नौकरी मिली और न अनुग्रह राशि का लाभ दिया गया।

जब तक मांगे पूरी नहीं, जारी रहेगा प्रदर्शन - संविदा स्वास्थ्य कर्मचारी अब आर-पार की लड़ाई के मुंड में नजर आ रहे है। स्वास्थ्य कर्मचारियों का कहना है कि जब तक उनकी मांगे पूरी नहीं होती, वे काम पर नहीं लौटेगे और संविदा स्वास्थ्य कर्मचारियों की हड़ताल लंबी खिंचती है तो इसका असर स्वास्थ्य सेवाओं पर पड़ेगा। डॉ. गोविंद साहू ने बताया कि 28 अप्रैल से भोपाल भरो आंदोलन की तैयारियां की थी, लेकिन परमिशन नहीं मिलने की वजह से अब जिला मुख्यालय पर ही प्रदर्शन जारी रहेगा। संघ पदाधिकारियों ने जानकारी दी कि सरकार द्वारा पूर्व मुख्यमंत्री के घोषणा अनुसार और संविदा नीति 2023 के तहत वादा किया गया लाभ संविदा स्वास्थ्य कर्मचारियों को नहीं दिया गया है। उल्टा उनकी सुविधाओं में कटौती कर दी गई है, जिससे कर्मचारियों में गहरा आक्रोश है।

नियतिम कर्मचारियों पर बढ़ा काम का बोझ- बता दें कि जिला अस्पताल के अलग-अलग विभागों संविदा स्वास्थ्य कर्मचारी पदस्थ हैं। इन कर्मचारियों के हड़ताल पर जाने के कारण जिला अस्पताल सहित अन्य स्वास्थ्य सेवाओं के प्रभावित हो रही है। नियमित कर्मचारियों पर काम का बोझ बढ़ गया है। इधर मरीज भी परेशान है। संविदा स्वास्थ्य कर्मचारियों की हड़ताल के कारण कई प्रमुख जांचे नहीं हो पा रही है। टीकाकरण का काम भी प्रभावित हो रहा है। मरीजों को बीपी और शुगर जैसी जांच कराने के लिए भी यहां-वहां परेशान होना पड़ रहा है। ज्यादा परेशान वृद्धजन हो रहे हैं।

संघ की यह है प्रमुख मांगे - विभाग में रिक्त पदों पर संविलियन किया जाकर नियमित किया जाए। पूर्व से दी जा रही सुविधाओं में ईएल एवं मेडिकल को पृथक कर दिया है, अनुबंध प्रथा को पूरी तरह से समाप्त नहीं किया गया है। अप्रेजल जैसी कुरीति को यथावत रखा गया है। सेवानिवृत्ति की आयु में 65 वर्ष से घटाकर 62 वर्ष किया गया है। एनपीएस, ग्रेच्युटी, स्वास्थ्य बीमा एवं डीए की सुविधा से वंचित रखा गया है। शासन द्वारा समकक्षता (वेतन विसंगति) का निर्धारण गलत तरीके से किया गया है, जिसमें पुनः विचार कर संशोधन किया जाए। निष्कासित सपोर्ट स्टाफ एवं मलेरिया एमपीडब्ल्यू की एनएचएम में वापसी की जाए।

इनका कहना है -

(1) आज सोमवार से भोपाल भरो आंदोलन प्रारंभ किया जाना था, लेकिन परमिशन नहीं मिलने के कारण यह कार्यक्रम स्थगित कर दिया है। अब जिला मुख्यालय पर ही आंदोलन जारी रहेगा। जब तक संविदा स्वास्थ्य कर्मचारियों की पूरी नहीं होती, तब तक आंदोलन करेंगे।

डॉ. गोविंद प्रसाद साहू, जिला अध्यक्ष, संविदा स्वास्थ्य कर्मचारी संघ, बैतूल

(2) जिला अस्पताल में 57 संविदा नर्स स्टाफ है, जिसमें से 3-4 छुट्टी पर है। शेष नर्स और अन्य संविदा स्टाफ हड़ताल है, जिन्हें शासन के निर्देशानुसार काम पर लौटने के लिए नोटिस जारी किया है। स्वास्थ्य सेवाएं प्रभावित न हो, इसके लिए नियमित स्टाफ को लगाया है और उनकी छुट्टियां निरस्त कर दी है।

- डॉ. जगदीश घोरे, सिविल सर्जन, जिला अस्पताल, बैतूल

बादल बाबा एवं भगलीबाई की मूर्ति का हुआ अनावरण

बैतूल। पर्यावरण प्रेमी, निस्वार्थ सेवा के पर्याय बादल बाबा एवं भगलीबाई उइके की मूर्ति स्थापना एवं अनावरण किया गया। बादल बाबा एवं भगलीबाई उइके की मूर्ति की स्थाना दामजीपुरा में की गई। यह मूर्ति प्रख्यात मूर्तिकार डॉ.कीर्ति सिंह द्वारा भोपाल में बनाई गई है। जिनकी ऊंचाई पांच फिट तीन इंच है एक मूर्ति का वजन छ क्विंटल है। दोनों मूर्तियों का कुल वजन 12 क्विंटल है। जब देश आजाद नहीं था, रोड एवं आवागमन के कोई साधन नहीं थे,लोग शिक्षित नहीं थे। ऐसे समय में बैतूल जिले के दामजीपुरा क्षेत्र के ग्राम गोबरबेल में जन्में बादल बाबा जो बारह गांव के भगत भी थे। इन्होंने स्वयं कम पढ़े लिखे होने के बावजूद शिक्षा का प्रचार-प्रसार किया, लोगों को जागृत कर पढ़ाया, लिखाया। कुओं का निर्माण कराया। फलदार, छायादार एवं औषधीय गुणों से भरपूर पेड़ पौधे लगवाए और लोगों को आरोग्य प्रदान करने का कार्य किया। कई सारे विवाह करवाए साथ ही रोजगार भी दिया। इन्हीं सब कारणों से वे पहले बादल उइके फिर बादल भगत और बाद में जन जन के बाबा बादल बाबा बन गए। उन्हीं की स्मृति में उनके कार्यों को विस्तारित करने हेतु उनके दत्तक पुत्र सीएस.उइके द्वारा बाबा एवं उनकी हमसाया रहीं भगलीबाई उइके की मूर्ति स्थापित की गई। कार्यक्रम में मूर्ति स्थापना पश्चात् शुद्धिकरण, अनावरण एवं ग्राम के समस्त देवी देवताओं का आवाहन एवं बड़ादेव गोंगो पूजन, सुमरनी गोंडी धर्माचार्य दादा नन्हेलाल परते द्वारा करवाया गया। सांस्कृतिक कार्यक्रम हुए। जिसमें सिमौरी मंडल द्वारा गदली सुषुन नृत्य, दावनिया-देशली द्वारा प्रस्तुत डंडार नृत्य ने समां बांध दिया साथ ही गोबरबेल की बालिकाओं ने गोंडी नृत्य प्रस्तुत किए। इस अवसर पर शोध बोध संस्थान के पूर्व अध्यक्ष सीएस उइके द्वारा बाबा अम्मा के मूर्तिकार, साहित्य कला विशेषज्ञ डॉ. कीर्ति सिंह ठाकुर पंद्राम को प्रशस्ति पत्र से सम्मानित किया साथ ही कला मर्मज्ञ, साहित्यकार, भाषाविद, इंडिया एवं एशिया बुक रिकॉर्डधारी व वरिष्ठ प्रबंधक एनएचडीसी खंडवा के हरफनमौला समाजसेवी देवेंद्र सिंह सरियाम को अभिनंदन पत्र भेंट कर सम्मानित किया गया। इस अवसर पर प्रदेश और प्रदेश के बाहर से सैंकड़ों लोग उपस्थित हुए। कार्यक्रम को सफल बनाने हेतु सरपंच अनिल कुमार उइके ने आभार माना।

माचना नदी के दईयत बाबा घाट की सफाई कर जल संरक्षण का दिया संदेश

बचाएं जल, संवारे कल की परिकल्पना को साकार करने के लिए किया श्रमदान

बैतूल। कलेक्टर नरेंद्र सूर्यवंशी के निर्देशानुसार जिले में जल गंगा संवर्धन अभियान के तहत विभिन्न गतिविधियां आयोजित की जा रही है। जन अभिनय परिषद की जिला समन्वयक श्रीमती प्रिया चौधरी ने बताया कि बैतूल के सभी विकासखंडों में नदी, तालाब, कुआं, बावड़ी स्वच्छता के लिए जल संगोष्ठी आयोजित की जा रही हैं। इसी तारतम्य में बैतूल नगर में माचना नदी बचाओ अभियान के अंतर्गत माचना नदी के दईयत बाबा घाट पर सफाई कर स्वच्छता और नदी संरक्षण का संदेश दिया गया। इस अभियान में बैतूल नपाध्यक्ष श्रीमती पार्वतीबाई बारस्कर के नेतृत्व में इस अभियान में मध्यप्रदेश जन अभियान परिषद बैतूल की नवांकुर संस्था प्रत्याशा महिला एवं बाल उत्थान समिति, नगर पालिका परिषद बैतूल, मां शारदा सेवा समिति, हार्टफुलनेस ध्यान केंद्र बैतूल, जिला प्रशासन बैतूल के अधिकारी एवं कर्मचारी सहित जन अभियान परिषद के मेंटर्स एवं जिले के अन्य स्वैच्छिक संगठनों ने सक्रिय भागीदारी निभाई। प्रभातपट्टन में विकासखंड समन्वयक श्रीमती राधा बरोदे के मार्गदर्शन में जन अभियान परिषद प्रभातपट्टन की टीम ने बस स्टैंड स्थित बड़े तालाब पर श्रमदान कर घाट की सफाई की। श्रमदान के दौरान तट पर फैले पत्थरों, कचरे, गाजर घास, पॉलीथिन तथा अन्य अपशिष्ट पदार्थों को एकत्र कर स्वच्छता कार्य किया गया। साथ ही ग्राम वासियों को जल संरक्षण तथा जल स्त्रोतों के संरक्षण का संदेश भी दिया गया। तालाब के किनारे स्थित स्वर्गीय श्री रामजी महाजन की प्रतिमा के समीप जल संरक्षण के लिए दीवार लेखन भी किया गया और सभी उपस्थित जनों को जल स्त्रोतों के संरक्षण का संकल्प दिलाया गया।

तालाब की सफाई कर लिया जल संरक्षण की शपथ - विकासखण्ड भीमपूर के ग्राम पंचायत कुण्ड बकाजन में ग्राम विकास प्रस्फुटन समिति एवं नवांकुर संस्था कुण्ड बकाजन द्वारा जल गंगा संवर्धन अभियान के अंतर्गत तालाब की साफ-सफाई की गई। सभी उपस्थित प्रस्फुटन समिति सदस्यों एवं ग्रामीणों ने जल संरक्षण हेतु सतत प्रयास करने और जल गंगा संवर्धन अभियान को सफल बनाने की शपथ ली।

पेयजल शिकायतों के निराकरण के लिए नियंत्रण कक्ष का क्रियान्वयन

बैतूल। कलेक्टर नरेन्द्र कुमार सूर्यवंशी के निर्देशानुसार जिले के ग्रामीण क्षेत्रों में सतत शुद्ध पेयजल आपूर्ति सुनिश्चित करने एवं ग्रामीण क्षेत्रों की पेयजल समस्याओं के संबंध में प्राप्त शिकायतों के त्वरित निराकरण के लिए जिला स्तर नियंत्रण कक्ष का प्रभावी क्रियान्वयन किया जा रहा है। नियंत्रण कक्ष प्रकोष्ठ के प्रभारी मो.अख्तर नईम खान मोबाइल नंबर 9406950010 होंगे एवं नियंत्रण कक्ष में शासकीय सेवक अनुरेखक गणेश मगरदे मो-9407274274, प्रतिदिन सुबह 8 से दोपहर 2 तक तथा सतीश विश्वकर्मा मो-8770339963 प्रतिदिन दोपहर 2 से रात्रि 8 बजे तक उपस्थित रहेंगे। इसके अलावा कमलेश बंजारे मो- 8989516743 अवकाश दिवस में सुबह 8 से दोपहर 2 बजे तक तथा पारुल खातरकर मो- 8109883459 अवकाश दिवस में दोपहर 2 से रात्रि 8 बजे तक उपस्थित रहेंगे। उपरोक्त कर्मचारियों के अवकाश पर रहने पर रिजर्व में सुनील सोलंकी मो- 9755603028 रहेगे। लोक स्वास्थ्य यांत्रिकी के कार्यपालन यंत्री ने बताया कि कार्यालयीन दूरभाष 07141-238320 के अलावा नियंत्रण कक्ष प्रकोष्ठ में ड्यूटी रख स्टाफ के मोबाइल नंबर पर भी पेयजल संबंधी शिकायत दर्ज की जा सकती है।

बैंड हैंडपंपों का हो रहा त्वरित सुधार - उल्लेखनीय है कि कलेक्टर श्री सूर्यवंशी के निर्देशानुसार पीएचई विभाग की टीम द्वारा लगातार ग्रामीण इलाकों में पेयजल व्यवस्था की जा रही है। समस्याग्रस्त ग्रामों में नलकूप खनन का कार्य लगातार जारी है। प्रत्येक जनपद में हैंडपंप संधारण की टीम द्वारा बंद पड़े हैंडपंपों का त्वरित सुधार कार्य किया जा रहा। इसके साथ जल जीवन मिशन से प्रतिदिन नए परिवारों को नल कनेक्शन देकर शुद्ध पेयजल उपलब्ध कराया जा रहा है। क्षेत्र में पेयजल आपूर्ति पर निगरानी रखने के लिए कंट्रोल रूम स्थापित किया गया है।

भाजपा आमला नगर मंडल की कार्यकारिणी घोषित

बैतूल। भाजपा के संभागीय संगठन प्रभारी पंकज जोशी, केन्द्रीय राज्यमंत्री व सांसद दुर्गादास उइके, जिला संगठन प्रभारी सुजीत जैन, जिलाध्यक्ष सुधाकर पंवार, विधायक डॉ. योगेश पंडाग्रे की सहमति से आमला नगर मंडल अध्यक्ष रामकिशोर देशमुख ने आमला मंडल कार्यकारिणी की घोषणा कर दी है। घोषित मंडल समिति में छह उपाध्यक्ष, दो महामंत्री, छह मंत्री एवं एक कोषाध्यक्ष की घोषणा की गई है। आमला नगर मंडल की घोषित मंडल समिति में उपाध्यक्ष हेमंत गुगनानी (आमला), नितीन देशमुख (आमला), गीता ढोलेकर (आमला), शैलेन्द्र राठौर (आमला), गोपेन्द्र सिंह बघेल (आमला), दुष्यंत ढोमने (बोडखी), महामंत्री प्रदीप ठाकुर (आमला), राजेश पंडोले (बोडखी), मंत्री गीता वर्मा (आमला), सपना सोनी (आमला), श्रद्धा मालवीय (बोडखी), प्रेमलता माथनकर (ससुन्द्रा), भददू बोखारे (कनौजिया), भरत पंवार (परसोडी) एवं कोषाध्यक्ष भोलाराम वर्मा (आमला) को बनाया गया है। इसके अलावा संजय जैन, लीलाधर साबले, दिनेश बारस्कर, मुकेश राठौर, लखन यादव,ओमप्रकाश मालवीय, प्रवीण नरवरे, चिरोंजी पटेल, गणेश यादव, भारत यादव, हरि यादव, देवकी हरि यादव, लाजवंती अशोक नागले, दिक्षा सूरजेकर, ओमवती विश्वकर्मा, मुक्ता ढोलेकर, शोभा देशमुख, रिना तोमर, गीता पंडोले, मालती फूलचंद्र मोडक, सीमा बेले, सुरेखा वराठे, ममता धामोडे, भारती झा, कल्पना पुण्डे, अंबिका साबले, देविका कनाठे, मीणावती गढेकर, सुनीता उबनारे, गुणवंतसिंह चडडा, जितेन्द्र बेले, सतीश हारोडे, नरेन्द्र गढेकर, मनोज नारायण रहडवे, रामपाल मोडक, फूलचंद्र मोडक, उमेश गढेकर, राजू मालवीय, भीमराव माथनकर, जोहरी वाडिवा, राजू पंवार, रामचंद्र देशमुख, पर्वतराव देशमुख, अमूना यादव, प्रदीपसिंह चौहान, नितिन खातरकर और नितीन बामने को मंडल कार्यसमिति सदस्य बनाया गया है।

बस ने बाइक सवारों को मारी टक्कर, 2 के पैर कटे, एक गंभीर

हादसे के बाद ड्राइवर बस लेकर हुआ फरार

बैतूल। मुलताई के मासोद में श्मशान घाट के पास अंधे मोड़ पर तेज रफ्तार बस ने सामने से बाइक सवार तीन लोगों को टक्कर मारते हुए दो युवकों को अपनी चपेट में ले लिया। बस बाइक सवारों को करीब 20 फीट तक घसीटती हुई ले गई। हादसे में दो युवकों के पैर कटकर अलग हो गए, वहीं तीसरा युवक भी गंभीर रूप से घायल है। घटना रविवार दोपहर 1 बजे की है। हादसे के बाद बस ड्राइवर फरार हो गया। टेसका गांव निवासी अरुण आहाके (28), चकोरा गांव निवासी कमलेश धुर्वे (29) और ईश्वर सिंह (30) एक बाइक से कोलिया गांव में रिश्तेदार के यहां रहे थे। श्मशान घाट के पास मुलताई की ओर से आ रही बस ने इन्हें टक्कर मार दी। बाइक बस के अगले पहिए में फंस गई थी। चक्के की चपेट में आने से अरुण और कमलेश के पैर कट गए। संयोग से उसी समय नगर पालिका अध्यक्ष वर्षा गडेकर भी मासोद जा रही थीं। रास्ते में हादसा देखकर उन्होंने तत्काल इसकी सूचना थाना प्रभारी देवकरण डेहरिया को दी। थाना प्रभारी ने बिना समय गंवाए पुलिस वाहन से घायलों को अस्पताल पहुंचाया। अरुण और कमलेश को मुलताई के सरकारी अस्पताल भेजा गया, जहां डॉक्टरों ने दोनों की हालत को देखते हुए बैतूल जिला अस्पताल रेफर कर दिया। वहीं ईश्वर सिंह को मासोद के प्राथमिक स्वास्थ्य केंद्र में भर्ती कराया गया है। मुलताई अस्पताल के डॉक्टर पंचम सिंह ने बताया कि अरुण और कमलेश के सीधे पैर पूरी तरह कटकर अलग हो चुके हैं। अत्यधिक खून बहने के चलते उनकी हालत नाजुक बनी हुई है।-

डागा परिवार ने किया सतपुड़ा गुरुकुलम् का उद्घाटन

अब हर विद्यार्थी को मिलेगा आईआईटी-नीट की तैयारी का अवसर

बैतूल। सतपुड़ा गुरुकुलम् का भव्य शुभारंभ रविवार 27 अप्रैल को निलय विनोद डागा और श्रीमती दीपाली निलय डागा के करकमलों द्वारा किया गया। इस अवसर पर करीब 500 नागरिकों की उपस्थिति रही, जिनमें सतपुड़ा स्कूल के प्रबंधक शिवशंकर मालवीय, शिक्षकगण, पालक और विद्यार्थी शामिल थे। उद्घाटन अवसर पर निलय विनोद डागा ने उपस्थित नागरिकों को संबोधित करते कहा कि यह संस्था हमारे परिवार का एक ऐसा सपना है, जिसके माध्यम से हम समाज के सभी वर्गों के विद्यार्थियों को गुणवत्तापूर्ण शिक्षा उपलब्ध कराना चाहते हैं। उन्होंने कहा कि शिक्षा का प्रकाश हर घर तक पहुंचे, यही हमारा लक्ष्य है।

श्रीमती दीपाली निलय डागा ने अपने उद्बोधन में कहा कि डागा परिवार बीते कई वर्षों से जिले में उत्कृष्ट शिक्षा संसाधनों को उपलब्ध कराने हेतु सतत प्रयासरत रहा है। उन्होंने कहा कि इस संसार में सबसे बड़ा पुण्य योग्य विद्यार्थी को शिक्षा देना और भूखे को भोजन कराना है। उन्होंने भावुक होकर कहा कि इसी आदर्श को अपने जीवन का उद्देश्य मानते हुए आज हम सतपुड़ा गुरुकुलम् के रूप में एक नया सपना साकार कर रहे हैं। उन्होंने कहा कि हमारा प्रयास रहेगा कि कोई भी प्रतिभावान विद्यार्थी सिर्फ आर्थिक अभाव के कारण आईआईटी-जेईई और नीट जैसी परीक्षाओं से वंचित न रहे। हमारी संस्था स्कॉलरशिप योजनाओं के माध्यम से विद्यार्थियों को आगे बढ़ने का मार्ग देगी। उन्होंने जिलेवासियों और सतपुड़ा वैली स्कूल परिवार से अपील की कि इस शिक्षा सेवा के पवित्र कार्य में सभी अपना सहयोग प्रदान करें, ताकि मिलकर हम एक उज्जवल भविष्य का निर्माण कर सकें। समारोह में शिक्षा के क्षेत्र से जुड़े कई गणमान्य नागरिकों की उपस्थिति ने कार्यक्रम की गरिमा को और बढ़ा दिया। उद्घाटन के बाद सभी ने गुरुकुलम् का अवलोकन भी किया और इसकी व्यवस्थाओं की सराहना की।

डिजिटल नवाचार के क्षेत्र में नए युग की शुरुआत

टेक्नोलॉजी

डॉ. हितेष वाजपेयी
लेखक- प्रवक्ता भाजपा मध्यप्रदेश हैं

डॉ. मोहन यादव सरकार टेक्नोलॉजी और डिजिटल नवाचार के क्षेत्र में नए युग की शुरुआत करने जा रही है। मुख्यमंत्री डॉ. मोहन यादव के नेतृत्व में प्रदेश को वैश्विक टेक्नोलॉजी हब के रूप में स्थापित करने के उद्देश्य से 'एमपी टेक ग्रोथ कॉन्क्लेव-2025' का शुभारंभ इंदौर के ब्रिलिएंट कन्वेंशन सेंटर में किया गया।

इस ऐतिहासिक अवसर पर मुख्यमंत्री डॉ. मोहन यादव प्रदेश की तकनीकी प्रगति को नई दिशा देने वाली चार महत्वपूर्ण नीतिगत दिशानिर्देशों का विमोचन किया, जो कि निम्नलिखित हैं

ग्लोबल कैपेबिलिटी सेंटर्स (GCC) नीति

- ड्रोन प्रोत्साहन एवं उपयोग नीति
- सेमीकंडक्टर नीति
- एवीजीसी-एक्सआर (एनीमेशन, विजुअल इफेक्ट्स, गेमिंग, कॉमिक्स व एक्सटेंडेड रियलिटी) नीतिइन नीतियों का लक्ष्य प्रदेश में अत्याधुनिक टेक्नोलॉजी, नवाचार, स्टार्टअप्स और निवेश को प्रोत्साहित करना है, ताकि मध्यप्रदेश राष्ट्रीय और अंतरराष्ट्रीय स्तर पर एक सशक्त डिजिटल और टेक्नोलॉजी गंतव्य के रूप में उभर सके।

एमपी टेक ग्रोथ कॉन्क्लेव-2025 प्रदेश के युवाओं, उद्यमियों, निवेशकों और तकनीकी विशेषज्ञों के लिए नए अवसरों के द्वार खोलेगा और मध्यप्रदेश को 'डिजिटल इंडिया' के सपनों के साथ जोड़ने में एक मील का पत्थर साबित होगा।

आइये समझते हैं कि डॉ मोहन यादव के नेतृत्व में इस सन्दर्भ में किस प्रकार मध्य प्रदेश सरकार ने तकनीकी क्षेत्र में निवेश और नवाचार को प्रोत्साहित करने के लिए चार प्रमुख नीतियाँ लागू की हैं-

1. ग्लोबल कैपेबिलिटी सेंटर्स (GCC) नीति 2025

उद्देश्य- राज्य को वैश्विक नवाचार और सहयोग के केंद्र के रूप में स्थापित करना।

प्रमुख विशेषताएँ

- 50 से अधिक GCCs को आकर्षित करने और 37,000 से अधिक प्रत्यक्ष रोजगार सृजित करने का लक्ष्य।
- इंदौर, भोपाल और जबलपुर जैसे टियर-2 शहरों को वैश्विक व्यापार हब के रूप में विकसित करना।
- 40% पूंजीगत सब्सिडी (अधिकतम रू. 30 करोड़), किराया सहायता, और पेरोल सब्सिडी जैसे प्रोत्साहन।
- R&D, अपस्किलिंग, और पेटेंट फाइलिंग के लिए समर्थन।
- 'नो क्वेरी पोर्टल' के माध्यम से सिंगल-विंडो

2. ड्रोन प्रोत्साहन और उपयोग नीति 2025

उद्देश्य- मध्य प्रदेश को ड्रोन निर्माण और तकनीक का प्रमुख केंद्र बनाना।

प्रमुख विशेषताएँ

- 40 प्रतिशत पूंजीगत निवेश सब्सिडी (अधिकतम 30 करोड़)।
- तीन वर्षों के लिए 25 प्रतिशत किराया सहायता (अधिकतम 5 लाख प्रति वर्ष)।
- चिह्नित क्षेत्रों में R&D अनुदान 2 करोड़ तक।
- IISER भोपाल में प्रशिक्षण, निर्माण, और अनुसंधान के लिए उत्कृष्टता केंद्र की स्थापना।
- कृषि, आपदा प्रबंधन, सार्वजनिक सुरक्षा, और बुनियादी ढांचे में ड्रोन तकनीक का उपयोग।

3. सेमीकंडक्टर नीति 2025

उद्देश्य - राज्य को सेमीकंडक्टर डिजाइन और निर्माण का केंद्र बनाना।

प्रमुख विशेषताएँ

- 40% पूंजीगत अनुदान (अधिकतम रू.150 करोड़)।
- 5 वर्षों के लिए 6 प्रतिशत ब्याज सब्सिडी (अधिकतम रू. 10 करोड़)।
- 10 वर्षों के लिए 2 प्रति यूनिट की रियायती बिजली दर।
- रियायती दरों पर भूमि उपलब्धता।
- रू.4 अरब से अधिक के परियोजनाओं के लिए कस्टमाइज्ड प्रोत्साहन पैकेज।

4. एवीजीसी-एक्सआर नीति 2025

उद्देश्य - राज्य को एनीमेशन, विजुअल इफेक्ट्स, गेमिंग, कॉमिक्स और एक्सटेंडेड रियलिटी (AVGC-XR) के क्षेत्र में अग्रणी बनाना।

प्रमुख विशेषताएँ

- 25 प्रतिशत पूंजीगत व्यय सब्सिडी (अधिकतम रू. 30 करोड़)।
- तीन वर्षों के लिए 25 प्रतिशत किराया सहायता (अधिकतम रू. 10 लाख प्रति वर्ष)।
- प्रति कर्मचारी रू. 3,000 प्रति माह की रोजगार सृजन सहायता (एक वर्ष के लिए)।
- आईपी पंजीकरण लागत का 50% सब्सिडी (अधिकतम 20 लाख)।
- तीन वर्षों के लिए बैंडविड्थ लागत की प्रतिपूर्ति (अधिकतम 50,000 प्रति वर्ष)।
- एआर, वीआर, और एआई जैसे क्षेत्रों में उत्कृष्टता केंद्रों की स्थापना।
- अंतर्राष्ट्रीय सह-उत्पादन और साझेदारियों के लिए 30 प्रतिशत व्यय की प्रतिपूर्ति (अधिकतम 2 करोड़)।
- महिला उद्यमिता और छात्रवृत्ति कार्यक्रमों के लिए विशेष समर्थ

इन नीतियों के माध्यम से, डॉ मोहन यादव जी की मध्य प्रदेश सरकार तकनीकी नवाचार, निवेश, और रोजगार सृजन को प्रोत्साहित कर रही है, जिससे राज्य को एक प्रमुख तकनीकी हब के रूप में स्थापित किया जा सके।

भेल के अधिकारी के. विश्वनाथन सेवानिवृत्त

भोपाल। भारत हेवी इलेक्ट्रिकल्स यानी भेल भोपाल को नई तरह की पहचान देने वाले अधिकारी के. विश्वनाथन सेवानिवृत्त हो गए । विशु नाम से विख्यात विश्वनाथन को भेल के अफसरों और साथियों ने विदाई दी। विश्वनाथन ने 28,740 पुस्तकों को सहेज संवार कर भेलकर्मियों को उपलब्ध करने का अनूठा कार्य किया है। उन्होंने भेल परिसर में अध्ययन शील युवाओं को अध्ययन हेतु समुचित सुविधा प्रदायगी जिसके तहत 18 छात्रों ने डॉक्टरेट की उपाधि प्राप्त की। करने में सफल रहे। उन्होंने भेल में प्रगति दीर्घा के अंतर्गत भेल उत्पाद के मॉडल स्थापित किए। इसमें 77 मॉडल एवं मेक-इन-इंडिया के भारी भरकम स्वचलित सिंह का नवीनीकरण कर भेल को नई पहचान दी। तकनीकी छात्रों हेतु विज़िट, व्याख्यान एवं लघुकालीन प्रशिक्षण तथा तदुपरांत रोजगार सहायक सर्टिफिकेट की प्रदायगी करवाई।

गुरूदेव की जयंती पर 'प्रणति पर्व' में गूँजेगा रवीन्द्र संगीत

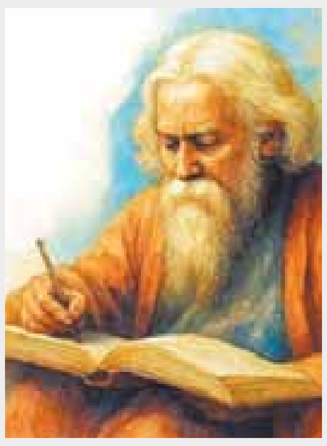

भोपाल। साहित्य और कलाओं में विश्व मानवता का संदेश देने वाले गुरूदेव रबीन्द्रनाथ टैगोर की जयंति पर 'प्रणति पर्व' का आयोजन आरएनटीयू में किया जाएगा। 7 मई को सुबह 11 बजे टैगोर विश्व कला एवम् संस्कृति केन्द्र के संयोजन में इस अवसर पर रवीन्द्र संगीत का वृन्दगान होगा। इस प्रस्तुति का निर्देशन संगीतकार मॉरिस लॉज़रस करेंगे। इस गायन समूह में रेनीवृन्द के कलाकार हिस्सा लेंगे। टैगोर कला केन्द्र के निदेशक विनय उपाध्याय ने बताया कि 'प्रणति पर्व' में गुरूदेव टैगोर के गीतों पर आधारित दृश्य-श्रव्य रूपक 'गीतांजलि' केन्द्रित बहुरंगी पुस्तिका का लोकार्पण भी किया जाएगा। समारोह का आरंभ रबीन्द्रनाथ टैगोर विश्व विद्यालय में स्थापित टैगोर प्रतिमा पर सामूहिक पुष्पांजलि से होगा। उसके उपरांत 'मुक्तधारा' सभागार में सांस्कृतिक प्रस्तुति होगी। कुलाधिपति संतोष चौबे गुरुदेव की सांस्कृतिक विरासत पर संभाषण करेंगे।

पुलिस ने आईपीएल सट्टा खिलाने वालों पर कसा शिकंजा

बैतूलट्ठ सारणी। पुलिस ने अवैध सट्टा गतिविधियों के विरुद्ध प्रभावी कार्रवाई करते हुए तीन अलग-अलग मामलों में आईपीएल सट्टा खिलाने वालों के विरुद्ध कार्यवाही कर आरोपियों को गिरफ्तार किया गया एवं सामग्री जप्त की गई। पुलिस जनसंपर्क अधिकारी से मिली जानकारी के अनुसार 26 अप्रैल को मुखबिर की सूचना के आधार पर ग्राम वाकुड़ में हनुमान मंदिर के पास दबिश दी गई, जहां आरोपी संतोष इवने पिता मकल सिंह इमने उम्र 30 वर्ष को आईपीएल मैच (पंजाब बनाम कोलकाता) में चौके-छक्कों पर दांव लगाकर सट्टा खेलते हुए पकड़ा गया। आरोपी के कब्जे से एक आईक्यू कंपनी का जेड 7 एंड्रॉयड मोबाइल फोन, हिसाब-किताब की पर्ची, एक लीड पेन तथा जेब से 2000 नगद जप्त किए गए। वहीं दूसरे प्रकरण में मोरडोंगरी रोड पर दबिश देकर आरोपी रामभरोसे भोरसे पिता शिवचरण भोरसे (उम्र 28 वर्ष, निवासी ग्राम वाकुड़) को भी सट्टा खेलते पकड़ा गया। सारणी पुलिस ने दिनांक 25 अप्रैल को आजाद नगर पाथाखेड़ा क्षेत्र में दबिश देकर आरोपी सुजल बाबरिया पिता अशोक बाबरिया उम्र 21 वर्ष को आईपीएल मैच (चेन्नई सुपर किंग्स बनाम सनराइजर्स हैदराबाद) में सट्टा लगाते हुए पकड़ा गया। आरोपी के पास से एक रियलमी कंपनी का एंड्रॉयड मोबाइल फोन, हिसाब-किताब की डायरी, एक लीड पेन और 2000 नगद बरामद हुए। आरोपी के विरुद्ध भी धारा 4(क) सट्टा एक्ट के अंतर्गत कार्यवाही की गई। इस कार्रहवाी में थाना प्रभारी निरीक्षक जयपाल इनवाती, उपनिरीक्षक आशीष कुमरे एवं वंशज श्रीवास्तव प्रधान आरक्षक विवेक यादव, श्रीराम उईके, मनोज डेहरिया, आरक्षक रवि मोहन, मोहित, सुभाष मंडलोई की सराहनीय भूमिका रही।

जहर खाने से अधेड़ और एक युवक की उपचार के दौरान मौत

बैतूल। जहर खाने की दो अलग-अलग मामलों में एक अधेड़ और एक युवक की जिला अस्पताल में इलाज के दौरान मौत हो गई। मृतकों में एक हरदा जिले का युवक है, जबकि दूसरा बोरी का रहने वाला है। पुलिस ने दोनों मृतकों के पीएम करवाकर परिजनों को शव सौंप दिये है। पुलिस सूत्रों के मुताबिक बैतूल गंज थाना इलाके के बोरी गांव में 26 वर्षीय युवक शंकर ने शराब के नशे में जहर खा लिया। इसकी जानकारी जैसे ही परिवार वालों को मिली, वे उसे लेकर जिला अस्पताल पहुंचे, जहां उसने इलाज के दौरान दम तोड़ दिया। बताया जा रहा है कि शंकर शराब पीने का आदि था। पुलिस ने मर्ग कायम किया है। उसकी आत्महत्या के कारणों की जांच की जा रही है।

एम्स भोपाल में पांच दिवसीय राष्ट्रीय आपातकालीन जीवन रक्षा प्रशिक्षण कार्यक्रम का सफल समापन

भोपाल। एम्स भोपाल ने कार्यपालक निदेशक प्रो. (डॉ.) अजय सिंह के नेतृत्व में 21 से 25 अप्रैल 2025 तक नेशनल इमरजेंसी लाइफ सपोर्ट कार्यक्रम का सफल आयोजन किया। इस कार्यक्रम का उद्देश्य मध्यप्रदेश में आपातकालीन चिकित्सा सेवाओं को और अधिक मजबूत बनाना था। पाँच दिवसीय यह ट्रेनिंग ऑफ ट्रेनर्स फॉर डॉक्टर्स कार्यक्रम ट्रॉमा एवं इमरजेंसी मेडिसिन विभाग द्वारा, स्वास्थ्य एवं परिवार कल्याण मंत्रालय (आपदा प्रबंधन प्रकोष्ठ), भारत सरकार के सहयोग से आयोजित किया गया। कार्यक्रम का मुख्य फोकस चिकित्सा विशेषज्ञों की आपातकालीन देखभाल क्षमताओं को सशक्त करना और प्रशिक्षकों की एक दक्ष टीम तैयार करना रहा, जो संकट की घड़ी में जीवनरक्षक तकनीकों को प्रभावी ढंग से लागू कर सके। इस प्रशिक्षण में मध्यप्रदेश के विभिन्न मेडिकल कॉलेजों से आए 24 चिकित्सकों ने भाग लिया। कार्यक्रम के समन्वयक डॉ. मोहम्मद यूनुस, विभागाध्यक्ष ट्रॉमा एवं इमरजेंसी मेडिसिन एवं नोडल अधिकारी रहे। स्वास्थ्य एवं परिवार कल्याण मंत्रालय द्वारा डॉ. पारुल मुलिक को कार्यक्रम का प्रेक्षक नामित किया गया था, जबकि डॉ. अजय कुमार ने बाह्य प्रशिक्षक के रूप में प्रतिभागियों के व्यावहारिक कौशल संवर्धन में महत्वपूर्ण भूमिका निभाई। इस अवसर पर प्रो. (डॉ.) अजय सिंह ने कहा, एम्स भोपाल स्वास्थ्य सेवाओं में उत्कृष्टता के नए मानक स्थापित करने के लिए निरंतर प्रयासरत है। एनईएलएस जैसी पहल हमारे चिकित्सा विशेषज्ञों को आपातकालीन परिस्थितियों में दक्षता के साथ कार्य करने के लिए आवश्यक कौशल प्रदान कर रही है, जिससे राज्य में आपातकालीन चिकित्सा सेवाओं को एक नई मजबूती मिल रही है।

एम्स भोपाल में टैगोर भवन के नए स्वागत कक्ष का लोकार्पण

भोपाल। एम्स भोपाल के कार्यपालक निदेशक प्रो. (डॉ.) अजय सिंह के मार्गदर्शन में टैगोर भवन के नव- निर्मित स्वागत कक्ष का लोकार्पण आज, दिनांक 25 अप्रैल 2025 को एम्स भोपाल परिसर में संपन्न हुआ। यह आयोजन प्रो. (डॉ.) अजय सिंह की गरिमामयी उपस्थिति में किया गया। नव विकसित स्वागत कक्ष पूर्णतः वातानुकूलित है और आगंतुकों के लिए प्रतीक्षालय की सुविधा प्रदान करता है। इस अवसर पर प्रो. (डॉ.) अजय सिंह ने कहा~ टैगोर भवन में यह नया स्वागत कक्ष हमारे बुनियादी ढांचे को सुदृढ़ करने और आगंतुकों को एक सहज, सम्मानजनक वातावरण प्रदान करने की दिशा में हमारे निरंतर प्रयासों का परिणाम है। लोकार्पण समारोह में कर्नल (डॉ.) अजीत कुमार, उप निदेशक (प्रशासन), कर्नल चिरंजीव दास, अधीक्षण अभियंता, ट्रांजिट हॉस्टल समिति के सदस्यगण तथा पूरा अभियांत्रिकी विभाग भी उपस्थित रहा, जिन्होंने इस परियोजना को सफलतापूर्वक पूर्ण करने में महत्वपूर्ण योगदान दिया। यह स्वागत कक्ष आगंतुकों की सुविधा को समर्पित एक महत्वपूर्ण प्रयास है जो एम्स भोपाल की स्वच्छता और उत्कृष्ट सेवाओं की प्रतिबद्धता को दर्शाता है।

मुख्यमंत्री डॉ. मोहन यादव एवं भारतीय जनता पार्टी के प्रदेश अध्यक्ष व सांसद श्री विष्णुदत्त शर्मा ने रविवार को ''आईएम बीजेपी फ्यूचर फोर्स'' द्वारा श्यामला हिल्स स्थित राज्य संग्रहालय ऑडिटोरियम में भारत रत्न बाबा साहब डॉ. भीमराव अंबेडकर जी के कृतित्व और व्यक्तित्व पर आधारित ''द अंबेडकर यूथ कॉन्क्लेव'' को संबोधित किया। इस अवसर पर पार्टी के राष्ट्रीय प्रवक्ता श्री गुरू प्रकाश पासवान, प्रदेश महामंत्री व विधायक श्री भगवानदास सबनानी, पार्टी के प्रदेश प्रवक्ता व सांसद श्री महेन्द्र सिंह सोलंकी, कार्यक्रम के संयोजक श्री मुदित शेजवार एवं सह संयोजक श्री जयवर्द्धन जोशी मंचासीन रहे।

एम्स भोपाल के कार्डियोथोरेसिक सर्जरी विभाग ने

हार्ट फेलियर के सर्जिकल प्रबंधन पर सीएमई के साथ मनाया फाउंडेशन दिवस

भोपाल। एम्स भोपाल के कार्यपालक निदेशक प्रो. (डॉ.) अजय सिंह के मार्गदर्शन में कार्डियोथोरेसिक सर्जरी विभाग ने शनिवार, 26 अप्रैल 2025 को अपना फाउंडेशन डे मनाया। इस अवसर पर हृदय विफलता (हार्ट फेलियर) के सर्जिकल प्रबंधन विषय पर एक सीएमई (कंटिन्यूइंग मेडिकल एजुकेशन) कार्यक्रम आयोजित किया गया, जिसमें देशभर से आए विशेषज्ञों, डॉक्टरों और शोधकर्ताओं ने भाग लिया। कार्यक्रम का उद्देश्य हृदय विफलता के सर्जिकल इलाज से जुड़ी नई तकनीकों, अनुभवों और चुनौतियों पर चर्चा करना था। सत्रों में हृदय-फेफड़े का प्रत्यारोपण, बच्चों के लिए प्रत्यारोपण, सर्जरी से पहले की तैयारी और भारत में वेंट्रिकुलर असिस्ट डिवाइस (वीएडी) के भविष्य जैसे महत्वपूर्ण विषयों पर विचार-विमर्श हुआ वैज्ञानिक सत्रों में एमजीएम हेल्थ केयर, चेन्नई से आए दो प्रमुख विशेषज्ञों ङ्क डॉ. के.आर. बालकृष्णन और डॉ. सुरेश राव के.जी. ने अपने व्याख्यान प्रस्तुत किए। डॉ. बालकृष्णन ने एंड- स्टेज हार्ट फेलियर और वीएडी इम्प्लांटेशन से जुड़ी जानकारियाँ साझा कीं, वहीं डॉ. सुरेश राव ने कार्डियक क्रिटिकल केयर, श्वष्टस्ह्र और जन्मजात हृदय रोगों पर अपने अनुभव बताए। सभी वैज्ञानिक सत्रों के अंत में एक इंटरएक्टिव पैनल चर्चा भी आयोजित की गई। इस कार्यक्रम में उपनिदेशक (प्रशासन) कर्नल (डॉ.) अजीत कुमार, (डॉ.) रजनीश जोशी (डीन, एकेडमिक्स) और डीन (अनुसन्धान) प्रो. (डॉ.) रेहान उल हक की विशेष उपस्थिति रही। यह आयोजन डॉ. योगेश निवारिया (आयोजक अध्यक्ष), डॉ. सुरेंद्र सिंह यादव (आयोजक सचिव) और डॉ. राहुल शर्मा (संयुक्त आयोजक सचिव) के नेतृत्व में सफलतापूर्वक संपन्न हुआ। आयोजन समिति में विभाग के कई संकाय सदस्यों - डॉ. एम. किशन, डॉ. विक्रम वट्टी, डॉ. आदित्य सिरोही, डॉ. भुषण शाह, डॉ. नागभूषणम पदाला, डॉ. दुरी रविशंकर, डॉ. नितिन राज, डॉ. अभय प्रताप सिंह, डॉ. अरविंदा ऋषि, डॉ. नित्यं गर्ग, डॉ. दीपेश शर्मा, डॉ. इमरेज सरफराज और डॉ. शिवम गौतम का सराहनीय योगदान रहा।

इस अवसर की महत्ता को बताते हुए प्रो. (डॉ.) अजय सिंह ने कहा, यह फाउंडेशन डे हमारे कार्डियोथोरेसिक सर्जरी विभाग की उपलब्धियों का उत्सव था। साथ ही, यह शैक्षणिक उत्कृष्टता और मरीजों की बेहतर देखभाल के लिए हमारे प्रयासों की पुष्टि भी करता है। हृदय विफलता के सर्जिकल प्रबंधन पर आयोजित सीएमई ने देशभर के विशेषज्ञों को एक साथ लाकर विचार-विमर्श का अवसर दिया और जटिल सर्जरी में हो रही प्रगति को बढ़ावा दिया। साथ ही, उन्होंने विभाग को मध्य भारत का प्रथम हृदय प्रत्यारोपण के लिए बधाई भी दी।

क्षिति जल पावक गगन समीरा- यही हमारे शरीर की संरचना है : मोहन नागर

घोड़ाडोंगरी सीएम राइज विद्यालय के 10 दिवसीय समर कैंप का आयोजन

बैतूल। घोड़ाडोंगरी सीएम राइज विद्यालय के 10 दिवसीय समर कैंप के मुख्य अतिथि के रूप में मध्यप्रदेश जन अभियान परिषद के उपाध्यक्ष राज्यमंत्री मोहन नागर उपस्थित रहे। राष्ट्रीय ध्वज, राष्ट्रगान एवं भजन पश्चात शाला के प्राचार्य विवेक तिवारी द्वारा मोहन नागर का तिलक लगाकर एवं भगवतगीता भेंट कर स्वागत किया। मंचासीन रामजीलाल उइके, राजेंद्र मालवीय, दीपक उइके, वरिष्ठ प्रशांत गावंडे, नरेंद्र उईके, जन अभियान परिषद के ब्लॉक समन्वयक संतोष राजपूत, अनिल शर्मा का तिलक लगाकर स्वागत किया गया। इसके पश्चात समर कैंप की दैनिक दिनचर्या अनुसार योग प्रारंभ किया गया। योग प्रशिक्षक रोशनलाल मोखड़े के मार्गदर्शन में विद्यार्थियों के साथ-साथ मुख्य अतिथि मोहन नागर ने भी योग किया। प्राचार्य द्वारा 10 दिवसीय समर कैंप की अवधारणा से अतिथियों को अवगत कराया।

जल गंगा संवर्धन अभियान की दी जानकारी -तत्पश्चात श्री नागर ने अपने उद्बोधन में बच्चों को शासन के निर्देशानुसार जल गंगा संवर्धन अभियान, जल संरक्षण, वृक्षारोपण एवं भारतीय संस्कृति के बारे में विस्तृत रूप से जानकारी दी। हमारी परंपरा अनुसार हिंदी महीनों के नाम, तुलसीदास रामायण में पंच तत्वों से लिए हुए दोहे एवं आदर्श विद्यार्थियों के लिए आवश्यक पांच गुणों को विस्तृत रूप से बताया। अपने उद्बोधन में उन्होंने कहा कि विद्यार्थी अपने जीवन में आत्मसात करता है तो वह निश्चित रूप से भारत का एक आदर्श नागरिक बनेगा।

अतिथियों ने जीव विज्ञान प्रयोगशाला देखी - श्री नागर द्वारा समर कैंप के विभिन्न विधाओं जाकर हो रहे है कार्यों का अवलोकन किया एवं विद्यार्थियों से चर्चा की। समस्त उपस्थित अतिथियों ने रसायन शास्त्र, भौतिक शास्त्र एवं जीव विज्ञान प्रयोगशाला देखी जहां छात्रों द्वारा मोहन नागर जी का ब्लड प्रेशर भी नापा गया। राज्यमंत्री श्री नागर ने पुस्तकालय कक्ष, ब्यूटी वैलनेस ,सिलाई मशीन,क्लेआर्ट, पेंटिंग एवं नृत्य सीख रहे छात्रों से चर्चा भी की। आयोजित किया जा रहे समर कैंप की व्यवस्थाओं एवं विद्यालय की व्यवस्था को देख मोहन नागर द्वारा प्रसन्नता व्यक्त की। सीएम राइज के प्राचार्य विवेक तिवारी द्वारा उपस्थित अतिथियों का आभार व्यक्त किया। कार्यक्रम में जन अभियान परिषद के नवीनो नायर, कु.भावना,जतिन प्रजापति, राहुल इरपाचे, शाला के शिक्षक/शिक्षिकाएं उपस्थित रहे।

वर्षा जल को संरक्षित करने किया प्रेरित - जल गंगा संवर्धन अभियान के बारे में विद्यार्थियों से बातचीत करते हुए उन्होंने पंचतत्व के बारे में बताते हुए कहा कि क्षिति जल पावक गगन समीरा। पंच रचित यह अधम सरीरा। इसका अर्थ समझाते हुए बताया कि यह शरीर पृथ्वी, जल, अग्नि, आकाश और वायु इन पांच तत्वों से बना है और इन पांचो तत्वों की हमें रक्षा करनी चाहिए। जल तत्व के बारे में भी विस्तार से बताते हुए उन्होंने वर्षा जल को कैसे संरक्षित किया जाए और जल का समुचित उपयोग किस प्रकार दैनिक जीवन में किया जाना चाहिए। इस पर विस्तार से प्रकाश डाला। इस अवसर पर कार्यक्रम में रामजीलाल गुरुजी, राजेंद्र मालवीय, नरेंद्र उइके कान्हावाड़ी, विद्यालय के प्राचार्य विवेक तिवारी, मध्य प्रदेश जन अभियान परिषद घोड़ाडोंगरी के कोर ग्रुप के सक्रिय सदस्य अनिल शर्मा, परामर्शदाता, जतिन प्रजापति, सुश्री भावना उइके, सुश्री लक्ष्मी उइके, नोविनो नायर, राहुल सहित विद्यालय के समस्त शिक्षक गण और लगभग 400 की संख्या में विद्यार्थी उपस्थित रहे।

आत्मनिर्भर मध्यप्रदेश की दिशा में बैतूल जिले में औद्योगिक विकास को मिली नई गति

बैतूल। मुख्यमंत्री डॉ. मोहन यादव के नेतृत्व में आत्मनिर्भर मध्यप्रदेश के सपने को साकार करने की दिशा में महत्वपूर्ण कदम उठाए जा रहे है। प्रदेश सरकार द्वारा वर्ष 2025 को उद्योग एवं रोजगार वर्ष घोषित किया गया है, जिसके अंतर्गत बैतूल जिले में भी औद्योगीकरण को तेजी से बढ़ावा दिया जा रहा है। जिले में आगामी समय में प्रत्येक विधानसभा क्षेत्र में एक नवीन औद्योगिक क्षेत्र की स्थापना की जाएगी। इस दिशा में वर्तमान में बैतूल जिले में तीन नए औद्योगिक क्षेत्रों का निर्माण कार्य प्रगति पर है। जिला उद्योग बैतूल महाप्रबंधक रोहित डाबर ने बताया कि बैतूल विधानसभा क्षेत्र अंतर्गत ग्राम कढ़ाई में एक जिला एक उत्पाद योजना के तहत वुडन एवं फर्नीचर क्लस्टर का निर्माण 20 हेक्टेयर भूमि पर किया जा रहा है। इस क्लस्टर में वर्ष 2025 में भूमि आवंटन कर लगभग 101 लकड़ी आधारित उद्योगों की स्थापना की जाएगी। इनमें मुख्यत~ फर्नीचर, लकड़ी के खिलौने, वीनीयर्स तथा डेकोरेटिव आइटम्स जैसे उद्योग शामिल होंगे। इस वुडन क्लस्टर के माध्यम से जिले में 2000 से 3000 लोगों को प्रत्यक्ष एवं अप्रत्यक्ष रूप से रोजगार प्राप्त होगा तथा लगभग 200 करोड़ रुपए का निवेश आकर्षित होने की संभावना है। इसी प्रकार मुलताई विधानसभा क्षेत्र के ग्राम मोही में औद्योगिक क्षेत्र मोही की स्थापना की जा रही है। प्रथम चरण में 6.23 हेक्टेयर भूमि पर 34 एमएसएमई इकाइयों को विकसित किया जाएगा। इनमें खाद्य प्रसंस्करण, सीमेंट, खनिज मिनरल्स और लकड़ी आधारित उद्योग प्रमुख हैं। वर्ष 2025 में इन इकाइयों के भूमि आवंटन से लगभग 50 करोड़ रुपए का निवेश आएगा और 800 से 1000 लोगों को रोजगार उपलब्ध होगा।

चोरडोंगरी में हो रहा इलेक्ट्रिकल एवं मैकेनिक क्लस्टर का विकास

आमला विधानसभा क्षेत्र में भारत सरकार की एमएसई-सीडीपी योजना के तहत ग्राम चोरडोंगरी में इलेक्ट्रिकल एवं मैकेनिक क्लस्टर का विकास किया जा रहा है। इसमें सेमीकंडक्टर, सोलर उपकरण, ट्रांसफार्मर निर्माण, इंजीनियरिंग व धातु आधारित उद्योगों की 71 इकाइयों को भूमि आवंटित की जाएगी। इस क्लस्टर से लगभग 100 करोड़ रुपए का निवेश आने तथा 1500 से 2000 लोगों को रोजगार मिलने का अनुमान है। उल्लेखनीय है कि प्रदेश सरकार द्वारा किए जा रहे इन प्रयासों से न केवल जिले के औद्योगीकरण को गति मिलेगी बल्कि युवाओं के लिए व्यापक रोजगार के अवसर भी सृजित होंगे। इससे जिले के आर्थिक परिदृश्य में सकारात्मक परिवर्तन आएगा और आत्मनिर्भर मध्यप्रदेश के लक्ष्य को मजबूती मिलेगी।

राइट क्लिक

पिछले साल भी पाक को भारत ने दिया था 'जल झटका'...

अजय बोकिल

लेखक सुबह सवेरे के कार्यकारी प्रधान संपादक हैं।
संपर्क- 9893699939
ajaybokil@gmail.com

पाकिस्तान के साथ 'सिंधु नदी जल समझौते' को स्थगित कर भारत ने पहली बार इतना कठोर कदम नहीं उठाया है। पिछले साल फरवरी में भी भारत ने सिंधु की सहायक नदी रावी नदी का पानी यह कहकर रोक दिया था कि सिंधु नदी समझौते के तहत पानी के उपयोग का उसका विशेषाधिकार है। इसके बाद भी पाकिस्तान नहीं चेता। उल्टे उसने भारत के इस कदम की 'जल आतंक' कहकर आलोचना की थी और आतंकवाद को पोसना जारी रखा। अब पहलगाम में पाक समर्थिक आतंकियों ने अमानवीय तरीके से 26 निर्दोष नागरिकों की धर्म के आधार पर हत्या करने के बाद जब भारत ने सिंधु नदी का पानी रोकने जैसा कड़ा और निर्णायक कदम उठाया तो पाक इसे अमानवीय और 'युद्ध जैसा' बताकर बौखला रहा है। पाक के पूर्व विदेश मंत्री बिलावल भुट्टो तो यहां तक कह गए कि सिंधु नदी में हमारा पानी बहेगा और तुम्हारा (भारत) का खून।

पाकिस्तान यह जानते हुए भी कि आंतकवाद का यह खेल उसके लिए भस्मासुर साबित हो रहा है, 'खून और पानी' का यह खेल पिछले चालीस सालों से खेल रहा है। बस इसके मोहरे और लक्ष्य अलग-अलग रहे हैं। इस बात की कबूली पाकिस्तान के रक्षा मंत्री ख्वाजा आसिफ ने एक इंटरव्यू में दे ही दी है। उन्होंने यह भी कहा कि वैश्विक शक्तियों ने पाकिस्तान का इस्तेमाल अपने हितों के लिए किया और पाकिस्तानी हुक्मरानों ने भारत के प्रति नफरत के चलते ऐसा होने दिया। यही पाकिस्तान अब संभावित 'जल बम' से अपनी तबाही के बारे में सोचकर परेशान है और वहां के नेता गीदड़ भभकियां देकर पाक जनता को गुमराह किए जा रहे हैं। खुद ख्वाजा आसिफ भी विवादित नेता रहे हैं। वैसे किन्हीं भी दो देशों के बीच युद्ध और तनातनी के बाद भी नदियों के बहाव को सामान्यतः रोका नहीं जाता, क्योंकि पानी मानव जीवन की अनिवार्य आवश्यकता है। पानी रोकने से आम जनता ही परेशान होती है, हुक्मरानों का कुछ नहीं बिगड़ता। भारत ने अगर सिंधु जल समझौता स्थगित करने जैसा अत्यधिक कठोर कदम उठाया है तो इसलिए कि पानी अब सिर से ऊपर निकल चुका है। आखिर हम कब आंतकियों से लड़ते-लड़ते अपने निर्दोष नागरिकों, जवानों को मरवाते रहेंगे। इस मामले में पाकिस्तान के दोहरे खेल का इलाज क्या है? एक तरफ वह खुद को आंतकवाद का शिकार बताता है तो दूसरी तरफ खुद आंतकियों को बिरयानी खिलाता है। नफरत, झूठ, भीख और धर्मान्धता पर पाकिस्तान का अस्तित्व टिका हुआ है, जिसकी इस बार भारत ने कमजोर नस दबा दी है। खास बात यह है कि 1947 में धर्म के आधार पर देश के विभाजन के बाद बने (पश्चिम) पाकिस्तान के पास अपनी कोई बड़ी नदी नहीं थी। उसे जल प्रदाय करने वाली सभी 6 प्रमुख नदियां भारत से होकर ही पाकिस्तान जाती है। लेकिन सदाशयता के चलते भारत ने अपने जल दाता होने का कभी नाजायज फायदा नहीं उठाया फिर चाहे पाक के साथ लड़े गए चार युद्ध ही क्यों न हों। उलटे 1960 में भारत पाक के बीच हुई सिंधु जल संधि के तहत सिंध कछार में बहने वाले छहों नदियों का पानी दोनो देशों ने आधा-आधा बांट लिया ताकि कोई प्यासा न रहे। समझौते में सिंधु बेसिन से बहने वाली 6 नदियों को पूर्वी और पश्चिमी हिस्से में बांटा गया था। पूर्वी हिस्से की नदियों रावी, ब्यास और सतलज के पानी पर भारत का पूरा अधिकार है। पश्चिमी हिस्से की नदियों सिंधु, चिनाब और झेलम का 20 प्रतिशत पानी भारत रोक सकता है। यह संधि विश्व बैंक की मध्यस्थता में तत्कालीन भारतीय प्रधानमंत्री जवाहरलाल नेहरू और पाक राष्ट्रपति जनरल अयूब खान के बीच हुई थी। लेकिन जिस राज्य कश्मीर से होकर यह नदियां गुजरती हैं, उसकी राय ली ही नहीं गई। यह बात जम्मू कश्मीर के मुख्यमंत्री उमर अब्दुल्ला के बयान से साफ होती है। उन्होंने कहा कि हमारा पानी पाकिस्तान को दे दिया गया। इन नदियों के पानी के उपयोग और इन पर बांध बनाने को लेकर भारत और पाकिस्तान के बीच विवाद भी होते रहे हैं। इनमें से भी सिंध नदी सबसे बड़ी होने के कारण पाकिस्तान की 80 फीसदी खेती, पेयजल और बिजली उत्पादन इसी पर निर्भर है। पर यह जवाब कैसा और किस रूप में होगा, यह साफ नहीं है, लेकिन पाक नेता और सैन्य अफसर उन देश के पास परमाणु बम होने की धमकी भारत को बार दे रहे हैं, यह समझे बगैर कि संभव है कि पाक बौखलाहट और अत्यधिक हताशा में एकाध बम भारत पर डाल भी दे, लेकिन उसके बाद उस पर परमाणु बमों की जो बारिश होगी, उससे पाकिस्तान का नामोनिशान भी शायद ही बचे। वैसे भारत ने इस बार पाकिस्तान को चेतावनी ही नहीं दी है बल्कि उस पर अमल भी शुरू कर दिया है। इसके लिए केन्द्र सरकार ने तीन स्तरीय कार्यक्रम तय किया है, जिसकी विस्तृत जानकारी सार्वजनिक नहीं की गई है।

हालांकि कुछ लोग यह सवाल उठा रहे हैं कि क्या किसी नदी का पानी दूसरे देश को जाने से सचमुच और पूरी तरह बहने से रोका जा सकता है? क्या व्यावहारिक रूप से ऐसा संभव है? और वो भी सिंधु जैसी बड़ी नदी का? अगर ऐसा हकीकत में संभव नहीं है तो फिर पाकिस्तान इतना हड़बड़ाया क्यों है? इसके कुछ ठोस कारण हैं। पहला तो यह कि अभी कल तक जब सिंधु व उसकी अन्य दो सहायक नदियों का पानी बदस्तूर पाकिस्तान जा रहा था, वह भी पाकिस्तान की जरूरतों को पूरा नहीं कर पा रहा था। इन तीनों नदियों में सालाना 135 मिलियन एकड़ फीट पानी बहता है। जिसका अधिकांश हिस्सा पाकिस्तान को जाता है। सिंधु नदी चीन के मानसरोवर के पास एक ग्लेशियर से निकलती है। इसका कुछ हिस्सा हमारे लद्दाख और कारगिल से होकर पाकिस्तान अधिकृत गिलगित और बाल्तीस्तान होते हुए खैबर पख्तूनख्वाह, पंजाब और सिंध में बहता है, जहां यह अरब सागर में मिल जाती है। पाक में नदियों में पानी की लगातार कमी का एक बड़ा कारण तो जलवायु परिवर्तन है। दूसरे, इन सभी नदियों के पानी का ज्यादातर हिस्सा पाकिस्तान पंजाब में ही इस्तेमाल हो जाता है, क्योंकि वही सिंचाई का नेटवर्क सबसे अच्छा है। पंजाब में ज्यादा पानी इस्तेमाल होने से सिंध नदी के आखिरी छोर सिंध तक बहुत कम पानी पहुंच पाता है। इसको लेकर सिंध के किसान आंदोलन भी कर रहे हैं। पहाड़ी नदियों के पानी का बहाव बहुत तेज होता है, इसलिए इन पर जल विद्युत कम खर्च में बनाई जा सकती है। सिंधु और सहायक नदियों के पानी के संदर्भ में दोनो देशों के बीच संधि के अनुपालन में भारत जल प्रवाह और मौसम आदि की जानकारी पाकिस्तान के साथ साझा करता रहता है, जो अब नहीं होगा। इसका मतलब यह है कि अगर सिंधु में बाढ़ आई भी तो भारत पाक को सचेत नहीं करेगा। इसकी एक बानगी शुक्रवार को देखने को मिली, जब भारत ने झेलम का पानी पाकिस्तान को पूर्व सूचना दिए बगैर ही छोड़ दिया, जिससे पीओके के कुछ गांवों में बाढ़ आ गई। वही स्थिति सिंधु में पानी घटने के संदर्भ में भी रहेगी। दूसरी तरफ इन नदियों पर बांध बनाने और जल विद्युत संयत्र लगाने के लिए पाकिस्तान की सहमति जरूरी नहीं होगी।

सिंधु नदी का पानी रोकने से पहले भारत को चिंता को इस बात की चिंता करनी होगी कि रोका गया पानी कहीं उसके लिए बाढ़ का कारण न बन जाए। सवाल यह भी है कि क्या पाकिस्तान के कहने पर चीन भी सिंधु और ब्रह्मपुत्र नदी का पानी भारत जाने से रोक सकता है। अगर ऐसा हुआ तो भारत क्या करेगा? सिंधु से भी ज्यादा ब्रह्मपुत्र नदी पर भारत के पूर्वोत्तर के कई राज्य और बांगला देश भी निर्भर है। वर्तमान हालात में चीन अपने दोस्त पाकिस्तान के लिए ऐसा कदम उठाएगा या नहीं, कहना मुश्किल है, क्योंकि ट्रंप के टैरिफ वॉर के चलते चीन की अर्थ व्यवस्था मुश्किल में है। उसे भारत के बाजार की जरूरत है। लेकिन 2016 में कश्मीर में हुए एक आंतकी हमले के बाद भारत ने पाकिस्तान को चेतावनी दी थी कि 'खून और पानी दोनों एक साथ नहीं बह सकते।' इसके बावजूद चीन ने ब्रह्मपुत्र की एक सहायक नदी का पानी रोक दिया था। उधर पाकिस्तान में जल संकट को इसी बात से समझा जा सकता है कि वहां बीते 75 सालों में प्रति व्यक्ति जल उपलब्धता में 70 फीसदी की कमी आई है। वहां हुए अध्ययनों में बताया गया है कि प्रति व्यक्ति जल उपलब्धता 1017 घन मीटर है, जो इसके वैश्विक मानक 1385 घन मीटर से से बहुत कम है और प्रति व्यक्ति 1 हजार घन मीटर तक गिर सकती है। अगर सिंधु का पानी बंद न हो और कम भी हो जाए तो पाकिस्तान में पानी के लिए कैसा हाहाकार मचेगा, समझा जा सकता है। पाकिस्तान में जल उपलब्धता की यह कमी, पानी के अत्यधिक दोहन, उद्योगों की बढ़ती जल मांग, अव्यवस्थित जल प्रबंधन, तेजी से बढ़ती आबादी, घटती बारिश और पर्यावरण में परिवर्तन के कारण मानी जाती है। यही नहीं, पाकिस्तान के पास जल संग्रहण क्षमता मात्र 30 दिनों की है, जबकि इसका वैश्विक औसत 120 दिन है।

पाकिस्तान दुनिया के अत्यधिक जल जोखिम वाले 17 देशों में 14 वे नंबर पर है। वहां भूजल भी खतरे के निशान से ऊपर जा चुका है। देश की अधिकांश आबादी सिंधु नदी के पानी पर पाक की 42 फीसदी जनता कृषि पर ही निर्भर है। लेकिन देश के जल प्रबंधन पर भी फौज का ही नियंत्रण है।

॥ मंदिरम् ॥ 94

मालादेवी मंदिर, ग्यारसपुर, मध्य प्रदेश

मध्य प्रदेश के विदिशा जिले में ग्यारसपुर स्थान पर माला देवी मंदिर स्थित है। माला देवी मंदिर 9वीं शताब्दी का है यह प्रतिहार शैली में निर्मित एक चट्टान को काटकर बनाया गया मंदिर है यह मंदिर शुरू में ब्राह्म मंदिर था लेकिन बाद में इसे जैन पूजा स्थल में बदल दिया गया। यह मंदिर आदिनाथ को समर्पित है मालादेवी मंदिर को विविध जैन मूर्तियां के संग्रह की सुंदरतम उदाहरण में से एक माना जाता है। यह मंदिर पहाड़ी के एक तरफ से कटे भाग के विशाल आधार पर स्थित है। मंदिर की वास्तुशिल्पी बनावट को देखकर यहां आने वाले पर्यटक हैरत में पड़ जाते हैं। मंदिर में एक प्रवेश द्वार, एक हॉल और एक पवित्र स्थल है। इसके गर्भ-गृह में एक प्रतिमा रखी हुई है, जिसके बारे में कहा जाता है कि यह जैन तीर्थंकर की है। मालादेवी मन्दिर में एक घुमावदार गलियारा और एक विशाल शिखर भी है। शिखर को कड़ी मेहनत से बारीकी से गढ़ा गया है, जिससे इसे देखने के बाद प्रेरणा मिलने के साथ-साथ आश्चर्य भी होता है।

मुख्यमंत्री डॉ. मोहन यादव ने प्रधानमंत्री नरेन्द्र मोदी के 'मन की बात' कार्यक्रम का श्रवण किया

सीएम बोले- चूहों की तरह कायराना हरकत कर गए आंतकियों में हिम्मत थी तो हमारी सेना के सामने आते, चिंदी-चिंदी कर देते

भोपाल (नप्र)। जम्मू-कश्मीर के पहलगाम में 22 अप्रैल को हुए आतंकी हमले को लेकर सीएम डॉ. मोहन यादव ने कहा कि पहलगाम में जिस तरह की घटना हुई। हमारा पूरा देश क्या हिन्दू, क्या मुसलमान...कश्मीर हो या हमारा मध्य प्रदेश, देश के सारे संगठनों ने एकजुटता के साथ पहली बार मोदी जी के साथ पक्ष-विपक्ष ने इस नृशंस हत्याकांड की निंदा की है। इस आतंकी हमले के खिलाफ कठोर कार्रवाई करने के लिए हमारे प्रधानमंत्री मोदी जी को न केवल भारत बल्कि, विश्व भर से समर्थन मिल रहा है।

- **सेना के सामने आते तो चिंदी-चिंदी कर दी जाती-** सीएम ने आतंकियों को चुनौती देते हुए कहा- अगर इतने बहादुर थे तो आ जाते हमारे सशस्त्र बलों के सामने, पता ही नहीं चलता चिंदी-चिंदी कर दी जाती। यह भारत की फौज है लेकिन चूहे की तरह आकर कायराना हरकत कर गए लेकिन वे जिस भी बिल में छुपे हैं। उस बिल की जमीन के मालिक को और अपराधियों को भी सजा मिलेगी। यह भरोसा हम सबको है।
- **कश्मीर अलग पहचान बना रहा, ये दुश्मनों को रास नहीं आया-** सीएम ने कहा- आज जब लोकतंत्र के अंदर खूबसूरती के बलबूते पर हम लोग भारत की चारों तरफ प्रगति-उन्नति देख रहे हैं। खासकर 1947 के बाद, 370 धारा हटने के बाद एक अलग प्रकार से कश्मीर दुनिया में अपनी अलग प्रकार से पहचान बना रहा है। वहां लोकतंत्र भी खूबसूरती से चल रहा है। भले ही वहां विपक्ष की सरकार बनी लेकिन निर्वाचन का मतलब ही यही है, चुनाव में कोई भी जीत सकता है। न केवल उद्योग, व्यवसाय, हमारी प्रशासनिक दक्षता यह सारी बातें दुश्मन को हजम नहीं हुई। लेकिन, कोई कभी कल्पना कर सकता है कि हथियार लेकर आओ और महिलाओं, बच्चों को धर्म के नाम पर उनकी हत्या कर दो।

पीएम मोदी की 'मन की बात' का उप मुख्यमंत्री शुक्ल ने किया श्रवण

भोपाल (नप्र)। प्रधानमंत्री श्री नरेन्द्र मोदी के लोकप्रिय कार्यक्रम 'मन की बात' का उप मुख्यमंत्री श्री राजेन्द्र शुक्ल ने भोपाल से रीवा यात्रा के दौरान श्रवण किया। उप मुख्यमंत्री श्री शुक्ल ने कहा कि प्रधानमंत्री श्री मोदी का उद्बोधन और मार्गदर्शन सदैव ही प्रेरणास्पद होता है। उनके विचार नई ऊर्जा और सकारात्मकता प्रदान करते हैं।

कार के बोनट पर तलवार से केक काटने वाले गिरफ्तार

दोनों आरोपी निकले जुड़वा भाई, गांधी नगर पुलिस ने की कार्रवाई

भोपाल (नप्र)। गांधी नगर पुलिस ने एयरपोर्ट रोड पर कार के बोनट पर तलवार से केक काटने वाले आरोपियों को गिरफ्तार कर लिया है। दोनों आरोपी जुड़वा भाई हैं। पुलिस के मुताबिक दोनों की पहचान अरशान खान (19) और अयान खान (19) के रूप में वायरल वीडियो के आधार पर की गई है। आरोपियों ने पूछताछ में बताया कि रात 11 बजे केक काटने की खास वजह दोनों के नाम मिलाकर 11 अक्षर बनते हैं। लिहाजा रात 11 बजे ही उन्होंने खासतौर पर केक काटा था।

थाना प्रभारी सुरेश फरकले के मुताबिक आरोपियों के कब्जे से तलवार बरामद हुई है। इनमें एक प्लास्टिक की नकली तलवार है। पूछताछ में दोनों ने खुलासा किया- जन्मदिन पर दोस्त उन्हें बुलाकर ले गए थे। दोनों भाई कॉलेज में फर्स्ट ईयर के स्टूडेंट्स बताए जा रहे हैं। दोनों के पांच साथियों को पुलिस ने चिन्हित कर लिया है। इन सभी की तलाश की जा रही है।

वायरल वीडियो के आधार पर की गई कार्रवाई

जांच में पता चला है कि तलवार से केक काटने का वीडियो वायरल हुआ तो पुलिस कार्रवाई से बचने के लिए आरोपी ने इंस्टाग्राम अकाउंट डिएक्टिवेट कर दिया था। यह अकाउंट किसका है, पुलिस ने चिन्हित कर लिया है। वीडियो में चार से पांच कार दिखाई दे रही हैं। यह कार किसकी हैं, इसका भी पता लगाया जा रहा है।

एमपी ट्रांसको ने कार्मिकों के गृह भाड़ा भत्ते को किया पुनरीक्षित

भोपाल (नप्र)। एम. पी. ट्रांसको (मध्यप्रदेश पॉवर ट्रांसमिशन कंपनी) ने अपने कार्मिकों के लिए गृह भाड़ा भत्ता (एचआरए) के पुनरीक्षित आदेश जारी कर दिए हैं। एम. पी. ट्रांसको के अतिरिक्त मुख्य अभियंता श्री धीरेंद्र सिंह ने बताया कि कंपनी ने मध्यप्रदेश शासन, वित्त विभाग के आदेश क्रमांक एफ 4-1/2025/नियम/चार, दिनांक 3 अप्रैल 2025 के अनुसार, शासकीय सेवकों के लिए निर्धारित गृह भाड़ा भत्ते के प्रावधानों को आवश्यक संशोधनों सहित अपनाया है। सात लाख या उससे अधिक जनसंख्या वाले नगरों में निवासरत कंपनी कार्मिकों को उनके मूल वेतन का 10 प्रतिशत गृह भाड़ा भत्ते के रूप में देय होगा।

- **किन्हें नहीं मिलेगा गृह भाड़ा भत्ता-** जारी आदेश में यह स्पष्ट किया गया है कि वे कार्मिक जो कंपनी आवास में रह रहे हैं या किराया रहित कंपनी आवास में निवासरत हैं, या किराया रहित आवास के बदले कोई अन्य भत्ता प्राप्त कर रहे हैं, उन्हें गृह भाड़ा भत्ता देय नहीं होगा। साथ ही संविदा, तदर्थ, स्थायी-कर्मी व दैनिक वेतनभोगी कर्मचारियों को भी इस भत्ते की पात्रता नहीं होगी। अन्य शर्तें पूर्ववत रहेंगी और यह आदेश 1 अप्रैल 2025 से प्रभावशील होगा।

कही-सुनी

क्या भारतमाला घोटाला सीबीआई के सुपुर्द होगा ?

रवि भोई

(लेखक पत्रिका समवेत सृजन के प्रबंध संपादक और स्वतंत्र पत्रकार हैं।)

राज्य की जाँच एजेंसी ईओडब्ल्यू ने पिछले दिनों भारतमाला घोटाले में शामिल लोगों के यहां छापा मार कर उन्हें बेनकाब करने का सराहनीय काम किया, फिर भी इस घोटाले की जांच सीबीआई से कराने की मांग रह-रहकर उठ रही है। नेता प्रतिपक्ष डॉ चरणदास महंत अब भी मामले की जांच सीबीआई से कराने की मांग कर रहे हैं। डॉ महंत ने विधानसभा में भी भारतमाला घोटाले की जांच सीबीआई से कराने की आवाज उठाई थी। बताते हैं एक तो भारतमाला परियोजना में भारत सरकार का पैसा लगा है, दूसरा यह 40-50 करोड़ रूपए का घोटाला नहीं है, बल्कि 300 से 400 करोड़ रूपए का घोटाला है। एकड़ों जमीन को वर्गफुट में बांटकर मुआवजा लेने के इस घोटाले में बड़े-बड़े लोगों के शामिल होने की चर्चा सामने आ रही है। ईओडब्ल्यू ने इस घोटाले में शामिल अफसरों - कर्मचारियों, भूमाफिया और जमीन दलालों को निशाने पर तो लिया है। बताते हैं इस घोटाले में एक बैंक के अफसरों की भूमिका भी है। भारत सरकार के पैसे के दुरूपयोग से मामला जुड़ा होने के कारण अब ईओडब्ल्यू किस तरह से कितना जाँच करती है, यह बड़ा सवाल है। राज्य में भाजपा की सरकार बनने के बाद कई मामले सीबीआई को ट्रांसफर हुए हैं, इस कारण इस मामले को भी सीबीआई के सुपुर्द करने की मांग उठ रही है।

समय-समय की बात - साय सरकार के शुरूआती दिनों में उनके एक मंत्री को केंद्रीय गृहमंत्री अमित शाह का करीबी माना जाता था। बताते हैं आजकल उनकी जगह एक दूसरे मंत्री जी ने ले लिया है। आजकल अमित शाह के करीबी बन गए मंत्री जी बिना निमंत्रित होते हुए पिछले दिनों केंद्रीय गृह मंत्री की बैठक में मौजूद नजर आए, तो वहीं शुरूआती दिनों में अमित शाह के करीबी रहे मंत्री जी के सामने अब अपने अस्तित्व का सवाल खड़ा हो गया। मंत्रिमंडल के संभावित फेरबदल में मंत्री जी के विभाग बदलने की चर्चा है। मंत्री जी के पास अभी बड़े पावरफुल विभाग हैं। कहते हैं कि मंत्री जी अपने विभागों को बनाए रखने के लिए पिछले दिनों कुछ भाजपा नेताओं के दरबार में चक्कर भी लगा आए। खबर है कि एक नेताजी ने तो मंत्रियों के विभाग आबंटन को मुख्यमंत्री का विशेषाधिकार बताकर अपना पल्ला झाड़ लिया, दूसरे से उन्हें कुछ आश्वासन नहीं मिला और वे मायूस होकर लौट आए। इसे कहते हैं समय-समय की बात। अब देखते हैं आगे क्या होता है ?

कब होगी मुख्य सूचना आयुक्त की नियुक्ति - मुख्य सूचना आयुक्त की नियुक्ति के लिए सचिवों की समिति ने 26 मार्च को दावेदारों के इंटरव्यू लिए थे। तकरीबन एक माह बीत जाने के बाद भी मुख्य सूचना आयुक्त की नियुक्ति को लेकर कोई खास हलचल नहीं दिखाई दे रही है। नए मुख्य सूचना आयुक्त की नियुक्ति के लिए मुख्यमंत्री विष्णुदेव साय की अध्यक्षता में 16 अप्रैल को समिति की बैठक होनी थी, पर वह टल गई, उसके बाद अभी तक नई तिथि नहीं आई है। सीआईसी चयन के लिए मुख्यमंत्री की अध्यक्षता वाली समिति में नेता प्रतिपक्ष डॉ चरणदास महंत और मंत्री श्यामबिहारी जायसवाल हैं। नए सीआईसी के लिए वर्तमान मुख्य सचिव अमिताभ जैन और रिटायर्ड डीजीपी अशोक जुनेजा प्रबल दावेदार बताए जाते हैं। अमिताभ जैन इस साल जून में रिटायर्ड होने वाले हैं, उसके पहले कहीं नियुक्ति में लगे हैं। अब देखते हैं क्या होता है?

तीन महिला अफसरों से परेशान मंत्री-नेता - कहते हैं राज्य की तीन महिला अफसरों ने मंत्री और नेताओं की हवा टाइट कर दी है। बताते हैं तीनों महिला अफसरों का नाम सुनते ही मंत्री -नेताओं के पसीने छूटने लगते हैं। चर्चा है कि एक मंत्री ने अपने विभाग के कुछ आला अफसरों के ट्रांसफर का प्रस्ताव महिला अफसर को भेजा। महिला अफसर विभाग की प्रशासनिक मुखिया हैं। खबर है कि महिला अफसर ने मंत्री जी के उलट ट्रांसफर प्रस्ताव समन्वय को भेज दिया और मुख्यमंत्री सचिवालय को ताकीद भी कर दिया कि उनके प्रस्ताव को मंजूरी नहीं मिली तो आदेश जारी नहीं होंगे। बताते हैं इस शर्त के कारण ट्रांसफर प्रस्ताव महीनों से लंबित पड़ा है। चर्चा है कि एक मंत्री जी एक अफसर को निलंबित नहीं करना चाहते थे, पर महिला अफसर ने अफसर को सस्पेंड कर दिया और मंत्री जी मन मसोस कर रह गए।

अंबलगन और अलरमेल मंगई के भारत सरकार में जाने की चर्चा - चर्चा है कि 2004 बैच के आईएएस अंबलगन पी. और अलरमेल मंगई डी. जल्द भारत सरकार में प्रतिनियुक्ति पर जा सकते हैं। कहा जा रहा है कि दोनों अफसरों का भारत सरकार में संयुक्त सचिव के रूप में इंपैनल हो चुका है। दोनों पोस्टिंग का इंतजार कर रहे हैं। अंबलगन पी. अभी छत्तीसगढ़ सरकार में सचिव खाद्य और संस्कृति व पर्यटन तथा धार्मिक-धर्मस्व हैं। अलरमेल मंगई डी.सचिव श्रम के साथ श्रम आयुक्त हैं। इसी महीने 2004 बैच के आईएएस प्रसन्ना आर को गृह मंत्रालय में संयुक्त सचिव बनाया गया है। 2004 बैच की आईएएस संगीता पी. पहले से ही प्रतिनियुक्ति पर हैं। 2004 बैच के आईएएस अमित कटारिया कुछ महीने पहले भारत सरकार से प्रतिनियुक्ति से लौटे हैं। राज्य सरकार ने उन्हें स्वास्थ्य सचिव बनाया है।

दिल पसीजा - कहते हैं कांग्रेस राज में नियुक्त राज्य अल्पसंख्यक आयोग के अध्यक्ष महेंद्रसिंह छाबड़ा अप्रैल के अंत तक पद छोड़ देंगे। वैसे तो हाईकोर्ट से स्टे के आधार पर वे नवंबर 2025 तक पद पर बने रह सकते हैं। कांग्रेस राज में नियुक्त करीब एक दर्जन आयोगों में कोर्ट से स्टे के आधार पर कार्यरत हैं और कार्यकाल पूरा होते तक रह सकते हैं। भाजपा सरकार ने राज्य अल्पसंख्यक आयोग के अध्यक्ष का कार्यकाल खत्म नहीं हुआ था और वहां अमरजीत सिंह छाबड़ा को अध्यक्ष नियुक्त कर दिया। बताते हैं एक ही वर्ग के होने के कारण बड़ा दिल दिखाते हुए महेंद्रसिंह छाबड़ा ने पद छोड़ने का मन बना लिया है। महेंद्रसिंह छाबड़ा के पद छोड़ने के बाद अमरजीत सिंह छाबड़ा के राज्य अल्पसंख्यक आयोग के अध्यक्ष बनने का रास्ता साफ़ हो जाएगा।

केंद्र सरकार में लटका परमानेंट डीजीपी का मामला - कहते हैं छत्तीसगढ़ के परमानेंट डीजीपी का मामला केंद्र सरकार में लटक गया है। छत्तीसगढ़ सरकार ने परमानेंट डीजीपी के लिए अफसरों का पैनल यूपीएससी को भेज दिया है। बताते हैं यूपीएससी ने जल्दी से जल्दी पैनल माँगा था। राज्य से पैनल तो गया ,पर फैसला लटक गया। कहते हैं फिलहाल भारत सरकार जिस तरह दूसरे मुद्दों में व्यस्त हो गई है, उससे लगता नहीं कि छत्तीसगढ़ के परमानेंट डीजीपी का फैसला जल्दी होगा। कहा जा रहा है कि छत्तीसगढ़ सरकार स्थायी डीजीपी के लिए अरुणदेव गौतम,पवनदेव, हिमांशु गुप्ता और जीपी सिंह का नाम यूपीएससी को भेजा है।